लखनऊ

बुधवार 9 जुलाई 2025

वर्ष : 10 । अंक: 352

मूल्य : 1 रुपये

पृष्ठ : 8

UPHIN/2014/57034

हिंदी दैनिक

आर्यावर्त क्रांति

शिक्षा की जड़े भले ही कड़वी हों, इसके फल मीठे होते हैं। ₹ अरस्तू

TODAY WEATHER

DAY 37° Hi

NIGHT 26° Low

बिहार को देश की 'क्राइम कैपिटल' बनाने...: मल्लिकार्जुन खड़गे

कानून व्यवस्था को लेकर विपक्ष सरकार पर हमलावर

पटना। बिहार में कानून व्यवस्था की स्थिति का हवाला देकर विपक्ष लगातार सरकार पर हमला बोल रहा है। गोपाल खेमका की हत्या के बाद विपक्ष के हमले सरकार पर और बढ़ गए हैं। इसी कड़ी में हाल की घटनाओं का हवाला देते हुए कांग्रेस के राष्ट्रीय अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे ने कहा है कि अवसरवादी डबल इंजन सरकार ने बिहार में कानून व्यवस्था को पूरी तरह से ध्वस्त कर दिया है।

खड़गे ने अपने एक्स हैंडल पर पोस्ट किया कि पिछले छह महीने में आठ व्यवसायियों की हत्या हो चुकी है, पांच बार पुलिस की पिटाई की गई है। कल ही अंधविश्वास के चलते एक ही परिवार के पांच लोगों की हत्या कर दी गई। आगे लिखा कि मासूम बच्चों को भी नहीं बख्शा गया! जेडीयू और बीजेपी के गुंडा गठबंधन ने बिहार को देश की 'क्राइम कैपिटल' बनाने में कोई कसर नहीं छोड़ी है। मोदी सरकार के अपने आंकड़े बताते हैं कि बिहार में गरीबी चरम पर है, सामाजिक और आर्थिक न्याय की स्थिति बद से बदतर होती जा रही है और ठप कानून व्यवस्था के कारण निवेश सिर्फ कागजों तक सीमित रह गया है। इस बार बिहार ने ठान लिया है कि अब बीमारू नहीं रहेगा! बिहार में बदलाव तय है। इंडिया यह बदलाव लेकर आएगा। उल्लेखनीय है कि खड़गे से पहले लोकसभा में विपक्ष के नेता राहुल गांधी ने शनिवार को बिहार में कानून व्यवस्था की स्थिति का हवाला देते हुए भाजपा-जदयू सरकार पर हमला बोला था और कहा था कि इन दोनों गठबंधनों ने मिलकर बिहार को देश की अपराध राजधानी बना दिया है।

संक्षेप

गोपाल खेमका हत्याकांड में बिहार पुलिस को बड़ी सफलता, हथियार मुहैया कराने वाला विकास उर्फ राजा एनकाउंटर में मारा गया

पटना। बिहार के पटना में व्यवसायी गोपाल खेमका हत्याकांड को लेकर पुलिस को एक और सफलता हाथ लगी है। दरअसल, पटना सिटी के माल सलामी इलाके में अपराधी विकास उर्फ राजा पुलिस के साथ मुठभेड़ में मारा गया है। राजा ने ही खेमका की हत्या के लिए हथियार मुहैया कराया था। ये जानकारी मिलने पर पुलिस उसे गिरफ्तार करने पहुंची तो दोनों में मुठभेड़ हो गई। बीती रात 02:45 बजे मालसलामी थाना से 2 किलोमीटर पश्चिम पीर दमरिया घाट के पास पुलिस के साथ मुठभेड़ में 29 साल का राजा मारा गया। इसके बाद सूचना पर अनुमंडल पुलिस पदाधिकारी, पटना सीटी ने मौके पर पहुंचकर मामले की जांच की। घटनास्थाल से 1 पिस्टल, गोली एवं खोखा बरामद किया गया है। राजा के शव को पोस्टमार्टम के लिए भेजा गया है। बता दें कि इससे पहले इस हत्याकांड में शहर से उमेश कुमार नाम के एक शूटर को गिरफ्तार किया गया था, जो इस सनसनीखेज हत्या में शामिल मुख्य आरोपियों में से एक बताया गया। इसके बाद एसआईटी की टीम हत्याकांड में शामिल अन्य लोगों को तलाशने में जुटी तो राजा के बारे में खबर लगी और उसे मुठभेड़ में मार गिराया गया। बता दें कि शनिवार को शहर के गांधी मैदान थाना क्षेत्र में स्थित पनास होटल के पास गोपाल खेमका को उस वक्त गोली मारी गई, जब वे अपने अपार्टमेंट में कार से उतर रहे थे। साफ था कि हमलावर पहले से घात लगाए बैठा था और मौका मिलते ही उसने उन पर गोली चला दी। घटना के बाद परिजन उन्हें अस्पताल ले गए, जहां उन्हें मृत घोषित कर दिया गया। इस पूरे मामले की गंभीरता को देखते हुए पटना पुलिस ने जांच तेज की हुई है। पुलिस को शक है कि हत्या के पीछे जमीन विवाद और पुरानी रंजिश हो सकती है।

कांवड़ यात्रा को लेकर तैयारी जोरों पर, मूर्तियों की बढ़ी डिमांड

अलीगढ़। उत्तर प्रदेश के अलीगढ़ में सावन महीने और कांवड़ यात्रा को ध्यान में रखते हुए हिंदू देवी-देवताओं की मूर्तियों की जबरदस्त मांग देखी जा रही है। खास बात यह है कि इन मूर्तियों को तैयार करने वाले मुस्लिम कारीगर हैं। अलीगढ़ की पहचान पहले से ही 'ताले और तालीम' के लिए रही है, लेकिन धीरे-धीरे शहर मूर्तियों के निर्माण का भी एक प्रमुख केंद्र बनता जा रहा है। स्थानीय मूर्ति कारोबारी राजा गुप्ता ने कहा कि उनका परिवार 1957 से पीतल की मूर्तियां बनाने का काम कर रहा है। वो मूर्तियों का निर्माण ही नहीं, बल्कि उन्हें देश-विदेश में एक्सपोर्ट भी करते हैं। सावन महीने के आगमन के साथ ही भगवान शिव, शिवलिंग और शिव परिवार (शिव-पार्वती, गणेश, कार्तिकेय आदि) की मूर्तियों की मांग में भारी इजाफा हुआ है। राजा गुप्ता के अनुसार, देशभर से मूर्तियों के ऑर्डर मिल रहे हैं। उनके पास काम करने वाले कारीगरों में हिंदू और मुस्लिम दोनों समुदायों के लोग शामिल हैं। खासतौर पर फिनिशिंग का कार्य मुस्लिम कारीगर बड़ी कुशलता से करते हैं। उन्होंने कहा, त्योहारों में ये सांप्रदायिक एकता और सहयोग का सुंदर उदाहरण देखने को मिलता है। हम इस सहयोग का पूरा सम्मान करते हैं।

जेलों में कट्टरपंथियों को पनपने से रोकने के लिए अमित शाह ने उठाये सख्त कदम, राज्यों को जारी की बड़ी सलाह

अमित शाह

नई दिल्ली, एजेंसी। इस तरह के वाकये पूरी दुनिया में देखने को मिल रहे हैं कि जेलों में बंद कट्टरपंथी दूसरे कैदियों का भी ब्रेन वॉश करके उन्हें गलत राह पर धकेल देते हैं। देखा जाये तो जेलों में कैदियों को कट्टरपंथी बनाये जाने की घटनाएं अब गंभीर चुनौती बन चुकी हैं। यह प्रवृत्ति आंतरिक सुरक्षा के लिए तेजी से बड़ा खतरा बन रही है इसलिए संकट की गंभीरता को समझते हुए भारत सरकार ने राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों से इस दिशा में तुरंत प्रभावी कदम उठाने का आग्रह किया है। हम आपको बता दें कि केंद्रीय गृह मंत्रालय द्वारा सभी राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों के गृह सचिवों को जारी एक परामर्श में कहा गया है कि कारागारों में बंद कमजोर मानसिकता वाले व्यक्तियों में उग्र विचारधारा के प्रसार को रोकना तथा ऐसे कैदियों को मुख्यधारा में लौटाने के लिए 'डि-रेडिकलाइजेशन' की प्रक्रिया अपनाना अत्यंत आवश्यक है। यह न केवल सार्वजनिक व्यवस्था बनाए रखने के लिए जरूरी है, बल्कि देश की आंतरिक सुरक्षा सुनिश्चित करने में भी सहायक सिद्ध होगा।

देखा जाये तो कारागार एक सीमित व नियंत्रित वातावरण होता है जहाँ सामाजिक अलगाव, समूह मनोवृत्ति तथा निगरानी की सीमितता जैसी परिस्थितियाँ अतिवादी विचारों के पनपने के लिए उपजाऊ भूमि बन जाती हैं। कई बंदी, जो पहले से ही हताशा, समाज से कटाव या हिंसात्मक प्रवृत्तियों से ग्रस्त होते हैं, ऐसे माहौल में उग्रपंथी विचारधाराओं के प्रभाव में आ जाते हैं। इसलिए गृह मंत्रालय ने चेताया है कि कुछ मामलों में कट्टरपंथी बंदी हिंसात्मक गतिविधियों में लिप्त हो सकते हैं—चाहे वह जेल के स्टाफ पर हमला हो, अन्य बंदियों को नुकसान पहुँचाना हो या फिर बाहरी नेटवर्क के साथ मिलकर देश विरोधी गतिविधियों को अंजाम देना हो। गृह मंत्रालय ने 'मॉडल प्रिजन मैनुअल 2016' और 'मॉडल प्रिज़न्स एंड करेक्शनल सर्विसेज एक्ट, 2023' का हवाला देते हुए बताया कि इन मॉडल दस्तावेजों में उच्च-जोखिम कैदियों, उग्रवादियों आदि को अन्य कैदियों से पृथक रखने के लिए विशेष सुरक्षा वाले कारागारों की व्यवस्था की संस्तुति दी गई है।

पूर्व में जारी की गई सलाहों को दोहराते हुए गृह मंत्रालय ने राज्य सरकारों से अपेक्षा जताई है कि वे कठोर प्रवृत्ति के बंदियों की पहचान, निगरानी और परामर्श की प्रभावी व्यवस्था करें। गृह मंत्रालय ने यह सुझाव भी दिया है कि जो बंदी उग्र विचारधाराओं का प्रचार कर अन्य कैदियों को प्रभावित कर सकते हैं, उन्हें सामान्य कैदियों से अलग रखा जाए।

'खरगे ने राष्ट्रपति मुर्मू के खिलाफ आपत्तिजनक शब्दों का किया इस्तेमाल'

नई दिल्ली, एजेंसी। भारतीय जनता पार्टी ने कांग्रेस के राष्ट्रीय अध्यक्ष और राजयसभा सांसद मल्लिकार्जुन खरगे पर तीखा हमला किया है। भाजपा के राष्ट्रीय प्रवक्ता गौरव भाटिया ने कहा, मल्लिकार्जुन खरगे ने भारत की राष्ट्रपति के लिए आपत्तिजनक शब्दों का प्रयोग किया है, कांग्रेस के नेता का ऐसे करना यह दिखाता है कि इनकी मानसिकता आदिवासी विरोधी है। इसके साथ ही पूर्व राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद को लेकर उनका बयान दलित विरोधी मानसिकता को दिखाता है। उन्होंने भारत की राष्ट्रपति और पूर्व राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद के बारे में गलत बयानबाजी की है। इस वजह से भारत का हर नागरिक उनसे नाराज है, और उनके बयान की निंदा की जा रही है। मल्लिकार्जुन खरगे ने राष्ट्रपति को बिना किसी सम्मान के 'मुरमा जी' कहकर संबोधित किया और फिर अंत में उन्हें भू-माफिया कह दिया।पूरा देश जानता है, अगर कोई भू-माफिया है, तो वह नकली गांधी परिवार है।

गौरव भाटिया ने कहा, "ये राष्ट्रपति को मुरमा जी और पूर्व राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद को केविड बोल रहे है। हमारे संपत्ति छीनने के लिए बनाए। मैं रॉउल नहीं बोलूंगा राहुल जी को। आप उनके प्रथम नाम से संबोधित कर रहे हैं और उन्हें भू माफिया बता दे रहे हैं। ये सब राहुल गांधी के इशारे पर बोला जा रहा है। सभी जानते है भू माफिया कांग्रेस के परिवार के रॉबर्ट वाड्रा हैं जो जमीन हड़प लेते हैं। इस पर पूरा देश थू-थू कर रहा है। क्या इससे संविधान तार तार नहीं हो रहा है।"

"नकली गांधी परिवार के लोग"

गौरव भाटिया ने आगे कहा कि, उदित राज ने राष्ट्रपति पर टिप्पणी कर कहा था कि द्रौपदी मुर्मू जैसा राष्ट्रपति किसी देश को भी न मिले। चमचा गिरी की भी हद है। कहतीं हैं 70 प्रतिशत लोग गुजरात का नमक खाते हैं, पहले खुद नमक खाकर जिएं, फिर अधीर रंजन ने कहा था कि हिंदुस्तान की राष्ट्रपत्नी सबके लिए हैं, हमारे लिए क्यों नहीं। किस तरह की अभद्र टिप्पणी एक महिला के लिए की जा रही है, एक आदिवासी महिला के लिए, उन्हें कोई आत्मग्लानि नहीं हुई क्योंकि बिना रीढ़ की ये हड्डी सोनिया गांधी या राहुल गांधी के आगे झुकती है तो ठीक है, लेकिन अगर कोई मेहनत करके देश के सबसे बड़े संवैधानिक पद तक पहुंचता है तो सबसे ज्यादा जलन कांग्रेस पार्टी के नेताओं को होती है।

खरगे से माफी की मांग

भाजपा प्रवक्ता गौरव भाटिया ने कहा कि 'उदित राज कहते हैं कि किसी देश को द्रौपदी मुर्मू जैसी राष्ट्रपति नहीं मिलनी चाहिए। अधीर रंजन चौधरी राष्ट्रपति को राष्ट्रपत्नि कहकर संबोधित करते हैं। यह एक आदिवासी महिला के खिलाफ बेहद आपत्तिजनक टिप्पणी है। कांग्रेस नेताओं को लगता है कि सिर्फ फर्जी गांधी परिवार के सदस्य ही देश में संवैधानिक पदों पर बैठ सकते हैं। अजय कुमार कहते हैं कि राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू बुरी मानसिकता को दर्शाती हैं। आज मल्लिकार्जुन खरगे का आपत्तिजनक बयान सबूत है कि उनकी कोई जुबान नहीं फिसली है। यह जानबूझकर किया गया। हम मल्लिकार्जुन खरगे से मांग करते हैं कि वे अपने बयान पर माफी मांगें।'

MBBS में प्रवेश रद्द करने के खिलाफ याचिका पर सुनवाई से सुप्रीम कोर्ट का इनकार

नई दिल्ली, एजेंसी। सुप्रीम कोर्ट ने मंगलवार को ओडिशा के एक मेडिकल कॉलेज में बिना पूर्व सूचना के एमबीबीएस छात्र का प्रवेश रद्द करने के खिलाफ दायर याचिका पर सुनवाई करने से इनकार कर दिया। कोर्ट ने याचिकाकर्ता से हाईकोर्ट का रुख करने के लिए कहा। न्यायमूर्ति रा जे श बिं द ल औ र न्यायमूर्ति आर महादेवन की आंशिक कार्य दिवस (पीडब्ल्यूडी) पीठ ने छात्र के वकील हर्षित अग्रवाल से कहा कि वह अपनी शिकायत लेकर उच्च न्यायालय जाए। पीठ ने कहा कि याचिका वापस ले ली गई मानकर खारिज की जाती है। छात्र के वकील हर्षित अग्रवाल ने 2024-2029 शैक्षणिक सत्र के लिए एमबीबीएस पाठ्यक्रम में पुनः प्रवेश की मांग करते हुए सर्वोच्च न्यायालय का दरवाजा खटखटाया था। उन्होंने याचिका में कहा था कि उनका प्रवेश कथित तौर पर बिना किसी नोटिस या सुनवाई के किया गया। यह अवैध और प्राकृतिक न्याय के सिद्धांतों का उल्लंघन था। याचिका में पारदर्शिता और निष्पक्षता तय करने के लिए मेडिकल कॉलेजों में अनुशासनात्मक मामलों में एक समान प्रक्रियात्मक सुरक्षा उपायों की भी मांग की गई। पीठ ने अग्रवाल के उच्च न्यायालय न जाकर सीधे सर्वोच्च न्यायालय का दरवाजा खटखटाने के निर्णय पर सवाल उठाया। इस पर वकील ने एक पुराने मामले का हवाला दिया, जिसमें शीर्ष अदालत ने एक अन्य एमबीबीएस छात्र से जुड़ी इसी तरह की याचिका पर नोटिस जारी किया था। वकील ने पीठ को संबंधित स्थानांतरण याचिका के बारे में भी बताया, जिस पर 14 जुलाई को सुनवाई होनी है। इस पर न्यायमूर्ति बिंदल ने कहा कि हम यहां सीधे रिट याचिका पर विचार नहीं करने जा रहे हैं। इसके बाद वकील ने याचिका वापस लेने के लिए पीठ से अनुमति मांगी, जिसे स्वीकार कर लिया गया।

मुजफ्फरनगर में कांवड़ खंडित करने पर तनाव, आरोपी गिरफ्तार, स्वामी यशवीर महाराज ने बताया जिहादी मानसिकता

आर्यावर्त क्रांति ब्यूरो

मुजफ्फरनगर। उत्तर प्रदेश के मुजफ्फरनगर जनपद के पुरकाजी कस्बे में एक युवक पर कांवड़ पर थूकने की अफवाह के बाद स्थिति तनावपूर्ण हो गई। इस घटना से आक्रोशित लोगों ने रोड जाम कर विरोध दर्ज कराया। पुलिस ने सूझबूझ से हालात संभाला और हरिद्वार से नई पवित्र कांवड़ मंगवाकर दी।

दिल्ली निवासी शिव भक्त मुस्कान 'भोली' अपने भाई अंशुल शर्मा और अन्य श्रद्धालुओं के साथ हरिद्वार से गंगाजल लेकर कावड़ यात्रा पर निकली थीं। सोमवार को जब यह टोली मुजफ्फरनगर के पुरकाजी कस्बे में नगर पंचायत कार्यालय के पास रुकी, तभी एक युवक ने कथित तौर पर अंशुल की कांवड़ पर थूक दिया। इससे कांवड़ खंडित हो गई और श्रद्धालुओं ने तुरंत विरोध दर्ज कराते हुए घटनास्थल पर हंगामा शुरू कर दिया। कांवड़ियों ने मार्ग अवरुद्ध कर दिया और आरोपी के खिलाफ कड़ी कार्रवाई की मांग करने लगे। मुस्कान ने बताया कि पहले आरोपी ने एक कलश पर थूका, फिर दूसरे पर। जब वे विरोध करने लगे तो कहा गया कि कांवड़ खंडित नहीं हुई, उस पर दोबारा गंगाजल डालकर यात्रा जारी रखें। लेकिन जब कांवड़िए अड़ गए, तो पुलिस ने अपनी गाड़ी से हरिद्वार से नई पवित्र कांवड़ मंगवाकर उन्हें सौंपी। स्वामी यशवीर महाराज ने इस घटना पर कड़ा रोष व्यक्त करते हुए इसे 'जिहादी मानसिकता' की करतूत बताया। उन्होंने कहा कि एक श्रद्धालु जो पवित्र गंगाजल लेकर आ रही थी, उस पर थूकना अत्यंत निंदनीय कृत्य है। हमने तुरंत पुलिस को सूचना दी और पुलिस ने तत्परता दिखाते हुए आरोपी को गिरफ्तार कर लिया। पुलिस का धन्यवाद, लेकिन इस प्रकार की घटनाएं बार-बार हो रही हैं, जिन पर सख्त कार्रवाई की आवश्यकता है। एसपी सिटी सत्यनारायण प्रजापत ने बताया कि मामले की गंभीरता को देखते हुए तुरंत कार्रवाई की गई। आरोपी की पहचान कर उसके खिलाफ गंभीर धाराओं में मुकदमा दर्ज कर उसे गिरफ्तार किया गया है। पुलिस के अनुसार प्रारंभिक जांच में यह सामने आया है कि आरोपी मूक-बधिर है, हालांकि इसकी पुष्टि मेडिकल जांच के बाद की जाएगी। पुलिस ने उसे न्यायालय में प्रस्तुत कर दिया है और आगे की जांच जारी है। उन्होंने जनता से अपील की कि वे शिव भक्तों की भावनाओं का सम्मान करें और कांवड़ यात्रा को सुगम एवं शांतिपूर्ण बनाने में प्रशासन का सहयोग करें। उन्होंने कहा कि जो कांवड़िए अपने कंधों पर 100 लीटर तक गंगाजल लेकर चल रहे हैं, उनके समर्पण और आस्था का हमें सम्मान करना चाहिए। कांवड़िए अंशुल शर्मा ने कहा कि हम योगी जी की सरकार में भरोसा रखते हैं, लेकिन जब ऐसी घटनाएं हो रही हैं तो सवाल उठता है। अगर यह अखिलेश की सरकार होती तो हालात और बदतर होते। ऐसे व्यक्ति को बख्शा नहीं जाना चाहिए ताकि भविष्य में कोई और कांवड़ खंडित न कर सके।

भाषा विवाद के बीच निशिकांत दुबे का राज ठाकरे पर हमला; बोले- कभी यूपी-बिहार आओ, तुम्हें...

मुंबई, एजेंसी। भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के सांसद निशिकांत दुबे ने मंगलवार को महाराष्ट्र नवनिर्माण सेना (मनसे) प्रमुख राज ठाकरे पर हमला बोला। यह बयान राज्य में हिंदी-मराठी भाषा विवाद के बीच मनसे कार्यकर्ताओं की ओर से की गई कथित हिंसा और तोड़फोड़ की घटनाओं के सामने आने के बाद आया है।

निशिकांत दुबे ने 2007 की एक घटना का हवाला दिया, जिसका कथित तौर पर विकीलीक्स में जिक्र किया गया था। इसमें बताया गया था कि मनसे कार्यकर्ताओं ने बिहार के एक छात्र पर हमला किया। दुबे ने कहा कि गुंडागर्दी ही राज ठाकरे का एकमात्र उद्देश्य है और वह यह सब मुंबई नगर निगम चुनाव हार के डर से करते हैं।

'बर्दाश्त करने की सभी सीमाएं पार हो चुकीं'

एक्स पर एक पोस्ट में निशिकांत दुबे ने लिखा, जब राज ठाकरे को जन समर्थन नहीं मिलता, तो वह अपने गुंडों को आगे कर देते हैं। इसका मतलब है कि गुंडागर्दी ही उनका एकमात्र उद्देश्य है, जो वे मुंबई नगर निगम चुनाव से ठीक पहले हार के डर से करते हैं। उन्होंने आगे कहा, मेरा विरोध ठाकरे की गुंडागर्दी को लेकर है और अब सहनशीलता की सारी सीमाएं पार हो चुकी हैं।

'मराठा समुदाय से मत जोड़ो खुद की लड़ाई'

पहले भी अपने बयानों को लेकर विवादों में रहे निशिकांत दुबे ने मराठा समुदाय के प्रति सम्मान प्रकट किया। उन्होंने कहा, मराठा समुदाय हमेशा से सम्माननीय रहा है और देश हम सबका है। जहां मैं सांसद हूं, वहां मराठा मधुलिमये लगातार तीन बार सांसद रहे हैं। हमने (दिवंगत पूर्व प्रधानमंत्री) इंदिरा गांधी के खिलाफ लोकसभा में एक मराठा को जितवाया था। दुबे ने कहा, ठाकरे होश में आओ, अपनी लड़ाई को मराठा समुदाय से मत जोड़ो। हमने मुंबई के विकास में योगदान दिया है और आगे भी देते रहेंगे।

'यूपी-बिहार आओ, तुमको पटक-पटक के मारेंगे'

राज ठाकरे की ओर से अपने कार्यकर्ताओं को दिए गए विवादित निर्देश 'मारो लेकिन वीडियो मत बनाओ' को लेकर निशिकांत दुबे ने पलटवार किया और कहा, अगर हिम्मत है तो हिंदी बोलने वालों को ही क्यों, उर्दू, तमिल, तेलुगू बोलने वालों को भी मारो। अगर इतने ही बड़े नेता हो, तो महाराष्ट्र से बाहर निकलो—बिहार, उत्तर प्रदेश, तमिलनाडु आओ। 'तुमको पटक पटक के मारेंगे।'

मराठियों के लिए दुबे के मन स्पष्ट नफरत: आदित्य ठाकरे

उधर, शिवसेना (यूबीटी) के नेता आदित्य ठाकरे ने आरोप लगाया कि निशिकांत दुबे के मन में मराठी पहचान के प्रति स्पष्ट घृणा है। उन्होंने कहा, निशिकांत दुबे हिंदी भाषियों के प्रवक्ता नहीं हैं। उनके मन में मराठी के लिए जो नफरत है वह साफ दिखती है।

बिहार में सरकारी नौकरियों में महिलाओं को 35% आरक्षण, युवा आयोग के गठन को भी मंजूरी

पटना, एजेंसी। मुख्यमंत्री नीतीश कुमार के नेतृत्व वाली बिहार सरकार ने घोषणा की कि राज्य में सभी सरकारी सेवाओं और पदों में 35 प्रतिशत महिला उम्मीदवारों के लिए आरक्षित होंगे। चुनावी वर्ष में लिया गया यह महत्वपूर्ण निर्णय मुख्यमंत्री कुमार की अध्यक्षता में हुई कैबिनेट बैठक में लिया गया। बिहार में इस साल के अंत में विधानसभा चुनाव होने हैं। निर्णय के अनुसार, बिहार की मूल निवासी सभी महिला उम्मीदवारों को सरकारी सेवाओं और नौकरियों के लिए सभी सीधी भर्ती में 35 प्रतिशत आरक्षण दिया जाएगा।

इसके अलावा नीतीश कुमार ने घोषणा की कि राज्य सरकार की मंजूरी के बाद राज्य मंत्रिमंडल ने मंगलवार को बिहार युवा आयोग के गठन को मंजूरी दे दी है। इस कदम का उद्देश्य बिहार के युवाओं को रोजगार के अधिक अवसर प्रदान करना और युवा प्रशिक्षण में निवेश को बढ़ावा देना है, ताकि उन्हें सशक्त और सक्षम बनाया जा सके। नीतीश ने एक्स पर लिखा कि मुझे यह बताते हुए प्रसन्नता हो रही है कि बिहार के युवाओं को अधिक से अधिक रोजगार के अवसर उपलब्ध कराने, उन्हें प्रशिक्षित करने तथा सशक्त और सक्षम बनाने के उद्देश्य से राज्य सरकार ने बिहार युवा आयोग के गठन का निर्णय लिया है और आज कैबिनेट द्वारा बिहार युवा आयोग के गठन की मंजूरी भी दे दी गई है। मुख्यमंत्री ने कहा कि समाज में युवाओं की स्थिति में सुधार और उत्थान से संबंधित सभी मामलों पर सरकार को सलाह देने में इस आयोग की महत्वपूर्ण भूमिका होगी।

UP का सीरियल रेपिस्ट: दरिंदगी से पहले बच्चियों को पिलाता शराब, फिर नहलाकर पहनाता था नए कपड़े, नग्न फोटो-वीडियो

आर्यावर्त संवाददाता

बहराइच। बहराइच में चार बच्चियों से हैवानियत करने के आरोपी सुजौली निवासी अविनाश पांडेय उर्फ सिंपल पांडेय को पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया। उसके मोबाइल से मासूम बच्चियों की नग्न तस्वीरें व वीडियो मिली है। पीड़ित बच्चियों ने भी अविनाश की पहचान की।

पुलिस ने घटना स्थल से बच्चियों के कपड़े व आरोपी की ओर से घटना के समय पहने गए कपड़े भी बरामद कर लिए हैं। सोमवार को एसपी रामनयन सिंह ने बताया कि 25 जून को पहली बच्ची के गायब होने के बाद से पुलिस टीम आरोपी की तलाश में जुट गई थी।

इस दौरान 28 जून, तीन जुलाई समेत कुल चार बच्चियों के साथ दरिंदगी हुई। जांच के दौरान एक पीड़िता पुलिस को घटनास्थल पर ले गई और आरोपी के हाथ व पैर पर टैटू के निशान होने की जानकारी दी।

इस बीच सर्विलांस टीम को घटनास्थलों के बेस ट्रांसीवर स्टेशन (बीटीएस) के आधार पर सुजौली निवासी अविनाश पांडेय उर्फ सिंपल पांडेय की जानकारी हुई, जिसे बाजपुर बनकटी गांव से रविवार को गिरफ्तार कर लिया गया। पूछताछ में उसने जुर्म कुबूल कर लिया।

दुष्कर्म से पहले बच्चियों को पिलाता था शराब, नहलाकर पहनाता था नए कपड़े

पलक झपकते ही बच्चियों को बिस्तर से गायब करने का आरोपी अविनाश पांडेय बच्चियों के साथ बर्बरता की हदें पार कर देता था। बच्चियां घटना के समय शिथिल रहें और चीखें न, इसके लिए वह बच्चियों को दुष्कर्म से पहले देशी शराब पिलाता था।

बच्चियों को बहलाने फुसलाने में भी वह कोई कसर नहीं छोड़ता था। बच्चियों के साथ मारपीट व दुष्कर्म के बाद उन्हें टॉफी, चॉकलेट, नमकीन का प्रलोभन देकर घर में किसी को घटना की जानकारी नहीं देने की चेतावनी भी देता था।

बच्चियों को नहलाकर साफ करता था अपराध के दाग

पुलिस के अनुसार अविनाश बच्चियों से दुष्कर्म के बाद उन्हें नहलाकर दाग साफ करने का भी प्रयास करता था। एसपी रामनयन सिंह के अनुसार अविनाश बच्चियों के कपड़े बदल कर उन्हें नए कपड़े पहनाता था। घटनास्थल से देशी शराब के खाली टेट्रा पैक, टॉफी-चॉकलेट व नमकीन के खाली पैकेट बरामद किए हैं।

अविनाश के साथ भी हुई थी दरिंदगी

आरोपी अविनाश के साथ भी बचपन में दरिंदगी हुई थी। घटना के समय छोटा होने के चलते उसने किसी को कुछ भी नहीं बताया था। बड़े होने पर अविनाश ने बच्चियों को शिकार बनाना शुरू किया। आरोपी अविनाश गरीब परिवार से है। उसके पिता मजदूरी करते हैं। अविनाश भी मजदूरी करता था। पुलिस की पूछताछ में उसने बताया कि रात के समय वह साइकिल लेकर निकलता था। इस दौरान सुनसान स्थान पर घर के बाहर या अंदर बिस्तर पर अकेली लेटी बच्चियों को उठाता था और साइकिल से ही लेकर जंगल के अंदर सुनसान स्थान पर चला जाता था।

एसपी ने खुलासा करने वाली टीम पर लगा दी पुरस्कारों की झड़ी

मासूम बच्चियों को शिकार बनाने के आरोपी अविनाश पांडेय की गिरफ्तारी के बाद एसपी ने पुरस्कारों की झड़ी लगा दी। एसपी ने बताया कि सुजौली पुलिस व स्वॉट टीम को 15,000-15,000 रुपये, सर्विलांस टीम को 10,000 रुपये व घटना के खुलासे में व्यक्तिगत रूप से दिन-रात एक करने वाले उपनिरीक्षक रवीन्द्र तिवारी व मारकंडेय मिश्रा को 10,000-10,000 रुपये का पुरस्कार दिया है। एएसपी ग्रामीण डीपी तिवारी और सीओ हर्षिता तिवारी को प्रशंसापत्र दिया है।

एसटीएफ ने 50 हजार के इनामिया को किया गिरफ्तार

सुल्तानपुर। एसटीएफ ने सुल्तानपुर में एक बड़ी कामयाबी हासिल की है। एसटीएफ की टीम ने जयसिंहपुर क्षेत्र के निदुरा अंडरपास से 50 हजार रुपये के इनामी बदमाश को गिरफ्तार किया है। पकड़े गए आरोपी की पहचान मोहम्मद रुखसार के रूप में हुई है। वह प्रतापगढ़ के थाना कंधई क्षेत्र के पूरे देवजानी का रहने वाला है। आरोपी थाना पट्टी, प्रतापगढ़ में दर्ज मुकदमा संख्या 179/2025 में वांछित था। पुलिस महानिरीक्षक प्रयागराज ने 26 जून 2025 को इस बदमाश पर 50 हजार रुपये का इनाम घोषित किया था। एसटीएफ प्रभारी धर्मेश कुमार शाही की टीम ने 7 जुलाई को शाम करीब 7:15 बजे मुखबिर की सूचना पर इसे गिरफ्तार किया। तलाशी के दौरान आरोपी के पास से एक अवैध तमंचा 315 बोर, दो जिंदा कारतूस और 800 रुपये बरामद हुए। इस संबंध में थाने में आर्म्स एक्ट के तहत मुकदमा दर्ज कर आगे की कार्रवाई की जा रही है।

ड्यूटी के लिए गोविंदपुरी स्टेशन निकले रेलवे के मुख्य कार्यालय अधीक्षक का मिला शव, दो दिन से था लापता

आर्यावर्त क्रांति ब्यूरो

कानपुर। पांच जुलाई को ड्यूटी के लिए घर से निकले रेलवे के मुख्य कार्यालय अधीक्षक लक्ष्मी नारायण (58) का शव मिला है। वह गोविंदपुरी स्टेशन के सीनियर सीसी विभाग में कार्यरत थे। स्वजनों ने अनहोनी की आशंका जाहिर करते हुए नौबस्ता थाने में शिकायत दी थी। अब घर के पास ही शव मिला।

घर के पास ही नाले से उनका शव मिलने की सूचना पर पुलिस पहुंची। इसकी जानकारी परिवारवालों को भी दे दी गई। आवास विकास, हंसपुरम निवासी लक्ष्मी नारायण की बड़ी बेटी दीक्षा गुप्ता ने बताया कि पांच जुलाई की सुबह 9 बजे वह हर दिन की तरफ टिफिन लेकर ड्यूटी के लिए घर से पैदल निकले थे। दोपहर 11:30 बजे उनके कार्यालय से फोन आया कि ड्यूटी पर नहीं पहुंचे। मोबाइल भी बंद था। इसके बाद रिश्तेदारों, दोस्तों और रेलवे कर्मचारियों से भी पूछा गया लेकिन कोई जानकारी नहीं मिली। घर के पास लगे एक सीसी कैमरे में पैदल जाते दिखाई दिए थे। कैमरे में नौबस्ता बाइपास से आटो में भी बैठकर जाते दिखे थे। परिवार वालों ने कई जगह पोस्टर भी लगवाए थे, जिसमें पिता को तलाशने वाले को 11 हजार का इनाम देने की बात लिखी थी। उत्तर-मध्य रेलवे के जीएमसी की ओर से नौबस्ता पुलिस को एक पत्र भेजा गया था, जिसमें लापता लक्ष्मीनारायण के सीयूजी नंबर को सर्विलांस पर लगाकर उन्हें तलाशने की बात कही गई है।

शालीनता बरते यात्री, कावड़ यात्रा को लेकर विहिप की अपील

सुल्तानपुर। विश्व हिंदू परिषद की काशी प्रांत धर्म यात्रा समिति ने मंगलवार को सुल्तानपुर में आयोजित प्रेस वार्ता में कावड़ यात्रा को लेकर कई महत्वपूर्ण मुद्दों पर अपनी बात रखी। समिति के काशी क्षेत्र धर्म यात्रा प्रमुख आनंद प्रकाश शुक्ला ने यात्रा के शांतिपूर्ण आयोजन के लिए प्रशासन से पूर्ण सुरक्षा व्यवस्था सुनिश्चित करने का आग्रह किया। आनंद प्रकाश शुक्ला ने कहा कि यह यात्रा आमजन की आस्था से जुड़ी है और इसके सफल आयोजन के लिए समाज का सहयोग आवश्यक है। उन्होंने स्थानीय लोगों से कावड़ यात्रियों के ठहराव, भोजन और जलपान जैसी मूलभूत व्यवस्थाएं उपलब्ध कराने की अपील की। विहिप के केंद्रीय मंत्री राजेंद्र सिंह पंकज ने कहा कि देशभर में पारंपरिक धार्मिक यात्राओं को दोबारा प्रारंभ करने की आवश्यकता है। उन्होंने बताया कि धर्म यात्रा समिति विभिन्न प्रांतों में सक्रिय है और इसका विस्तार किया जा रहा है।

छत्रपति शिवाजी के स्मारक को 9 .46 करोड़ से होगा अधिग्रहण, सीएम ने दिया आश्वासन

आर्यावर्त संवाददाता

आगरा। कोठी मीना बाजार मैदान व कोठी में छत्रपति शिवाजी महाराज के स्मारक के निर्माण को कोठी व भूमि के अधिग्रहण के लिए सोमवार को मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ से उच्च शिक्षा मंत्री योगेंद्र उपाध्याय ने लखनऊ में मुलाकात की। उन्होंने भूमि अधिग्रहण के लिए मुख्यमंत्री से धनराशि आवंटित कराने का अनुरोध किया।

मुख्यमंत्री ने उन्हें आश्वासन दिया। भूमि व कोठी के अधिग्रहण पर करीब 9.46 करोड़ रुपये की लागत आएगी। उच्च शिक्षा मंत्री ने 27 अप्रैल को सर्किट हाउस में मंडलायुक्त शैलेंद्र सिंह, डीएम अरविंद मल्लप्पा बंगारी, एडीए उपाध्यक्ष एम. अरूनमोली के साथ छत्रपति शिवाजी के स्मारक के निर्माण को बैठक की थी। उन्होंने कोठी मीना बाजार मैदान और कोठी के अधिग्रहण की प्रक्रिया शुरू करने के निर्देश दिए थे। डीएम ने प्रस्ताव तैयार कराकर महानिदेशक पर्यटन को भेजा था।

उच्च शिक्षा मंत्री ने मुख्यमंत्री को प्रत्यावेदन सौंपकर कोठी मीना बाजार की 2946.75 वर्ग मीटर भूमि और कोठी के अधिग्रहण के प्रस्ताव पर शीघ्रता से कार्रवाई का अनुरोध किया। योगेंद्र उपाध्याय ने इतिहास संकलन समिति के शोध के आधार पर औरंगजेब द्वारा धोखे से छत्रपति शिवाजी महाराज को कोठी मीना बाजार में बंदी बनाकर रखने और यहां से उनके बच निकलने का दावा किया था। डा. अलौकिक उपाध्याय साथ रहे।

उच्च शिक्षा मंत्री ने बताया कि, मुख्यमंत्री ने उन्हें आश्वासन दिया है। छत्रपति शिवाजी का स्मारक महाराष्ट्र व उत्तर प्रदेश के मध्य ऐतिहासिक व सांस्कृतिक एकात्मकता का प्रतीक बन सकता है। स्मारक, छत्रपति शिवाजी के अद्भुत शौर्य, बुद्धि चातुर्य व योजना कौशल की स्मृति को जीवंत करेगा।

ग्रामीण क्षेत्र में भूमि अधिग्रहण पर चार गुणा और शहरी क्षेत्र में दो गुणा मुआवजा देने का प्रविधान है। जिला प्रशासन ने भूमि का 3.24 करोड़ रुपये मुआवजा और भवन का 86.81 लाख मूल्य आंकते हुए 4.10 करोड़ रुपये कीमत आंकी थी। भूमि अधिग्रहण में 100 प्रतिशत सोलेशियम और एक वर्ष की 12 प्रतिशत ब्याज को मिलाकर यह धनराशि करीब 8.60 करोड़ रुपये बनेगी। अर्जन पर 10 प्रतिशत व्यय को जोड़ते हुए कुल लागत करीब 9.46 करोड़ रुपये आएगी।

सात वाद हैं विचाराधीन

कोठी मीना बाजार को लेकर सात वाद न्यायालय में विचाराधीन हैं। इसके चलते अधिग्रहण को धनराशि न्यायालय में जमा करा दी जाएगी।

पिता के साथ बीएसए का पत्र ले आई पंखुड़ी तो मिला दाखिला, स्कूल पहुंचकर शुरू की पढ़ाई

आर्यावर्त क्रांति ब्यूरो

गोरखपुर। जनता दर्शन में सीएम योगी के आदेश के बाद शहर की पुर्दिलपुर की रहने वाली पंखुड़ी त्रिपाठी का सोमवार को विद्यालय में दाखिला मिल गया। चार माह बाद पंखुड़ी पिता राजीव त्रिपाठी के साथ स्कूल पहुंची, जहां प्रधानाचार्य राजेश सिंह ने प्रवेश की प्रक्रिया पूरी की।

विद्यालय में जागरण से बातचीत में पंखुड़ी ने बताया सीएम योगी आदित्यनाथ की वजह से यह सब कुछ संभव हो पाया है। वह जो कहते हैं, करके दिखाते हैं। पंखुड़ी ने बताया कि मां मीनाक्षी ने पहले दिन टिफिन में उनकी मनपसंद की पूड़ी-सब्जी दी हैं। गत एक जुलाई को पंखुड़ी त्रिपाठी ने गोरखनाथ मंदिर में आयोजित जनता दर्शन में मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ से मुलाकात कर उन्हें अपनी परेशानी बताई थी।

कक्षा सात में पक्की बाग के अंग्रेजी माध्यम के स्कूल में दाखिला कराने की गुहार लगाते हुए पंखुड़ी ने कहा था, महाराज जी, मैं पढ़ना चाहती हूं, फीस माफ करवा दीजिए या फीस का इतंजाम करा दीजिए।

उसने बताया कि उसी स्कूल से वह कक्षा छह पास की है। पर, पिता राजीव त्रिपाठी के बीमार हो जाने से परिवार आर्थिक रूप से काफी कमजोर हो गया है। मां मीनाक्षी एक दुकान पर नौकरी कर रही हैं। उसके अलावा कक्षा 12 में पढ़ने वाला भाई भी है। पंखुड़ी ने बताया कि फीस न जमा कर पाने के कारण कक्षा सात में दाखिला नहीं हो पा रहा है। इस पर सीएम योगी ने उसे भरोसा दिया था कि उसकी पढ़ाई नहीं रुकने पाएगी। इसे लेकर उन्होंने अफसरों को इंतजाम करने को निर्देशित किया था और पंखुड़ी की ख्वाहिश पर उसके साथ फोटो भी खिंचवाई थी।

पेट्रोल पंप मैनेजर ने ड्यूटी पर खुद को मारी गोली, आत्महत्या का कारण जानने में जुटी पुलिस

आर्यावर्त संवाददाता

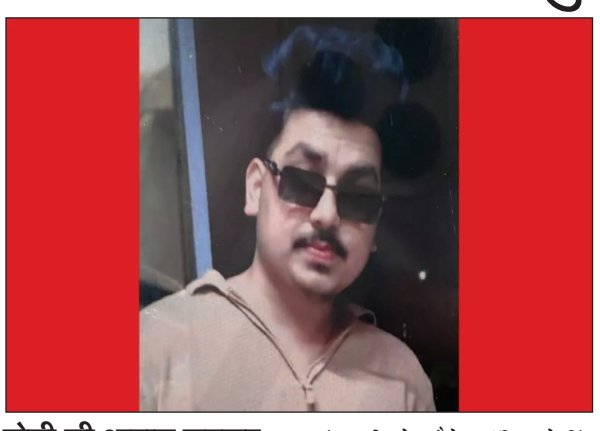

आगरा। जगदीशपुरा के बोदला-बिचपुरी रोड पर स्थित पेट्रोलपंप के मैनेजर भगवती विहार के पिंटू ने देर रात पंप पर ड्यूटी के दौरान तमंचे से खुद को गोली मारकर आत्महत्या कर ली। गोली चलने पर अन्य कर्मचारी कार्यालय पहुंचे तो पिंटू तड़प रहा था। उसके सिर का थोड़ा हिस्सा दूर गिरा पड़ा था। कुछ ही सेकेंड में उसकी सासें थम गई। सूचना पर आई जगदीशपुरा पुलिस ने फोरेंसिक टीम की मदद से साक्ष्य जुटाए। परिवार के लोग आत्महत्या की वजह नहीं बता पा रहे हैं। पुलिस मामले की जांच कर रही है।

बोदला के भगवती विहार के 25 वर्षीय पिंटू हरिओम बोदला -बिचपुरी रोड,अवधपुरी स्थित के.एस.के पेट्रोल पंप पर दो वर्षों से मैनेजर थे। वह तीन भाई और बहन में सबसे बड़े थे। रविवार को वह रात की ड्यूटी पर रात नौ बजे पंप पहुंचे थे।

गोली की आवाज सुनकर पहुंचे कर्मचारियों ने पुलिस को दी सूचना

पंप पर रात के समय उनके साथ दो कर्मचारी और ड्यूटी कर रहे थे। उन्होंने बताया कि रात में पिंटू पंप में बने ऑफिस में बैठे थे। रात में डेढ़ बजे अचानक ऑफिस से गोली चलने की आवाज आई। दोनों कर्मचारी अंदर की ओर दौड़े। ऑफिस में पिंटू तड़पते हुए दिखे। उनके सिर में गोली लगी थी। ऑफिस में खून और मांस के टुकड़े पड़े थे। कुछ ही देर में उन्होंने दम तोड़ दिया। जब तक आसपास के और लोग भी आ गए। लोगों ने स्वजन और पुलिस को सूचना दी।

मौके पर आई जगदीशपुरा पुलिस ने फोरेंसिक टीम से जांच कराई और तमंचा कब्जे में लेकर शव को पोस्टमार्टम के लिए भेजा। चाचा मान सिंह ने बताया कि पिंटू घर पर किसी तरह के अवसाद में नहीं लग रहा था। परिवार के लोग आत्महत्या की वजह नहीं समझ पा रहे हैं। सभी का रो-रोकर बुरा हाल है।

मोबाइल और सीसीटीवी देख जुटाई जा रही जानकारी

एसीपी मयंक तिवारी ने बताया कि पुलिस आत्महत्या की वजह जानने का प्रयास कर रही है। मौके पर मिला पिंटू का मोबाइल लाक है। उसे खुलवाने के लिए भेजा गया है। पंप के सीसीटीवी कैमरों की रिकॉर्डिंग देखी जा रही है। कर्मचरियों से भी पूछताछ की जा रही है। युवक के पास तमंचा कैसे आया और आत्महत्या की वजह पता लगाने के लिए हर तथ्य की जानकारी की जा रही है।

सपा पूर्व विधायक समेंत तीन पर मुकदमा दर्ज

सुलतानपुर। पूर्व सेक्टर प्रभारी सुनील यादव की संदिग्ध मौत के मामले में मृतक की पत्नी की तहरीर पर पूर्व सपा विधायक संतोष पांडेय, विवेक मिश्रा और सुशील निषाद पर केस दर्ज हुआ है।

मृतका की पत्नी सरिता यादव के अनुसार, 3 जुलाई की रात को विवेक मिश्रा और सुशील निषाद ने सुनील यादव को गांव स्थित लाला की बाग में बुलाया। दोनों ने उन्हें लात-घूसों और हथियार की बट से मारा। विवेक मिश्रा ने सुनील के सीने पर चढ़कर लातें मारीं, जिससे उनके मुंह से खून निकलने लगा। आरोपियों ने प्रधानी का चुनाव लड़ने पर जान से मारने की धमकी भी दी।

घटना के बाद सुनील ने रात 3 बजे फेसबुक पर पोस्ट कर प्रशासन से सुरक्षा की मांग की। अगले दिन पूर्व विधायक संतोष पांडेय ने सुनील को अपने पास बुलाया। उन्होंने सुनील का मोबाइल छीन लिया और उन्हें पीटा। फेसबुक पोस्ट और धमकी की रिकॉर्डिंग को डिलीट कर दिया।

डायरिया के प्रति जागरूकता के लिए हस्ताक्षर अभियान की शुरुआत

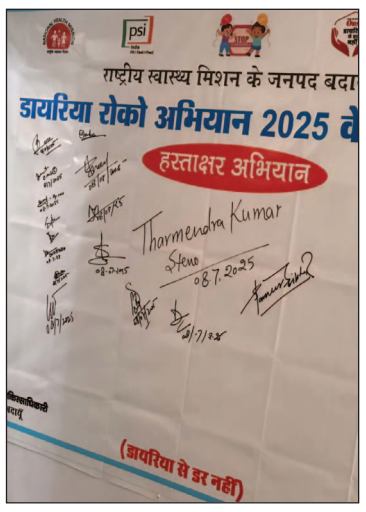

आर्यावर्त क्रांति ब्यूरो

बदायूं। डायरिया के प्रति जन जागरूकता के लिए मंगलवार को मुख्य चिकित्सा अधिकारी डॉ. रामेश्वर मिश्रा ने मुख्य चिकित्सा अधिकारी कार्यालय परिसर में हस्ताक्षर अभियान का शुभारम्भ किया। उन्होंने कहा कि शून्य से पांच साल तक के बच्चों में डायरिया के लक्षण, कारण और बचाव आदि के बारे में प्रचार-प्रसार के लिए डायरिया रोको अभियान (स्टॉप डायरिया कैम्पेन) के तहत इसकी शुरुआत की गयी है।

इस मौके पर मुख्य चिकित्सा अधिकारी ने कहा कि जिले में 16 जून से 31 जुलाई तक डायरिया रोको अभियान चलाया जा रहा है। डायरिया रोको अभियान में पापुलेशन सर्विसेज इंटरनेशनल इंडिया (पीएसआई इंडिया) और केनव्यू भी सहयोग कर रहे हैं। अभियान की इस साल की थीम- "डायरिया की रोकथाम, सफाई और ओआरएस से रखें अपना ध्यान" तय की गयी है। इस अभियान का उद्देश्य बच्चों में डायरिया की रोकथाम, ओआरएस व जिंक के उपयोग को प्रोत्साहन और जनसामान्य में स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता फैलाना है। बारिश और उमस में बच्चा डायरिया की चपेट में कई कारणों से आ सकता है, जैसे- दूषित जल पीने से, दूषित हाथों से भोजन बनाने या बच्चे को खाना खिलाने, खुले में शौच करने या बच्चों के मल का ठीक से निस्तारण न करने आदि से। इसलिए शौच और बच्चों का मल साफ़ करने के बाद, भोजन बनाने और खिलाने से पहले हाथों को साबुन-पानी से अच्छी तरह अवश्य धुलें। डायरिया का सही इलाज ओआरएस का घोल और जिंक के टेबलेट हैं, जिन्हें उम्र के अनुसार निश्चित अवधि तक जरूर दें। उन्होंने कहा कि बच्चे को दिन भर में तीन या तीन से अधिक बार दस्त हो तो समझना चाहिए कि बच्चा डायरिया से ग्रसित है और ऐसे में उसको तत्काल ओआरएस का घोल देना चाहिए ताकि शरीर में पानी की कमी न होने पाए, साथ ही निकटतम स्वास्थ्य केंद्र पर संपर्क करना चाहिए।

इस मौके पर अपर मुख्य चिकित्सा अधिकारी (एसीएमओ) डॉ. मोहन झा, डॉ. निरंजन सिंह, डॉ. पवन कुमार, डॉ. अमित रस्तोगी, जिला कार्यक्रम प्रबन्धक कमलेश, डीसीपीएम अरविंद राणा, नगरीय स्वास्थ्य केंद्र से उमेश राठौर, अभय प्रताप सिंह, संतोष सागर तथा पीएसआई इंडिया से शशांक दुबे और दानिश आदि मौजूद रहे।

एकीकृत बागवानी विकास मिशन योजना का लाभ लें किसान, उद्यान विभाग में कराएं पंजीकरण

आर्यावर्त संवाददाता

प्रतापगढ़। एकीकृत बागवानी विकास मिशन योजना वर्ष 2025-26 का लाभ किसान भाई अवश्य लें। लाभ प्राप्त करने के लिए उद्यान विभाग में पंजीकरण कराना आवश्यक होगा। इसके अंतर्गत बागवानी (आम, आंवला, ड्रैगन फ्रूट) टिश्यू कल्चर केला एवं प्याज की खेती की जाएगी।

किसान खतौनी, बैंक पासबुक, आधार कार्ड एवं एक पासपोर्ट साइज फोटोग्राफ के साथ उद्यान विभाग में संपर्क करके अपना पंजीकरण करा सकते हैं। जिला उद्यान अधिकारी सुनील कुमार शर्मा ने बताया कि योजना का लाभ प्रथम आवक-प्रथम पावक के आधार पर दिया जाएगा।

जिले में 2 लाख 40 हजार फलों के पौधे लगवाएगा उद्यान विभाग

उद्यान विभाग जिले में 2 लाख 40 हजार फलों के पौधे लगवाएगा। इसकी शुरुआत जुलाई माह के पहले सप्ताह से कर दी गई है। फलों के पौधे ग्राम प्रधानों, किसानों व एफपीओ को निशुल्क दिए जा रहे हैं। इन पौधों को जनपद मुख्यालय व रानीगंज कैथौला के नाराणपुर की नर्सरी में तैयार किया गया है।

रानीगंज कैथोला की नर्सरी में पौधे तैयार किए गए

उद्यान विभाग की ओर से हर वर्ष फलों के पौधों की नर्सरी तैयार कर इसका रोपण कराया जाता है। इस साल भी विभाग द्वारा मुख्यालय और रानीगंज कैथौला के नारायणपुर की नर्सरी में उद्यान विभाग की नर्सरी में यह पौधे तैयार किए गए हैं। इनमें आंवला, नींबू, कटहल, करौंदा, आम, अमरूद, सहजन आदि के पौधे हैं। जनपद मुख्यालय स्थित नर्सरी पर एक लाख 20 हजार तथा नारायणपुर नर्सरी में भी एक लाख 20 हजार पौधे तैयार किए गए हैं। इन पौधों को किसानों को निश्शुल्क वितरित कराया जाना शुरू कर दिया गया है।

अधिक से अधिक पौधे लगाने का लक्ष्य

जिला अधिकारी सुनील कुमार शर्मा ने बताया कि उद्यान विभाग द्वारा जनपद मुख्यालय एवं रानीगंज कैथौला के नारायणपुर की नर्सरी में 2 लाख 40 हजार फलों के पौधे तैयार किए गए हैं। ग्राम प्रधानों, किसानों व एफपीओ को पौधे निश्शुल्क दिए जा रहे हैं। इनका वितरण जुलाई माह के प्रथम सप्ताह से शुरू कर दिया गया है। विभाग का प्रयास है कि अधिक से अधिक लोग फलों के पौधे लगाएं।

श्रावण मास की पवित्र कांवड़ यात्रा को लेकर मंत्री ए.के. शर्मा ने दिए निर्देश, बोले-

“श्रद्धालुओं को कोई असुविधा न हो, लापरवाही कतई बर्दाश्त नहीं”

आर्यावर्त क्रांति ब्यूरो

लखनऊ। सावन मास के आरंभ से पहले उत्तर प्रदेश सरकार पूरी तरह अलर्ट हो गई है। राज्य के नगर विकास एवं ऊर्जा मंत्री ए.के. शर्मा ने मंगलवार को लखनऊ स्थित जल निगम के फील्ड हॉस्टल 'संगम' में एक वर्चुअल समीक्षा बैठक कर दोनों विभागों के अधिकारियों को कांवड़ यात्रा की तैयारियों को लेकर सख्त निर्देश दिए। उन्होंने साफ कहा कि 11 जुलाई से आरंभ हो रही पवित्र कांवड़ यात्रा के दौरान श्रद्धालुओं को किसी प्रकार की परेशानी नहीं होनी चाहिए और कहीं से भी कोई शिकायत नहीं आनी चाहिए। इसके लिए सभी अधिकारी पूरी सजगता और समन्वय के साथ कार्य करें।मंत्री ए.के. शर्मा ने कहा कि श्रावण मास भगवान शिव

की उपासना का पवित्र महीना है, जब लाखों श्रद्धालु विभिन्न स्थानों से जल भरकर उसे कांवड़ में लेकर शिवालयों में अर्पित करते हैं। यह आस्था का महापर्व है और सरकार का यह संकल्प है कि यह यात्रा पूरी श्रद्धा, स्वच्छता, सुरक्षा और सुगमता के साथ सम्पन्न हो। उन्होंने विद्युत आपूर्ति की स्थिति, साफ-सफाई, जल व्यवस्था, शौचालयों की उपलब्धता और कचरा प्रबंधन सहित हर व्यवस्था की बारीकी से समीक्षा की और संबंधित अधिकारियों को प्रत्येक बिंदु पर सतर्कता बरतने को कहा।

ऊर्जा मंत्री ने विद्युत विभाग के अधिकारियों से स्पष्ट रूप से कहा कि कांवड़ यात्रा मार्गों, शिवालयों, मंदिरों, पंडालों और शिविरों में 24 घंटे निर्बाध बिजली आपूर्ति सुनिश्चित की जाए। विशेषकर रात्रि के समय बिजली आपूर्ति में कोई व्यवधान न हो ताकि रात में यात्रा कर रहे श्रद्धालुओं को असुविधा न हो। उन्होंने कहा कि यात्रा मार्गों पर लगे बिजली के पोल, स्टेवायर और ट्रांसफार्मरों की पहले से जांच कर ली जाए, पोलों को इंसुलेट किया जाए और ट्रांसफार्मर को चारों ओर से बैरिकेड किया जाए ताकि किसी भी प्रकार की विद्युत दुर्घटना की आशंका न रहे। उन्होंने यह भी कहा कि अधिक ऊंचाई वाले डीजे या कांवड़ लेकर चलने वाले श्रद्धालु अगर लटकी हुई विद्युत लाइनों के संपर्क में आ जाएं, तो दुर्घटना हो सकती है। इसलिए पहले से चेतावनी, मार्ग दर्शन और जागरूकता के लिए पंपलेट वितरित किए जाएं। विद्युत पोलों के आसपास झाड़ियों और पेड़ों की छंटाई कराई जाए, स्ट्रीट लाइटों की मरम्मत की जाए, और दुर्घटनाओं से सबक लेकर इस बार चूक न हो। नगर विकास मंत्री ने सभी नगर निकायों के अधिकारियों को निर्देशित किया कि कांवड़ यात्रा मार्गों को गड्ढा मुक्त किया जाए, सड़कों की मरम्मत समय रहते पूर्ण की जाए और यात्रा मार्गों पर स्ट्रीट लाइटों को दुरुस्त किया जाए। उन्होंने कहा कि जहां-जहां श्रद्धालुओं के ठहरने के लिए पंडाल या शिविर बनाए गए हैं, वहां स्वच्छ पेयजल, मोबाइल टॉयलेट, डस्टबिन, सफाईकर्मी और कूड़ा प्रबंधन की समुचित व्यवस्था होनी चाहिए।

लखनऊ की अदालत ने नाबालिग से दुर्व्यवहार के मामले में पांच आरोपियों को सुनाई तीन साल की कठोर सजा

ऑपरेशन कन्विक्शन के तहत पुलिस को मिली बड़ी सफलता

आर्यावर्त क्रांति ब्यूरो

लखनऊ। उत्तर प्रदेश पुलिस के ‘ऑपरेशन कन्विक्शन’ अभियान के अंतर्गत लखनऊ पुलिस को एक और बड़ी कामयाबी हाथ लगी है। आशियाना थाना क्षेत्र से जुड़े वर्ष 2014 के एक गंभीर मामले में विशेष पाक्सो कोर्ट ने फैसला सुनाते हुए पांच आरोपियों को दोषसिद्ध कर तीन-तीन वर्ष के कठोर कारावास और आर्थिक दंड की सजा सुनाई है। यह फैसला सोमवार को विशेष पाक्सो कोर्ट (थर्ड) द्वारा सुनाया गया, जो लखनऊ कमिश्नरेट के लिए एक महत्वपूर्ण उपलब्धि है।यह मामला 2014 में आशियाना थाने में दर्ज किया गया था, जिसमें नाबालिग के साथ शारीरिक दुर्व्यवहार, मारपीट और अमर्यादित हरकतों का आरोप था। पीड़िता और उसके परिजनों की शिकायत पर मुकदमा दर्ज हुआ था, जिसमें आरोपियों पर भारतीय दंड संहिता की धारा 323, 325, 504, 354(क) और पाक्सो एक्ट की धारा 7/8 के तहत आरोप लगे थे।अदालत ने सुनवाई पूरी करने के बाद पांचों आरोपियों – इन्दू कुमार गिदार उर्फ इन्द्रजीत उर्फ परम, इमरान, विक्रम कश्यप उर्फ विक्की, अनुज श्रीवास्तव उर्फ अंशू और अंकित श्रीवास्तव को दोषी करार देते हुए कठोर सजा सुनाई। सभी अभियुक्तों को पाक्सो एक्ट की धारा 7/8 के अंतर्गत तीन वर्ष का कठोर कारावास और 5000 रुपए का अर्थदंड, धारा 325 में तीन वर्ष का कठोर कारावास और 5000 रुपए का जुर्माना, धारा 323 में एक वर्ष का कारावास और 1000 रुपए, तथा धारा 504 में भी एक वर्ष का कठोर कारावास और 1000 रुपए का जुर्माना भुगतना होगा।इस मामले में लखनऊ पुलिस कमिश्नरेट और अभियोजन शाखा की संयुक्त पैरवी ने निर्णायक भूमिका निभाई। पुलिस आयुक्त अमरेन्द्र कुमार सेंगर और संयुक्त पुलिस आयुक्त अपराध एवं मुख्यालय अमित वर्मा के निर्देशन में, पुलिस उपायुक्त (मध्य) लखनऊ की निगरानी में यह कार्रवाई प्रभावी ढंग से पूरी की गई। प्रभारी निरीक्षक आशियाना छत्रपाल सिंह और थाने के पैरोकार कांस्टेबल ज्योतपाल ने मुकदमे की विवेचना, दस्तावेजी साक्ष्य और गवाहों की उपस्थिति के माध्यम से मामले को मजबूत किया, जिससे अभियुक्तों को सजा दिलाई जा सकी। ‘ऑपरेशन कन्विक्शन’ का उद्देश्य गंभीर अपराधों में समयबद्ध और कठोर न्याय सुनिश्चित करना है। यह फैसला न केवल पीड़िता को न्याय दिलाने का प्रतीक है, बल्कि समाज के लिए एक स्पष्ट संदेश है कि नाबालिगों के साथ किसी भी प्रकार का अपराध करने वालों को बख्शा नहीं जाएगा।

थर्ड पार्टी निरीक्षण में तेजी लाने के उप मुख्यमंत्री के निर्देश, 9 जुलाई को मेरठ में वृक्षारोपण कार्यक्रम में होंगे शामिल

आर्यावर्त क्रांति ब्यूरो

लखनऊ। उत्तर प्रदेश के उप मुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्य ने राज्य में खाद्य प्रसंस्करण आधारित उद्योगों को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से 'उत्तर प्रदेश खाद्य प्रसंस्करण उद्योग नीति-2023' के अंतर्गत अनुमोदित परियोजनाओं के थर्ड पार्टी निरीक्षण कार्य में तेजी लाने के निर्देश दिए हैं। उन्होंने संबंधित विभागों से प्राप्त परियोजना प्रस्तावों पर समयबद्ध कार्रवाई सुनिश्चित करने, स्थापित इकाइयों को मिलने वाली सब्सिडी के मामलों की लगातार समीक्षा करने और प्रधानमंत्री सूक्ष्म खाद्य उद्योग उन्नयन योजना के प्रभावी क्रियान्वयन पर विशेष ध्यान देने को कहा है।उप मुख्यमंत्री ने कहा कि खाद्य प्रसंस्करण आधारित उद्योगों के माध्यम से प्रदेश में अधिक से अधिक पूंजी निवेश लाया जाना है। इसी क्रम में विभिन्न थर्ड पार्टी निरीक्षण एजेंसियों को जनपदवार अनुमोदित परियोजनाओं की सूची तथा लेटर ऑफ कम्फर्ट प्रेषित कर दिए गए हैं, ताकि संबंधित इकाइयों के प्रमोटरों से संपर्क कर स्थलीय सर्वेक्षण एवं सत्यापन का कार्य शीघ्रता से पूरा किया जा सके। निरीक्षण रिपोर्ट निर्धारित प्रारूप में स्पष्ट संस्तुति सहित हार्ड कॉपी में निदेशालय, उद्यान एवं खाद्य प्रसंस्करण, लखनऊ को उपलब्ध कराई जाएगी ताकि अगली कार्रवाई की जा सके।इस कार्य के लिए चयनित थर्ड पार्टी निरीक्षण एजेंसियों में राज्य के प्रमुख विश्वविद्यालय, तकनीकी संस्थान और शोध संस्थान शामिल हैं। इन संस्थानों के विशेषज्ञों और विद्यार्थियों की मदद से इकाइयों का निरीक्षण किया जाएगा। इसका उद्देश्य विद्यार्थियों में उद्यमशीलता के भाव को जागृत करना भी है, जिससे वे भविष्य में स्वयं को उद्यमी के रूप में स्थापित कर सकें।अपर मुख्य सचिव उद्यान, खाद्य प्रसंस्करण एवं रेशम विभाग बी.एल. मीना ने बताया कि खाद्य प्रसंस्करण नीति-2023 के तहत अब तक राज्य स्तरीय सशक्त समिति द्वारा 104 परियोजनाओं को अनुमोदन प्रदान किया जा चुका है। विभागीय निदेशक को समस्त निरीक्षण कार्यों की प्रभावी अनुश्रवण के निर्देश दिए गए हैं। साथ ही समस्त इन्वेस्टर्स से यह अपेक्षा की गई है कि वे अपनी इकाइयों के संबंध में नामित थर्ड पार्टी एजेंसियों से तत्काल संपर्क कर निरीक्षण का कार्य नियमानुसार पूर्ण कराएं।इस बीच उप मुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्य 09 जुलाई को प्रातः 11 बजे मेरठ स्थित सरदार वल्लभभाई पटेल कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय में आयोजित 'एक पेड़ मां के नाम' वृक्षारोपण कार्यक्रम में प्रतिभाग करेंगे। कार्यक्रम के पश्चात वे प्रेस प्रतिनिधियों से बातचीत करेंगे तथा सर्किट हाउस मेरठ में जनप्रतिनिधियों एवं पार्टी कार्यकर्ताओं के साथ संवाद भी करेंगे।

परीक्षा केंद्रों पर खड़ी स्कूटी की डिग्गी को बनाते थे निशाना, लखनऊ पुलिस ने पर्दाफाश किया शातिर गिरोह—तीन गिरफ्तार

आर्यावर्त क्रांति ब्यूरो

लखनऊ। पुलिस कमिश्नरेट लखनऊ की थाना कृष्णानगर पुलिस ने परीक्षा केंद्रों के बाहर खड़े दोपहिया वाहनों से चोरी करने वाले एक सक्रिय गिरोह का पर्दाफाश करते हुए तीन शातिर चोरों को गिरफ्तार किया है। यह गिरोह बीते कई दिनों से राजधानी के विभिन्न परीक्षा केंद्रों के बाहर सक्रिय था और खासतौर पर उन परीक्षार्थियों को निशाना बना रहा था, जो परीक्षा देने के दौरान अपनी स्कूटी या बाइक की डिग्गी में मोबाइल, ज्वैलरी और जरूरी दस्तावेज रखकर केंद्र के अंदर चले जाते थे।गिरफ्तार किए गए अभियुक्तों में सैयद सैफ निवासी टिकैत राम तालाब, मंयक सोनकर निवासी अमीनाबाद और रुपेश यादव निवासी राजाजीपुरम शामिल हैं। तीनों अभियुक्तों को सोमवार को संगम विहार कॉलोनी के अंडरपास के पास से गिरफ्तार किया

गया। पुलिस ने इनके कब्जे से चोरी गए मोबाइल फोन, आभूषण, पहचान पत्र, डेबिट कार्ड, एक स्कूटी और नकद राशि बरामद की है।इस गिरोह का पर्दाफाश उस वक्त हुआ जब दो अलग-अलग पीड़ितों की शिकायतें पुलिस तक पहुंचीं। पहली शिकायत एक महिला परीक्षार्थी प्रियंका शुक्ला ने दर्ज कराई थी, जिन्होंने 9 जून को कृष्णानगर स्थित परीक्षा केंद्र के बाहर खड़ी अपनी स्कूटी से ज्वैलरी और अन्य सामान चोरी होने की बात कही थी। उन्होंने बताया कि जब उन्होंने मौके पर मौजूद लोगों से सवाल किया, तो आरोपितों ने उनसे अभद्र व्यवहार करते हुए धक्का-मुक्की की और भाग निकले।दूसरी शिकायत 7 जुलाई को अमेठी निवासी मोहम्मद वैश की तरफ से दी गई, जिन्होंने बताया कि 4 जुलाई को उनका मोबाइल फोन, दो बैंक एटीएम कार्ड और सिम कार्ड चोरी कर लिए गए। इसके बाद आरोपितों ने उनके बैंक खातों से करीब 1.30 लाख रुपये निकाल लिए। यह वारदात भी कृष्णानगर क्षेत्र के एक परीक्षा केंद्र के बाहर हुई थी। इन गंभीर घटनाओं के बाद थाना कृष्णानगर पुलिस ने त्वरित कार्रवाई करते हुए चार टीमों का गठन किया, जिन्होंने सीसीटीवी फुटेज और तकनीकी विश्लेषण के आधार पर तीनों अभियुक्तों को गिरफ्तार किया।गिरफ्तार अभियुक्तों से हुई पूछताछ में कई अहम जानकारियां सामने आईं। मुख्य अभियुक्त सैयद सैफ ने स्वीकार किया कि वे परीक्षा केंद्रों के बाहर खड़े वाहनों को पहचानते थे और जैसे ही परीक्षार्थी केंद्र के अंदर जाते, उनके वाहन की डिग्गी से मोबाइल, अंगूठी, चैन, और अन्य सामान निकाल लेते थे। सैफ ने यह भी स्वीकार किया कि चोरी किए गए सामान में से कुछ को उन्होंने बेच दिया और प्राप्त पैसे आपस में बांट लिए। उन्होंने यह भी खुलासा किया कि उन्होंने चोरी के डेबिट कार्ड और सिम कार्ड की मदद से ऑनलाइन खरीदारी भी की, जिसमें उनके एक साथी की मदद ली गई।इस गिरोह के पास से जो स्कूटी बरामद हुई है, वह भी चोरी की निकली। पूछताछ में आरोपितों ने बताया कि उक्त स्कूटी को कुछ दिन पहले फीनिक्स मॉल के पास से चोरी किया गया था और उसका उपयोग चोरी का माल लाने-ले जाने में किया जा रहा था। बरामद सामान में तीन मोबाइल फोन, एक चैन, एक जोड़ी टॉप्स, पैन कार्ड, वोटर आईडी, दो डेबिट कार्ड, और ₹730 नकद शामिल हैं।मुख्य अभियुक्त सैयद सैफ का आपराधिक इतिहास बेहद गंभीर है। उसके खिलाफ लखनऊ, बाराबंकी और प्रयागराज के विभिन्न थानों में कुल दस से अधिक मुकदमे दर्ज हैं।

पूर्व सांसद आनन्द सिंह के निधन पर प्रमोद तिवारी ने जताया शोक, कहा—जनसेवा के आदर्श स्तंभ थे 'आनन्द भाई'

लखनऊ। राज्यसभा में उपनेता एवं वरिष्ठ कांग्रेस नेता प्रमोद तिवारी ने उत्तर प्रदेश के पूर्व सांसद एवं पूर्व मंत्री आनन्द सिंह के आकस्मिक निधन पर गहरा शोक व्यक्त किया है। उन्होंने कहा कि यह समाचार अत्यंत पीड़ादायक और मन को व्यथित करने वाला है। आनन्द सिंह न केवल एक पुराने राजनेता थे, बल्कि उनके अपने जीवन में सादगी, समर्पण और जनसेवा की जो भावना रही, वह आने वाली पीढ़ियों के लिए प्रेरणास्रोत बनी रहेगी।प्रमोद तिवारी ने श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कहा, ‘आनन्द भाई मेरे केवल मित्र ही नहीं, बल्कि बड़े भाई जैसे थे। उन्होंने हमेशा मुझ पर बड़े भाई की तरह स्नेह और मार्गदर्शन बनाए रखा।’ उन्होंने कहा कि श्री आनन्द सिंह का राजनीतिक जीवन सच्चे अर्थों में जनपक्षधर रहा।

बारिश न होने से किसानों की धान की रोपाई में हो रही देरी

निजी संसाधनों से खेतों में पानी भरने को मजबूर किसान

आर्यावर्त क्रांति ब्यूरो

गोसाईगंज, लखनऊ। किसान बरसात के मौसम का बेसब्री से इंतजार करते हैं। वह इस आस में रहते हैं कि अब जमकर बारिश होगी और हम अपने खेतों में धान की रोपाई करेंगे। शायद इस बार इंद्रदेव गोसाईंगंज क्षेत्र के किसानों से रूठ गए हैं। अभी तक क्षेत्र में तीन-चार बार हल्की-फुल्की बारिष हुई उसके बाद सिर्फ बादल ही दिखाई पड़ रहे हैं। धान की रोपाई का समय है। पौध तैयार है। कुछ किसान अपने निजी संसाधनों से खेतों में पानी भर कर धान की रोपाई करा रहे हैं, लेकिन जिन किसानों के पास संसाधन नहीं है वे बेचारे आसमान की तरफ देख रहे हैं कि कब बारिश होगी। बारिश न होने की वजह से किसानों की चिंताएं बढ़ती जा रही हैं। धान की रोपाई के

लिए निजी साधनों से खेतों में पानी भरकर धान की रोपाई करना बहुत ही मुश्किल है।

क्या बोले क्षेत्रीय किसान

किसान राहुल ने बताया कि श्रावण मास लगने वाला है। इस मौसम में जमकर बारिश होती है। किसान धान की रोपाई आराम से कर लेते हैं, लेकिन अबकी बार समय से बारिश नहीं हो रही, जिससे सभी किसानों को काफी दिक्कतों का सामना करना पड़ रहा है। लोग अपने निजी साधन से खेतों में पानी भर कर लगाने को मजबूर हैं, जिससे एक बीघा खेत में लगभग 6-7 घंटे लगते हैं और ईंधन भी बहुत महंगा है। धान की रोपाई के लिए खेतों में अधिक पानी की जरूरत पड़ती है। उन्होंने बताया कि हमारे क्षेत्र में नहर का भी कोई साधन नहीं है।

किसान बाल गोविन्द ने बताया कि बारिश नहीं हो रही, जो लोग निजी साधनों से धान की रोपाई कर चुके हैं उनकी फसल सूखने की कगार पर है। अभी 80 प्रतिषत किसानों के खेतों में धान की रोपाई बाकी है। कुछ किसान अपने निजी साधनों से धान की रोपाई करने को मजबूर हैं। अक्सर गर्मियों के मौसम में जल स्तर काफी घट जाता है जिसकी वजह से पंपसेट इंजन पर्याप्त मात्रा में पानी नहीं दे रहे हैं, समय बहुत अधिक लग रहा है।

किसान मंगल प्रसाद के अनुसार, तेज धूप के चलते रोपाई के लिए मजदूर भी नहीं मिल रहे हैं, जो मिलते हैं वो मनमानी मजदूरी लेते हैं। हम किसानों के पास इतने पैसे भी नहीं हैं कि मनमानी मजदूरी दें सकें।

क्षेत्र के दर्जनों गांवों की धान की रोपाई प्रभावित

सिकन्दरपुर अमोलिया, पुरवा, माई जी का पुरवा, बीरमपुर, पहाड़ नगर, कुंवर बहादुर खेड़ा, रकीबाबाद जैसे दर्जनों गांवों की धान की रोपाई प्रभावित हो रही है वहीं जो किसान किसी तरह से रोपाई करा चुके हैं उनकी फसल सूखने की कगार पर है।

कमरे में घुस कर लैपटॉप व मोबाइल चोरी

लखनऊ। सुशान्त गोल्फ सिटी इलाके में अज्ञात चोरों ने घर के अंदर सो रहे व्यक्ति के कमरे से मोबाइल फोन एवं लैपटॉप चोरी कर लिया। पीड़ति को जब घटना की जानकारी हुई तो सुशान्त गोल्फ सिटी थाने पहुंचकर मुकदमा दर्ज कराया।

पीड़ति सौरव सिंह, निवासी हाउस नंबर 30, दुर्गा विहार कॉलोनी, औरंगाबाद, मथुरा, ने बताया कि वह बीते 30 जून, सुबह लगभग 5:00 बजे, मेरी मोबाइल फोन एवं कंपनी द्वारा प्रदत्त लैपटॉप की चोरी हो गया। यह घटना विहान हॉस्टल, गोकुल विहार कॉलोनी, लॉ कॉलेज रोड,अहिमामऊ में हुई, जहाँ उस समय निवास कर रहा था। जब मैं सो रहा था, कोई अज्ञात चोर कमरे में घुसकर मेरा लैपटॉप बैग चुरा ले गए। पुलिस ने पीड़ति की तहरीर पर मुकदमा घटना के चार दिन बाद दर्ज किया।

कार को बचाने में पैट्रोल से भरा टैंकर पलटा

आर्यावर्त क्रांति ब्यूरो

लखनऊ। सुशांत गोल्फ सिटी थाना क्षेत्र में शहीद पथ पर दिल्ली पब्लिक स्कूल के निकट सोमवार देर रात एक इंडियन ऑयल कंपनी का पेट्रोलियम पदार्थ से भरा टैंकर कार को बचाने के चक्कर में सड़क से बेकाबू होकर सेफ्टी रेलिंग को तोड़ते हुए नाले में पलट गया।

हादसे में टैंकर चालक को कोई चोट नहीं आई है। सूचना मिलते ही स्थानीय पुलिस और फायर ब्रिगेड की टीम मौके पर पहुंच गई। टैंकर को क्रेन की मदद से नाले से बाहर निकालना पड़ा। टैंकर चालक कुलदीप निवासी बाराबंकी ने बताया कि वह टैंकर लेकर अयोध्या जा रहा था तभी शहीद पथ पर एक कार ओवर टेक करने आगे आ गई जिसे बचाने के चक्कर मे टैंकर बेकाबू होकर पलट गया।

एसआरएम बिजनेस स्कूल ने लॉन्च किया एडवांस्ड जनरल मैनेजमेंट प्रोग्राम, लखनऊ में आईआईएम के बाद दूसरा ऐसा संस्थान बना

आर्यावर्त क्रांति ब्यूरो

लखनऊ। शहर के प्रमुख शैक्षणिक संस्थान एसआरएम बिजनेस स्कूल, बीकेटी ने अपने दो वर्षीय पोस्ट ग्रेजुएट एडवांस्ड जनरल मैनेजमेंट प्रोग्राम (एजीएमपी) की शुरुआत की घोषणा की है। इस प्रोग्राम के साथ एसआरएम बिजनेस स्कूल, लखनऊ में आईआईएम लखनऊ के बाद दूसरा ऐसा संस्थान बन गया है जो इतने व्यापक और रणनीतिक स्तर का एजीएमपी प्रोग्राम प्रदान करता है। यह कदम एसआरएम की प्रबंधन शिक्षा में गुणवत्ता और नवाचार के प्रति प्रतिबद्धता को दर्शाता है।यह प्रोग्राम वैश्विक व्यापार के परिप्रेक्ष्य और समकालीन व्यावसायिक चुनौतियों को ध्यान में रखकर तैयार किया गया है। इसमें कोर मैनेजमेंट फंक्शंस के साथ आधुनिक तकनीकों का समन्वय है, जिससे छात्र नेतृत्व और रणनीतिक निर्णय लेने की क्षमता विकसित कर सकें। केस स्टडी आधारित पेडागॉजी, स्मार्ट क्लासरूम और अनुभवात्मक

शिक्षण विधियों पर आधारित यह कोर्स सैद्धांतिक ज्ञान के साथ व्यावहारिक प्रशिक्षण का बेहतर संयोजन प्रदान करता है।एजीएमपी उन छात्रों के लिए उपयुक्त है जो मैनेजमेंट और बिजनेस के क्षेत्र में एक सशक्त और सफल करियर बनाना चाहते हैं। यह प्रोग्राम टॉप-डाउन लर्निंग अप्रोच अपनाता है, जिससे छात्रों को व्यापक व्यावसायिक समझ प्राप्त होती है। साथ ही इसमें तकनीक-सक्षम शिक्षण, इंटरएक्टिव मॉड्यूल और कैंपस में सहभागिता के जरिए नेटवर्किंग व मेंटरशिप के अवसर भी मिलते हैं।एसआरएम बिजनेस स्कूल के वाइस चेयरमैन पीयूष सिंह चौहान ने प्रोग्राम लॉन्च के मौके पर कहा कि यह कोर्स न केवल छात्रों को वैश्विक प्रतिस्पर्धा के लिए तैयार करेगा बल्कि उन्हें नेतृत्व कौशल और रणनीतिक सोच में भी सक्षम बनाएगा। उन्होंने यह भी बताया कि प्रोग्राम के अंतर्गत फाइनेंस, मार्केटिंग, एचआर, एनालिटिक्स जैसे क्षेत्रों में कौशल विकास कार्यशालाएं, गेस्ट लेक्चर, इंटर्नशिप और प्लेसमेंट समर्थन उपलब्ध होगा।एसआरएम का यह नया प्रबंधन कार्यक्रम लखनऊ को शिक्षा के क्षेत्र में एक नया मुकाम दिलाने की दिशा में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा।

नेताजी मुलायम सिंह यादव स्मारक निर्माण के लिए बच्चों सहित जनता में बढ़ा सहयोग का उत्साह

लखनऊ। समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं पूर्व मुख्यमंत्री अखिलेश यादव द्वारा नेताजी श्री मुलायम सिंह यादव के स्मारक निर्माण के लिए जनता से सहयोग की अपील के बाद पार्टी कार्यकर्ताओं और नेताओं के साथ-साथ बच्चे भी इस नेक पहल में आगे आ रहे हैं। इस बात से साफ जाहिर होता है कि लोगों के दिलों में नेताजी के प्रति गहरा लगाव और सम्मान है।आज समाजवादी पार्टी के राज्य मुख्यालय, लखनऊ में गोरखपुर से आई कक्षा तीन की आठ वर्षीय बालिका रश्मिका यादव और कक्षा छह के ग्यारह वर्षीय बालक राजेश यादव ‘विक्की’ ने अपने गुल्लकों की पूरी बचत समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं पूर्व मुख्यमंत्री श्री अखिलेश यादव को समर्पित की। इन बच्चों के साथ उनकी मां शौर्य यादव भी मौजूद थीं। अखिलेश यादव ने बच्चों की इस भावनात्मक सहभागिता की खुले दिल से सराहना की।

योगी सरकार के स्कूल विलय फैसले का आम आदमी पार्टी ने कड़ा विरोध, बच्चों के भविष्य पर उठाए गंभीर सवाल

आर्यावर्त संवाददाता

लखनऊ। आम आदमी पार्टी ने योगी सरकार द्वारा प्राथमिक विद्यालयों के विलय और बंद करने की नीति का कड़ा विरोध किया है। अयोध्या प्रांत अध्यक्ष विनय पटेल ने राजधानी लखनऊ के बख्शी का तालाब विधानसभा क्षेत्र के पालपुर गांव में बंद पड़े प्राथमिक विद्यालय का वीडियो जारी करते हुए बताया कि यह सरकार आज़ादी के बाद पहली ऐसी है जिसने स्कूलों को बंद करके मासूम बच्चों के भविष्य को खतरे में डालना शुरू कर दिया है।उन्होंने कहा कि बाबू भीमराव आंबेडकर ने कहा था कि शिक्षा शेरनी का ऐसा दूध है, जिसे जितना पीओगे उतना दहाड़ेगा, लेकिन योगी सरकार ने ऐसा काम किया है कि गरीब बच्चों को पढ़ाई से दूर रखा जा रहा है। इस प्राथमिक विद्यालय में पढ़ने वाले अधिकांश बच्चे गरीब, दलित और पिछड़ी जाति से हैं, जिनके लिए अब स्कूल के गेट बंद कर दिए गए हैं। विनय पटेल ने सवाल उठाया कि आखिर

योगी सरकार पिछड़े समाज के बच्चों को शिक्षा क्यों नहीं देना चाहती। उनका कहना है कि भाजपा सरकार नहीं चाहती कि दलित, शोषित और पिछड़ी जाति के बच्चे शिक्षा प्राप्त कर सकें।उन्होंने कहा कि स्कूलों के विलय के पीछे सरकार की जो बात गुणवत्ता सुधार की कही गई है, वह केवल दिखावा है। पालपुर गांव के स्कूल के बच्चे पांच दिन से पढ़ाई से वंचित हैं और उन्हें यह भी पता नहीं कि अब उन्हें पढ़ाई के लिए कहां जाना होगा। बच्चों की पढ़ाई पिछले एक सप्ताह से बंद है और वे अनिश्चितता में हैं कि कब फिर से स्कूल जाएंगे। अभिभावकों का कहना है कि अब बच्चों को दो से तीन किलोमीटर पैदल चलकर नए स्कूल जाना होगा, जो छोटे बच्चों के लिए बहुत मुश्किल है। उनके पास इतने साधन भी नहीं हैं कि वे बच्चों को स्कूल पहुंचा सकें।विनय पटेल ने आरटीई एक्ट का हवाला देते हुए बताया कि देश के हर बच्चे को अपने घर से एक किलोमीटर के दायरे में स्कूल उपलब्ध कराया जाना चाहिए, लेकिन सरकार इस संवैधानिक प्रावधान को दरकिनार कर स्कूलों का विलय कर रही है। आम आदमी पार्टी ने स्पष्ट किया है कि वह हर हाल में बच्चों का हक दिलाने के लिए संघर्ष करेगी।उन्होंने सरकार से मांग की है कि स्कूल विलय नीति को तत्काल प्रभाव से वापस लिया जाए, हर गांव में संविधान और आरटीई एक्ट के तहत स्कूल की गारंटी दी जाए, और शिक्षा के निजीकरण तथा केंद्रीकरण के बजाय जन-भागीदारी को बढ़ावा दिया जाए।

न्यायालय में निर्णायक मोड़ लेता श्रीकृष्ण जन्मभूमि मसला

मथुरा में श्रीकृष्ण जन्मभूमि और शाही ईदगाह मस्जिद को लेकर चल रही कानूनी लड़ाई में, इलाहाबाद उच्च न्यायालय ने शुक्रवार को श्री कृष्ण जन्मभूमि परिसर में स्थित शाही ईदगाह मस्जिद को 'विवादित संरचना' घोषित करने की हिंदू पक्ष की याचिका को खारिज कर दिया। याचिका में अदालती रिकॉर्ड और आगे की सभी कार्यवाहियों में मस्जिद को आधिकारिक रूप से विवादित स्थल के रूप में दर्ज करने की मांग की गई थी। अदालत ने मौखिक रूप से याचिका खारिज करते हुए कहा कि इस संबंध में हिंदू पक्ष द्वारा दायर आवेदन को "इस चरण में" खारिज किया जा रहा है। इस फैसले को लंबे समय से चली आ रही कानूनी लड़ाई में मुस्लिम पक्षकार भले ही राहतकारी माने, लेकिन न्यायिक दृष्टिकोण और सांस्कृतिक अस्मिता के संघर्ष में श्रीकृष्ण जन्मभूमि और शाही ईदगाह भूमि विवाद पर जो भी फैसला अंतिम रूप से आएगा, वह बहुत प्रभावी होगा, न्यायसंगत होगा। अतः ऐसे किसी पुख्ता फैसले तक पहुंचते हुए पूरी सावधानी एवं धैर्य से आगे बढ़ना चाहिए। इस फैसले से इस विवाद में एक नया रुख सामने आया है, जो महत्वपूर्ण और विचारणीय है।

याचिका में यह मांग की 'शाही ईदगाह मस्जिद' शब्द की जगह 'विवादित ढांचा' शब्द का इस्तेमाल किया जाए, अगर यह शाब्दिक बदलाव किया जाता, तो एक तरह से यह इस विवाद पर निर्णायक फैसले जैसा होता। जिससे अनावश्यक विवाद या अड़चन की संभावनाएं पनपती। यह विवाद राजनीति मोड़ भी ले सकता था, निश्चित ही अगर राजनीति होगी, तो अंतिम फैसले में अनावश्यक रूप से समय लगेगा। साथ ही, अशांति की आशंका भी बढ़ेगी। इसलिये अदालत के फैसले को सकारात्मक नजरिये से देखा जाना चाहिए। नए नामकरण की यह कोशिश उच्च न्यायालय में अगर नाकाम हुई है, तो कोई अचरज नहीं, ना ही किसी पक्ष की जीत और किसी पक्ष की हार है। इतने संवेदनशील मसले में यह नामकरण पूरे मुकदमे को प्रभावित करता, अतः अदालत ने समझदारीपूर्ण सही फैसला किया है। 'श्रीकृष्ण जन्मभूमि' का स्थान न केवल करोड़ों हिंदुओं की आस्था का केंद्र है, बल्कि भारतीय संस्कृति और इतिहास का अमिट प्रतीक भी है। परंतु, इसी पवित्र स्थल पर स्थित शाही ईदगाह मस्जिद के साथ एक लंबे समय से विवाद चला आ रहा है जो अब न्यायालय की चौखट पर निर्णायक मोड़ लेता दिखाई दे रहा है।

जन्मभूमि पक्ष के याचिकाकर्ताओं का यह दावा है कि शाही ईदगाह मस्जिद भगवान श्रीकृष्ण के जन्मस्थान पर स्थित है, अतः जन्मभूमि पक्ष को भूमि पर कब्जा दिया जाए। मस्जिद के ढांचे को हटाया जाए, मूल मंदिर का निर्माण हो, वहां मुस्लिम मजहबी गतिविधियों पर रोक लगाई जाए। इन्हीं मांगों के साथ जन्मभूमि पक्ष की ओर से करीब 18 मुकदमे दायर हैं। इनकी सुनवाई यथावत जारी रहेगी। नामकरण संबंधी आवेदन के खारिज होने का कोई असर मूल मुकदमों पर नहीं पड़ेगा। अब दोनों ही पक्षों को पूरे संयम का परिचय देना चाहिए। अदालत का ताजा रुख न किसी के लिए बड़ी हार है और न किसी के लिए बड़ी जीत। महत्वपूर्ण बात यह है कि जन्मभूमि के पक्ष में दायर याचिकाओं को अदालत ने सुनने लायक माना है। पहले इन याचिकाओं को ईदगाह पक्ष ने चुनौती दी थी, पर अदालत ने चुनौतियों को खारिज कर दिया था। पिछले वर्ष 1 अगस्त को उच्च न्यायालय ने वक्फ अधिनियम, पूजा स्थल अधिनियम, 1991 और अन्य कानूनों के आधार पर ईदगाह पक्ष की आपत्तियों को खारिज करते हुए जन्मभूमि पक्ष द्वारा दायर याचिकाओं को सुनवाई योग्य माना था। अब जब सुनवाई आगे बढ़ गई है, तब ऐसी सावधानी के साथ आगे बढ़ना चाहिए कि श्रीकृष्ण जन्मभूमि मुस्लिम कब्जे से मुक्त हो और वहां मन्दिर के निर्माण का स्वप्न आकार ले।

हिंदू याचिकाकर्ताओं ने तर्क दिया कि मस्जिद की दीवारों पर हिंदू देवी-देवताओं के प्रतीक और रूपांकन अभी भी दिखाई देते हैं। उन्होंने आगे तर्क दिया कि केवल अवैध रूप से भूमि पर कब्जा करने से स्वामित्व स्थापित नहीं होता है और उन्होंने अयोध्या विवाद के साथ समानताएं बताईं। अब जब नामकरण या नाम परिवर्तन की कोशिशों पर अदालत ने अपना रुख स्पष्ट कर दिया है, तब जन्मभूमि पक्ष को छोटे-छोटे फैसले कराने की कोशिश करने के बजाय बड़े फैसले तक पहुंचने की तैयारी एवं जल्दी दिखानी चाहिए, यह विवाद जितनी जल्दी सुलझ जाए, उतना अच्छा है। श्रीराम मन्दिर-अयोध्या की तरह श्रीकृष्ण जन्मभूमि को मुक्त कराकर वहां भव्य मन्दिर निर्माण की ओर सारा ध्यान केन्द्रित करना चाहिए। देर भले ही लगे लेकिन अदालत का फैसला श्रीकृष्ण जन्मभूमि के पक्ष में आना है, क्योंकि इस विवाद में जन्मभूमि पक्ष में पर्याप्त दस्तावेज या सुबूत मौजूद हैं, जिनका अदालत में परीक्षण होना है। निस्संदेह, पूरे परीक्षण और विचार के बाद ही कोई फैसला आएगा। लेकिन इस फैसले की दिशाएं मथुरा को पुराणों, महाकाव्यों और ऐतिहासिक अभिलेखों में भगवान श्रीकृष्ण की जन्मस्थली के रूप में वर्णित उद्धरणों एवं साक्ष्यों से स्पष्ट है।

विनाश को विस्तार देते युद्ध!

तीन दिन के युद्ध के बाद, गंभीर चर्चा व समीक्षा की हर संभावना को खत्म करते हुए प्रधानमंत्री ने संसदीय विपक्ष की आवाजों को चुन-चुन कर विदेश-यात्रा पर भेज दिया।

कुमार प्रशांत

तीन दिन के युद्ध के बाद, गंभीर चर्चा व समीक्षा की हर संभावना को खत्म करते हुए प्रधानमंत्री ने संसदीय विपक्ष की आवाजों को चुन-चुन कर विदेश-यात्रा पर भेज दिया। कहा कि विश्व मंच पर भारत सरकार का पक्ष अच्छी तरह रखने का राष्ट्रीय कर्तव्य निभाने की चुनौती है, सो आप सब तैयार हो जाएं। आख़िर पाकिस्तान को जवाब देना है न ! आजकल की राजनीतिक शैली में बात कुछ ऐसी बना दी गई है कि देश के बारे में, फौज के बारे में, युद्ध के बारे में, देश की सुरक्षा के बारे में कुछ भी न बोलो, न पूछो, न सोचो! पहलगाम के बाद तमाम विपक्ष ने कह दिया कि हम सरकार के साथ हैं। यह घबराई हुई, जड़विहीन, राजनीतिक दृष्टि से कायर विपक्ष की सोच है। संकट का आसमान रचना और फिर उस आसमान में अपने शिकार करना सरकारों का पुराना हथकंडा है। ऐसे में विपक्ष की एक ही भूमिका होनी चाहिए कि हम हर हाल में देश के साथ खड़े रहेंगे। हमारी इस भूमिका से सरकार को जितनी मदद, जितना समर्थन मिलता है, उससे हमें एतराज़ भी नहीं है, लेकिन सरकार की आंखों से हम देखें, सरकार के कानों से हम सुनें तथा सरकार के पांवों पर हम चलें, यह कैसे हो सकता है? यह तो बौनों का बला का संकट है और इससे घिरा हमारा विपक्ष बौने-से-बौनातर हुआ जा रहा है।

तीन दिन के युद्ध के बाद, गंभीर चर्चा व समीक्षा की हर संभावना को खत्म करते हुए प्रधानमंत्री ने संसदीय विपक्ष की आवाजों को चुन-चुन कर विदेश-यात्रा पर भेज दिया। कहा कि विश्व मंच पर भारत सरकार का पक्ष अच्छी तरह रखने का राष्ट्रीय कर्तव्य निभाने की चुनौती है, सो आप सब तैयार हो जाएं। आख़िर पाकिस्तान को जवाब देना है न ! कहने की देर थी कि सभी तैयार हो गए। किसी ने नहीं कहा कि हमें अपनी पार्टी की सहमति लेनी पड़ेगी ! जब राष्ट्रीय कर्तव्य निभाना हो, तो पार्टी की क्या बात है। पार्टी से राष्ट्र बड़ा होता है कि नहीं ! नतीजे में जहां, जिसे, जैसा मौका मिला, उसने वहां, वैसा सरकार का पक्ष रखा। लौटने पर सबने पाया कि वे तो विदेश से लौट आए हैं, लेकिन उनकी आवाज कहीं विदेश में ही रह गई है। आज हमारे संसदीय विपक्ष के पास न चेहरा है, न आवाज़!

जब विपक्ष के ऐसे हालात हों और सत्तापक्ष के भीतर सत्ता-सुख व अहंकार के अलावा कुछ हो ही नहीं, तो यह सवाल कौन पूछे कि अंगुलियों पर गिने जाने जैसे आतंकवादी हमारी सीमा में घुस आए और उन्होंने हमारे 26 नागरिकों की हत्या कर दी, इतने से सारा देश कैसे खतरे में आ गया? पहलगांव में घुस आए आतंकवादियों व उन नागरिकों की हत्या से देश खतरे में नहीं आया था, बल्कि वह खतरे में इसलिए आया कि आप कश्मीर की सीमा की सुरक्षा में विफल रहे। केंद्र सरकार की सीधी निगरानी में जो कश्मीर है, चोर उसकी दीवार में सेंध लगा लेता है तो यहां खतरा आपका निकम्मापन है। खतरा यहां है कि आप उस आतंकी कार्रवाई का जवाब देने के लिए ऐसा रास्ता अख्तियार करते हैं जो काइंया अंतरराष्ट्रीय शक्तियों को अपना खेल खेलने के लिए उकसाता है।

अलबत्ता, सच भी कहीं-न-कहीं से अपना सर उठा ही लेता है। हमारे वायुसेना प्रमुख एयर मार्शल एपी सिंह और बाद में 'चीफ ऑफ डिफेंस स्टाफ' जनरल अनिल चौहान की बात ऐसी नहीं है कि हम उसे नजरंदाज करें। वे कह रहे हैं कि तीन दिनों का यह युद्ध दोनों तरफ़ को बेहद नुक़सान पहुंचा गया है। पाकिस्तान का नुक़सान ज्यादा हुआ है, लेकिन उसने हमारा जितना नुक़सान किया है, वह स्थिति को ख़तरनाक बनाता है। पाकिस्तान ने हमारे विमान भी गिराए और सैनिक अड्डों को भी नुक़सान पहुंचाया। यह युद्ध रुकना ही चाहिए था, क्योंकि इस युद्ध से हासिल कुछ नहीं हो सकता था। परिस्थिति का यह आकलन व अंतरराष्ट्रीय शक्तियों का दबाव हमें युद्धविराम तक ले आया। हमें यह सच्चाई समझनी चाहिए कि हथियार के व्यापारियों से खरीद-खरीदकर जो जखीरा हम भी और पाकिस्तान भी जमा करता रहता है, वह हर देश को करीब-करीब एक ही धरातल पर ला खड़ा करता है। इसलिए आज की दुनिया में कोई लड़ाई अंतिम तौर पर किसी को जीत नहीं दिलाती, बल्कि विनाश ही आज के युद्ध का सच है। रूस-यूक्रेन का दो बरस से ज्यादा लंबा युद्ध कौन जीत रहा है? दोनों बर्बाद हो रहे हैं। अमेरिका व यूरोप की फौजी मदद से लड़ रहा यूक्रेन और हथियारों का अकूत जखीरा रखने वाला रूस-दोनों का दम फूल रहा है। दोनों का देश बर्बाद हो रहा है। फौजी भी मारे जा रहे हैं, नागरिक भी; शहर-गांव-कस्बे सब मलबों में तब्दील हो रहे हैं। ऐसे में आप जीत-हार की बात क्या पूछेंगे!

पूछने वाला सवाल यही है कि बताइए, कितना विनाश हो चुका है और कितना विनाश करके आप रुकेंगे? इजरायल ने ईरान पर हमला कर किया क्या? या फिर ट्रंप ने वहां अपनी नाक घुसेड़ कर क्या किया? आप सोचिए, अगर ईरान ने अमेरिका पर हमला बोला तो क्या होगा? जीत या हार? नहीं, ऐसा कुछ नहीं होगा। विश्वयुद्ध भी नहीं होगा, वैश्विक विनाश होगा - शायद वैसा, जैसा दुनिया ने अब तक देखा नहीं है। कोई आश्चर्य नहीं कि देश में आज एक ही विपक्ष राहुल गांधी बचा है, लेकिन इस एक आदमी का विपक्ष भी हर कदम पर ठिठकता, भटकता और असमंजस में पड़ा दिखाई देता है। यह इसलिए कि वह हर तरफ़ से अकालग्रस्त है - अकाल संख्या का नहीं, प्रतिभा, प्रतिबद्धता का अकाल है ! किसी भी नेता के लिए निर्णायक भूमिका निभाने या उसकी जिम्मेदारी लेने के लिए कुछ आला सहकर्मियों की ज़रूरत होती है। ऐसे सहकर्मी बने-बनाए नहीं मिलते, बनाने पड़ते हैं। राहुल के पास वे नहीं हैं, क्योंकि अब तक का अनुभव बताता है कि उन्हें ग़लत सहकर्मियों को चुनने में महारत हासिल है।

हिंसा में से वीरता तो पहले ही निकल चुकी है, अब युद्ध में से जीत-हार भी निकल गई है। बची है विशुद्ध हैवानियत- क्रूरता, अश्लीलता और अपरिमित विनाश! कोई राहुल गांधी यदि पूछता है कि बताइए, तीन दिनों के इस युद्ध में हमारा कितना नुक़सान हुआ, कितने विमान गिरे, कितने जवान मरे तो यह देशभक्ति की कमी या अपनी सेना की क्षमता पर भरोसे की कमी जैसी बात नहीं है। यही सवाल है जो पाकिस्तान में भी पूछा जाना चाहिए, इजरायल में भी, यूक्रेन और गाजा व ईरान में भी। आज किसी भी कारण जो जंग का रास्ता चुनते हैं या जबरन किसी को जंग में खींच लाते हैं उन सबके संदर्भ में यही सबसे अहम सवाल है जो आंखों में आंखें डालकर पूछा जाना चाहिए। लेकिन पूछे कौन? जिस विपक्ष की ज़ुबान खो गई है वह पूछे भी तो कैसे?

अजब-गजब

कबाड़ से बना दी करोड़ों की 'लेम्बोर्गिनी', रफ्तार भी है जोरदार!

कभी सोचा है कि अगर आपके पास महंगी स्पोर्ट्स कार खरीदने के पैसे न हों, तो क्या होगा? बिबिन नाम के एक शख्स ने इसका जवाब ढूंढ लिया है. केरल के इस मैकेनिक ने असली लेम्बोर्गिनी का देसी वर्जन तैयार करके इंटरनेट की जनता को हैरान कर दिया है। उनकी यह अद्भुत गाथा अब सोशल मीडिया पर आग की तरह फैल गई है।

बिबिन ने बताया कि अपने इस महत्वाकांक्षी प्रोजेक्ट पर उन्होंने लगभग तीन साल पहले काम शुरू किया था। लेम्बोर्गिनी का 'देसी वर्जन' बनाने के लिए बिबिन ने स्क्रैप मैटेरियल का इस्तेमाल किया है। जी हां, आपने बिल्कुल सही सुना है। उन्होंने पास के एक स्क्रैपयार्ड से कबाड़ के पुर्जे और लोकल हार्डवेयर की दुकानों से अन्य सामान मंगवाए।

सुनने में आपको भले ही अजीब लगे, पर उन्होंने कार की बाहरी बॉडी पर असली लेम्बोर्गिनी जैसा लुक देने के लिए कार्डबोर्ड का भी इस्तेमाल किया है। इसके साथ ही मेटल पाइप और फाइबरग्लास जैसे मैटेरियल का उपयोग करके अपने बजट को भी कंट्रोल में रखा।

एक कंपनी के क्वालिटी एश्योरेंस डिपार्टमेंट में काम करने वाले बिबिन ने बताया कि सीमित धन और समय की कमी के कारण उन्हें थोड़ी-बहुत कठिनाइयों का सामना करना पड़ा, पर उन्होंने हार नहीं मानी। बता दें कि वह लैम्बॉर्गिनी के अपने देसी वर्जन का अब तक 80% काम पूरा कर चुके हैं, और इस पर करीब डेढ़ लाख खर्च किए हैं।

सबसे मजेदार बात तो यह है कि लेम्बोर्गिनी के पहिये बजट से बाहर थे, तो बिबिन ने अपनी शानदार कार में देसी तड़का लगाने का फैसला किया, और मारुति ऑल्टो के पहियों का इस्तेमाल किया। इतना ही नहीं, पहियों के साइज के हिसाब से उन्होंने पूरी कार को फिर से डिजाइन किया।

मैकेनिक की मेहनत और खुद के सपने को पूरा करने का जुनून की सोशल मीडिया यूजर्स जमकर तारीफ कर रहे हैं। यूट्यूबर अरुण स्मोकी ने बिबिन का इंटरव्यू किया, और उनकी कहानी अब सोशल मीडिया के जरिए हजारों लोगों तक पहुंच चुकी है।

एक यूजर ने टिप्पणी की, बिबिन न सिर्फ टैलेंटेड हैं, बल्कि उनका डेडिकेशन भी काबिले तारीफ है। दूसरे यूजर ने कहा, स्क्रैप को एक शानदार आर्ट में बदलने के लिए टैलेंट, पेशेंस और जुनून की जरूरत होती है, और वह सबकुछ आपके अंदर है। आपके जज्बे को सलाम है।

ब्लॉग

अपनी पहचान जाहिर करने में कैसी शर्म !

डॉ. आशीष वशिष्ठ

भगवान शंकर के प्रिय माह सावन की शुरूआत 11 जुलाई से है। सावन की शुरुआत के साथ ही कांवड़ यात्रा का शुभारंभ हो जाएगा। कांवड़ यात्रा में शिवभक्त नंगे पांव हाथ में कांवड़ लेकर लंबी दूरी तय करके शिवलिंग या ज्योतिर्लिंग में जाते हैं और पवित्र नदियों के जल से उनका अभिषेक करते हैं।

उत्तर प्रदेश में बड़े पैमाने पर कांवड़ यात्रा निकालने की परंपरा है। कांवड़ यात्रा का विराट रूप पश्चिमी उत्तर प्रदेश में दिखता है। हरिद्वार से कांवड़ लेकर निकलने वाले कांवड़ यात्री इस मार्ग से निकलते हैं। इस मार्ग में भगवान शिव के कई बड़े प्राचीन एवं प्रसिद्ध मंदिर हैं। यहां पर श्रद्धालु भगवान का जलाभिषेक करते हैं। मुजफ्फरनगर, शामली, मेरठ से लेकर गाजियाबाद, हापुड़ तक के शिव मंदिरों में इस मार्ग से गंगाजल लेकर भक्त कांवड़ यात्रा निकालते हैं। लेकिन कांवड़ यात्रा शुरू होने से पहले ही पश्चिमी उत्तर प्रदेश में कांवड़ यात्रा मार्ग पर तनाव बढ़ गया है।

असल में, मुजफ्फरनगर जिले के बघरा गांव में योग साधना आश्रम के संचालक और सनातन धर्म के प्रचारक स्वामी यशवीर महाराज पिछले कुछ वर्षों से कांवड़ मार्ग पर दुकानों और ढाबों पर नेम प्लेट लगाने की मांग करते रहे हैं। उनका कहना है कि कांवड़ मार्ग पर कुछ लोग हिंदू देवी-देवताओं के नाम पर ढाबे और दुकानें चलाकर शिव भक्तों को धोखा दे रहे हैं। पहचान छुपाकर धोखा देने वाले कई मामले सामने आने के बाद पिछले साल उत्तर प्रदेश और उत्तराखंड सरकारों ने आदेश जारी किए कि कांवड़-यात्रा के मार्ग के ढाबे, होटल, रेस्तरां, दुकानदार, खोमचेवाले स्पष्ट नाम पट्टिका लगाएंगे। सरकार का मंतव्य है कि कांवडियों की आस्था और श्रद्धा खंडित न हो। सुप्रीम कोर्ट ने इस आदेश इस पर रोक लगा दी थी। हालांकि, इस साल भी उप्र और उत्तराखंड की सरकारों ने पिछले साल की भांति आदेश जारी किए हैं।

ताजा प्रकरण यह है कि, स्वामी यशवीर महाराज और हिंदूवादी संगठन के कार्यकर्ता कांवड़ मार्ग स्थित दिल्ली-दून हाईवे स्थित पंडित वैष्णो ढाबा पर पहुंचे। वास्तव में, ढाबा मुस्लिम का था, लेकिन बोर्ड पर लिखा था-'पंडित का शुद्ध वैष्णो ढाबा।' यानी पहचान छिपाने का अपराध किया गया था। पंडित वैष्णो ढाबे को सनव्वर नाम का एक मुस्लिम व्यक्ति चलाता है। इस ढाबे में उसका बेटा आदिल और जुबैर समेत दो अन्य लोग भी काम करते हैं।

कहा जा रहा है कि यशवीर महाराज और अन्य ने ढाबे के मालिक और कर्मचारियों की धार्मिक पहचान जांचने के लिए पैंट उतरवाई। विवाद यहीं से भडक़ा। आग में घी डालते हुए समाजवादी पार्टी के पूर्व सांसद एसटी हसन ने पहचान वाले मामले को पहलगाम आतंकी हमले से जोड़ने का काम किया। हसन ने कहा कि, "मैं पूछना चाहता हूं कि क्या आम नागरिकों को अधिकार है कि वह किसी दुकानदार की पैंट उतरवाकर चेक कर सकते हैं? क्या पहलगाम में आतंकियों ने पैंट नहीं उतरवाई थी? ऐसा करने वाले और पहलगाम के आतंकवादियों में क्या अंतर रह गया?"

उस ढाबे पर यह घटना हुई अथवा नहीं, पुलिस इसकी जांच कर रही है। लेकिन प्रकरण को 'सांप्रदायिक मोड़' दे दिया गया। पहलगाम एक सुनियोजित आतंकी कृत्य था। इन दोनों घटनाओं की तुलना करना न केवल तथ्यात्मक रूप से गलत है, बल्कि यह समाज में धार्मिक आधार पर तनाव पैदा करने का प्रयास भी है।

और जहां तक बात पहचान छुपाने या धोखा देने की है तो यह धंधा लंबे समय से चल रहा है। जुलाई, 2021 में गाजियाबाद में दो ऐसे मुसलमान दुकानदारों का पता चला था, जो हिंदू नाम से दुकान चला रहे थे। इनमें एक दुकान पुरानी सब्जी मंडी में है, जिसका नाम है 'न्यू अग्रवाल पनीर भंडार।' इस दुकान का मालिक है मंजूर अली। दूसरी दुकान 'लालाजी पनीर भंडार' के नाम से है। इसका मालिक ताहिर हुसैन है। इन दोनों का कहना था कि हिंदू नाम रखने से ग्राहक कम पूछताछ करते हैं और धंधा अच्छा चलता है। यानी ये धंधे के लिए हिंदुओं के साथ धोखा कर रहे थे। इनकी पोल तब खुली जब कुछ लोगों को पता चला कि इनका जीएसटी नंबर इनके असली नाम से है। स्थानीय दुकानदारों ने इनका विरोध किया तो इन लोगों ने अपनी दुकानों के नाम बदल लिए हैं।

पिछले साल कांवड़ यात्रा के समय जब नेम प्लेट लगाने के आदेश जारी हुए थे, तो खूब हंगामा मचा था। उस समय सोशल मीडिया से लेकर अखबारों और समाचार चैनलों तक में इस बात की बड़ी चर्चा थी कि कैसे एक आदेश के चलते रातों रात मुजफ्फरनगर का 'संगम शुद्ध शाकाहारी होटल' बन गया 'सलीम ढाबा।' 'मां भवानी जूस कार्नर' का नाम हो गया 'फहीम जूस केंद्र।' 'टी प्वाइंट' का नाम हो गया 'अहमद टी स्टाल।' ऐसे ही 'नीलम स्वीट्स' का मालिक निकला मोहम्मद फजल अहमद। 'अनमोल कोल्ड ड्रिंक्स' का मालिक है मोहम्मद कमर आलम। खतौली के 'चीतल ग्रैंड' के बाहर एक बोर्ड लग गया है, जिस पर लिखा गया है- शारिक राणा डायरेक्टर। सहारनपुर में चल रहे 'जनता वैष्णो ढाबा' का मालिक है मोहम्मद अनस सिद्दीकी। मुजफ्फरनगर के बझेड़ी गांव निवासी वसीम अहमद ने पिछले साल पहचान जाहिर होने के बाद अपना 'गणपति' ढाबा बेच दिया।

एक रिपोर्ट के अनुसार देहरादून-नैनीताल राजमार्ग पर 20 से अधिक ढाबे ऐसे हैं, जो हिन्दू देवी-देवताओं के नाम पर हैं, लेकिन इन्हें चलाने वाले मुसलमान हैं। हरिद्वार नजीबाबाद रोड पर चिडियापुर और समीरपुर गंग नहर रोड पर भी ऐसे हिंदू नामधारी ढाबे हैं, जिनके मालिक मुसलमान हैं। मेरठ, गजरौला, गढ़मुक्तेश्वर, मुंडा पांडे हाईवे पर भी दर्जनों ऐसे ढाबे चल रहे हैं, जिनके मालिक मुसलमान हैं।

मीडिया रिपोर्टस के अनुसार, धोखा देने के लिए ये लोग होटल के अंदर हिंदू देवी-देवताओं के चित्र भी रखते हैं, ताकि हिंदू यात्रियों को लगे कि वे किसी हिंदू होटल में ही खाना खा रहे हैं। लेकिन जब कोई ग्राहक ऑनलाइन पैसा देता है, तब पता चलता है मालिक मुसलमान है। इन ढाबों और होटलों में काम करने वाले लोगों के नाम राजू, विक्की, गुड्डू, सोनू जैसे होते हैं। ये लोग तिलक भी लगाते हैं और कलावा भी बांधते हैं। यह धोखा नहीं तो क्या है? मुजफ्फरनगर के पंडित वैष्णो ढाबे पर काम करने वाले तजमुल ने खुद को गोपाल बताया था। हरिद्वार में गुप्ता चाट भंडार में स्कैनर से पेमेंट गुलफाम नाम के अकाउंट में जाने का मामला बीते दिनों प्रकाश में आया है।

अहम सवाल यह है कि पहचान छुपाकर व्यापार करने के पीछे कोई मज़बूरी है या षडयंत्र? मुस्लिम व्यक्ति को अपने नाम से दुकान या ढाबा खोलने में क्या दिक्कत है? अपने-अपने धर्म के हिसाब से नाम लिखकर लोग दुकान खोलेंगे या व्यापार करेंगे तो ग्राहक अपनी मर्ज़ी से दुकान पर जाएगा और जिसे जहां से जो खरीदना होगा, वो वहां से ख़रीदेगा। लेकिन पहचान छुपाकर व्यापार या कोई अन्य कार्य करना कानून और नैतिक तौर पर गलत और अपराध है। ऐसी घटनाएं और प्रकरण प्रकाश में आने के बाद संदेह और अविश्वास का माहौल बनता है। जो सामाजिक, राजनीतिक और कानून व्यवस्था के मोर्चे पर दिक्कतें पैदा करता है।

बात जब खाने पीने की हो तो मामला गंभीर और संवेदनशील हो जाता है। खानपान के पीछे व्यक्तिगत रूचि, संस्कार, धर्म-कर्म और आस्था की पृष्ठभूमि और भूमिका होती है। इसमें कोई दो राय नहीं है कि शासन-प्रशासन के नेम प्लेट के आदेश से किसी की भावनाएं आहत नहीं होतीं। खाद्य सुरक्षा अधिनियम 2006 में स्पष्ट प्रावधान है कि खानपान के दुकानदारों को अपना फूड लाइसेंस ऐसी जगह लगाना होगा, जहां आसानी से उसे देखा जा सके।

वैसे भी ये मसला हिंदू-मुस्लिम, धार्मिक भेदभाव या किसी की आजीविका की बजाय सीधे तौर भावनाओं और ग्राहक के अधिकार से जुड़ा है। जो करोड़ों की संख्या में कांवड़िए हरिद्वार से गंगा जल लेकर अपने गंतव्य की ओर जाते हैं, उन सबको रास्ते में भोजन कैसा मिले? कैसा भोजन वो खाएं? ये उनकी स्वतंत्रता है। जब मुसलमान हलाल प्रमाणपत्र देखकर ही कोई सामान खरीदता है, तब हिंदू भी ऐसा क्यों नहीं कर सकता है!

मुख्तार अंसारी की कब्जाई जमीन पर रहेंगे गरीब, ईडब्ल्यूएस कोटे के लिए 72 फ्लैट...

आर्यावर्त संवाददाता

लखनऊ। लखनऊ विकास प्राधिकरण (LDA) ने मुख्तार अंसारी और उनके परिवार द्वारा कब्जा की गई जमीन पर 72 फ्लैट्स बनाने का काम पूरा कर लिया है. ये फ्लैट डालीबाग की 2327.54 वर्ग मीटर निष्क्रांत संपत्ति पर तैयार किया गया है। इन फ्लैट्स में कम कमाने वाले लोग (EWS) रहेंगे। ये फ्लैट EWS कोटे के लोगों के लिए बनाए गए हैं।

इनके लिए रजिस्ट्रेशन की प्रक्रिया अगस्त 2025 से शुरू होगी। LDA ने बचे हुए निर्माण कार्य को तेजी से पूरा करने के लिए सभी तैयारियां कर ली हैं। ताकि, पात्र लोगों को जल्द से जल्द ये आवास उपलब्ध कराए जा सकें।

2020 में प्रशासन ने मुख्तार अंसारी और उनके परिवार द्वारा कब्जाई गई इस संपत्ति को मुक्त कराकर अवैध निर्माण को ध्वस्त किया था। 2023 में तत्कालीन LDA उपाध्यक्ष ने जिलाधिकारी को पत्र लिखकर इस निष्क्रांत संपत्ति को LDA को निशुल्क हस्तांतरित करने की मांग की थी।

करोड़ों की लागत से बने फ्लैट

शासन से मंजूरी मिलने के बाद इस जमीन पर निर्माण कार्य शुरू हुआ। हालांकि, इस बीच गाजीपुर प्रशासन और आयकर विभाग ने एक भूखंड पर अपना दावा जताया था, लेकिन शासन के हस्तक्षेप के बाद यह जमीन LDA को सौंप दी गई। LDA के वर्तमान उपाध्यक्ष प्रथमेश कुमार ने अधूरे निर्माण को जल्द पूरा करने के निर्देश दिए।

प्राधिकरण ने बताया कि गोरखपुर की निर्माण कंपनी संगम इंटरप्राइजेज को इसके निर्माण कार्य का ठेका मिला था। फ्लैट्स को बनाने का ये ठेका 3.150 करोड़ रुपये में दिया गया था। प्रत्येक फ्लैट की औसत लागत 4.150 लाख रुपये आई है।

ट्रांसफर होती रही जमीन

आयकर विभाग की जांच में सामने आया कि डालीबाग में यह संपत्ति मुख्तार अंसारी की पत्नी अफशां अंसारी के नाम थी। बाद में मुख्तार ने अपने करीबी गणेश दत्त मिश्रा को इसे बेच दिया। गणेश दत्त ने इसे गाजीपुर निवासी तनवीर सहर के नाम ट्रांसफर किया। इसके अलावा, मुख्तार सिंडीकेट से जुड़े एजाज उर्फ एजाजुल हक की पत्नी फहमीदा अंसारी के नाम 2000 वर्ग मीटर का एक और भूखंड था। साथ ही, एक अन्य भूखंड मुख्तार की मां राबिया बेगम के नाम था, जिसे बाद में उनके बेटों अब्बास और उमर अंसारी के नाम कर दिया गया।

किसे मिलेंगे ये फ्लैट्स?

LDA ने इन 72 फ्लैट्स को EWS वर्ग के लिए सस्ती दरों पर उपलब्ध कराने की योजना बनाई है। प्राधिकरण का कहना है कि पंजीकरण प्रक्रिया पारदर्शी होगी और केवल पात्र लोगों को ही आवास आवंटित किए जाएंगे। उपाध्यक्ष प्रथमेश कुमार ने कहा, हमारा लक्ष्य है कि माफिया के कब्जे से मुक्त कराई गई जमीन का उपयोग समाज के कमजोर वर्गों के कल्याण के लिए हो।

उन्होंने बताया कि अगस्त से रजिस्ट्रेशन शुरू होगा। इसके बाद जल्द ही इन फ्लैट्स का आवंटन शुरू होगा। मुख्तार अंसारी जैसे माफिया के कब्जे से मुक्त कराई गई जमीन पर बने ये आवास न केवल जरूरतमंदों को आश्रय प्रदान करेंगे, बल्कि यह भी दर्शाएंगे कि प्रशासन अवैध कब्जे के खिलाफ कड़ा रुख अपनाने को तैयार है।

नगर पंचायत अध्यक्ष ने उप मुख्यमंत्री से की मुलाकात

आर्यावर्त संवाददाता

निघासन-खीरी। नगर पंचायत निघासन अध्यक्ष बद्री प्रसाद मौर्य ने उप मुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्य से मुलाकात की और नगर पंचायत की प्रमुख समस्याओं पर चर्चा की,इन समस्याओं में जल निकासी के लिए नाला निर्माण और मुक्तिधाम के सौन्दरीकरण शामिल हैं।

उप मुख्यमंत्री ने नगर पंचायत अध्यक्ष को आश्वस्त किया कि हर समस्या का संभव निस्तारण किया जाएगा। इस अवसर पर दयाशंकर मौर्य, विनोद मौर्य, विपिन मौर्य और शिवम गुप्ता भी मौजूद रहे,नगर पंचायत अध्यक्ष की इस पहल से निघासन की समस्याओं के समाधान की उम्मीदें बढ़ गई हैं।

अमरोहा में दर्दनाक हादसा...खड़े ट्रक से टकराई कार, कांस्टेबल और उनकी पत्नी की मौत

आर्यावर्त संवाददाता

अमरोहा। उत्तर प्रदेश के अमरोहा में सोमवार को दिल्ली-लखनऊ राष्ट्रीय राजमार्ग-9 पर हादसा हो गया। यहां एक कार हाईवे किनारे खड़े ट्रक में पीछे से टकरा गई। इस हादसे में एक दंपत्ति की मौके पर ही मौत हो गई, जबकि कार की पिछली सीट पर बैठे उनके दो बेटे गंभीर रूप घायल हों गए। मृतकों की पहचान अमरोहा अभिसूचना विभाग में तैनात कांस्टेबल जव्वाद जैदी और उनकी पत्नी अर्शी के रूप में हुई है।

जो कार ट्रक से टकराई वो जव्वाद जैदी की बताई जा रही है। सुचना मिलने के बाद मौके पर पहुंची पुलिस ने मृतक दंपत्ति के शव को कब्जे में लेकर पोस्मार्टम के लिए भेज दिया, जबकि गंभीर रूप से घायल दोनों बच्चों को बेहतर इलाज के लिए गजरौला सीएचसी से मुरादाबाद रेफर कर दिया। बताया जा रहा है कि हाईवे पर खड़े ट्रक से कार के टकराने के बाद उसके परखच्चे उड़ गए।

ट्रक से कार के टकराने की आवाज थी बहुत तेज

हादसे के दौरान ट्रक से कार के टकराने की आवाज इतनी तेज थी की पांच सो मीटर दूर बैठे लोगों ने उसे सुना। कार में सवार दंपत्ति की दर्दनाक मौत हो गई। मुजफ्फरनगर जिले के थाना खतौली क्षेत्र के गांव गालिबपुर के रहने वाले अमरोहा अभिसूचना विभाग में तैनात मृतक कांस्टेबल जव्वाद जैदी 38 वर्ष के थे। जव्वाद जैदी 3 दिन की छुट्टी बिताने के बाद सोमवार को अमरोहा ड्यूटी पर वापस लोट रहे थे, तभी वो परिवार संग सड़क हादसे का शिकार हो गए।

तीन महीने पहले सिंगर की कार ट्रक से टकराई थी

राष्ट्रीय राजमार्ग -9 पर हाईवे किनारे ठीक इसी तरह खड़ा ट्रक तीन माह पहले सिंगर पवनदिप के साथ हुए सड़क हादसे का कारण भी बना था। हाईवे पर सीओ दफ्तर के नजदीक खड़े ट्रक से सिंगर पवनदीप की कार टकरा गई थी। इस हादसे में पवनदीप और उनके अन्य दो साथी गंभीर रूप से घायल हुए थे, जिनको बेहतर इलाज के लिए पहले मुरादाबाद रेफर किया गया था, लेकिन बाद में हालत नाजुक देख दिल्ली ले जाया गया था।

पति गया दुबई, पत्नी देवर से लगा बैठी दिल, घरवालों ने रात में दोनों को पकड़ा, फिर...

आर्यावर्त संवाददाता

गाजीपुर। पति दुबई कमाने गया, इधर उसकी पत्नी चचेरे देवर से दिल लगा बैठी। जब पति दुबई से वापस आया तो भी पत्नी उसके साथ नहीं रहती थी। अचानक एक रात पत्नी और चचेरा देवर रात इश्क फरमाते पकड़े गए। इसके बाद परिवार वालों, गांव वालों और खुद पति ने पत्नी की शादी उसके चचेरे देवर से करा दी। ये पूरा मामला उत्तर प्रदेश के गाजीपुर के कासिमाबाद तहसील के इंदौर गांव का है।

पति का नाम प्रमोद है। उसकी एक बच्ची भी है। प्रमोद की एक बहन की अभी शादी करनी है। सभी चीजों को और पत्नी और बच्ची के बेहतर भविष्य को ध्यान में रखकर करीब ढाई साल पहले प्रमोद दुबई कमाने चला गया। ढाई सालों तक प्रतिमाह कमाई का पैसा अपनी पत्नी और मां के पास भेजता रहा। सब कुछ ठीक-ठाक चल रहा था।

पत्नी का व्यवहार बदल चुका था

करीब डेढ़ माह पहले प्रमोद दुबई से वापस आया, लेकिन इस दौरान उसकी पत्नी का व्यवहार उसके प्रति काफी बदल चुका था। पत्नी उससे कोई बातचीत नहीं करती थी। प्रमोद जब बातचीत करने का प्रयास करता तो वो अपनी तबीयत खराब होने का बहाना बनाती। लगभग एक सप्ताह पहले प्रमोद, उसकी बेटी और पत्नी अपने कमरे में सोए हुए थे।

सास ने देखी बहू को रासलीला रचाते देखा

इसी दौरान रूम से रात लगभग 12 बजे के आसपास उसकी पत्नी उसके कमरे से निकलकर घर के बाहर चली गई। उसको घर के बाहर निकलते हुए प्रमोद की मां ने देखा। प्रमोद की मां ने देखा कि बहू उनके पट्टीदार के लड़के समीर के साथ रासलीला रचा रही थी। इसके बाद मां ने इसकी जानकारी प्रमोद के साथ ही आसपास के लोगों की दी। फिर दोनों को रंगे हाथों पकड़ लिया गया।

पत्नी ने चचेरे देवर के साथ रहने की बात कही

इसके बाद पंचायत बैठी। पंचायत में भी प्रमोद की पत्नी ने अपने चचेरे देवर समीर के साथ ही रहने की बात कही। फिर उसके परिवार वालों और गांव वालों यहां तक की प्रमोद ने भी अपनी पत्नी की शादी अपने चचेरे भाई समीर से करना ही उचित समझा। दोनों की शादी पास के ही मंदिर में करा दी गई। फिर शादी के करीब चार दिन लोगों के तानों से तंग आकर अचानक महिला पास के ही एक तालाब में जान देने चली गई।

पूर्व पति ने तलाक देने की बात कही

हालांकि लोगों ने उसे देख लिया और समय रहते बचा लिया। इसके बाद एक बार फिर से गांव में पंचायत बैठी। पंचायत में पता चला कि समीर अब महिला को नहीं रखना चाहता था, लेकिन पंचायत ने दोनों को एक साथ रहने का फरमान सुना दिया। इस दौरान पूर्व पति प्रमोद ने भी अपनी पत्नी को कानूनी रूप से तलाक देने की बात पंचायत में कही।

इसके बाद समीर और महिला एक साथ रहने को तैयार हुए। महिला अपनी बच्ची को भी साथ ले गई। अब प्रमोद अपनी पत्नी और बच्ची को गंवाने के बाद अकेला हो गया है।

'नपुंसक है पति, सुहागरात पर चला पता' पत्नी ने थाने में बताया दर्द, बोली- जेठ ने...

आर्यावर्त संवाददाता

कानपुर। कानपुर में एक सनसनीखेज मामला सामने आया है, जहां एक पत्नी ने अपने पति पर नपुंसक होने का आरोप लगाया है। पत्नी का आरोप है कि ससुरावालों ने दहेज के लिए उसकी शादी एक नपुंसक युवक से कर दी। जब उसने इस बात का विरोध किया तो उसको मारा-पीटा गया, जान से मारने की कोशिश भी की गई। अब पुलिस ने पत्नी की तहरीर पर पति समेत तीन के खिलाफ मुकदमा दर्ज कर लिया है।

कानपुर के रावतपुर निवासी युवती की शादी उन्नाव के युवक से तरीबन एक साल पहले मार्च 2024 में हुई थी। युवती का आरोप है कि सुहागरात वाले दिन ही उसको पता चला कि उसका पति नपुंसक है। सुबह इस बात के बारे में उसने अपनी जेठानी को बताई तो उन्होंने मजाक में

टाल दिया। युवती के अनुसार कुछ दिनों बाद जब एक बार फिर से उसने इस बारे में जेठ और जेठानी से बात की तो उसके ससुरालवाले उसके साथ गाली गलौज करने लगे और बोले कि उनको सब पता है। उन्होंने यह शादी सिर्फ दहेज के लिए की थी।

पत्नी ने लगाए आरोप

पत्नी का यह भी आरोप है कि जब उसने पति का इलाज कराने की बात कही तो ससुरावालों ने उससे दो लाख रुपए मांगे। पत्नी का आरोप है कि सब ठीक हो जाएगा, यह सोच कर वो ससुराल में रहने लगी तो उसके जेठ ने उसके ऊपर बुरी नजर रखी और उससे छेड़छाड़ करने लगे। जब इस बात की शिकायत उसने ससुरालवालों से की तो उल्टा उसके साथ मारपीट की गई। इतना ही नहीं, बल्कि जब मायके वालों के साथ समझौता करने के लिए बुलाया गया तो फांसी लगाकर उसको जान से मारने का प्रयास भी किया गया।

पुलिस ने दर्ज किया केस

पुलिस ने इस पूरे मामले में आरोपी पति, जेठ और जेठानी के खिलाफ मुकदमा दर्ज कर लिया है। एक अधिकारी ने बताया कि मामले की जांच की जा रही है।

सत्ता को सेवा का माध्यम मानते थे चन्द्रशेखर: ज्ञान यादव

बाराबंकी। पूर्व प्रधानमंत्री स्वर्गीय चंद्रशेखर की 18वीं पुण्यतिथि पर गांधी जयन्ती समारोह ट्रस्ट द्वारा श्रद्धांजलि सभा का आयोजन किया गया। गांधी भवन में आयोजित इस कार्यक्रम में चन्द्रशेखर के साथी रहे राजनाथ शर्मा एवं पूर्व विधायक सरवर अली खान व सपा नेता ज्ञान सिंह यादव समेत बड़ी संख्या में लोग शामिल हुए। स्मृति सभा को संबंधित करते हुए जिला लोहिया वाहिनी के पूर्व जिलाध्यक्ष एवं वरिष्ठ सपा नेता ज्ञान सिंह यादव ने कहा कि चंद्रशेखर ने सत्ता को सेवा का माध्यम माना और जनहित को सर्वोपरि रखा। सभा की अध्यक्षता कर रहे समाजवादी चिन्तक राजनाथ शर्मा ने चंद्रशेखर के जीवन को याद किया। उन्होंने कहा कि चंद्रशेखर ने सामाजिक न्याय और लोकतांत्रिक मूल्यों की रक्षा में महत्वपूर्ण योगदान दिया। वे एक समाजवादी विचारक और सादगी के प्रतीक थे। प्रधानमंत्री रहते हुए भी उन्होंने सादा जीवन जिया।

अब जीना नहीं है! पत्नी से इतना परेशान हुआ युवक, राष्ट्रपति से मांग ली इच्छामृत्यु

आर्यावर्त संवाददाता

मुजफ्फरनगर. उत्तर प्रदेश के मुजफ्फरनगर पत्नी के खौफ का एक हैरान करने वाला मामला सामने आया है, जहां पत्नी से तंग आकर एक युवक ने कलेक्ट्रेट पहुंचकर राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री और मुख्यमंत्री के नाम ज्ञापन देकर इच्छा मृत्यु की मांग की है। एक साल पहले ही युवक की शादी हुई थी। पति का कहना है कि पत्नी उसकी पिटाई करती है। उसने गला दबाकर मारने की भी कोशिश की है। युवक हाथ में एक बैनर लेकर कलेक्ट्रेट पहुंचा था, जिसमें उसने अपनी मनोदशा लिखी हुई थी।

मुजफ्फरनगर के गांधीनगर कॉलोनी में रहने वाले सुमित सैनी की शादी 1 जुलाई 2024 को जिले के कुकड़ा गांव में रहने वाली पिंकी से हुई थी। सुमित का आरोप है कि शादी के दूसरे दिन ही उसकी पत्नी ने उसे बताया दिया था कि ये शाीद उसकी मर्जी से नहीं हुई है। वह किसी और से प्यार करती है। इसके बाद से ही पिंकी लगातार घर में झगड़ा करने लगी थी। आए दिन वह पति की पिटाई भी करती थी और मारने की नीयत से वह सुमित का गला भी घोटती थी।

'लड़के भेजकर पत्नी ने पिटवाया'

पीड़ित पति सुमित ने यह भी बताया कि पिंकी पिछले 6 महीने से अपने मायके में रह रही है, लेकिन इस दौरान भी वह फोन पर लगातार पति को धमकी देती रही। साथ ही वह लड़के भेज कर उसकी पिटाई भी करवाती है। जिससे परेशान और हताश होकर सोमवार को सुमित ने कलेक्ट्रेट पहुंचकर इच्छामृत्यु की मांग की है। इस दौरान सुमित ने हाथ में एक बैनर भी पकड़ा हुआ था, जिसमें उसने अपने परेशानियां लिखी हुई थी।

युवक ने की इच्छामृत्यु की मांग

पीड़ित पति सुमित सैनी ने कहा कि मैं माननीय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी से और अपने मुख्यमंत्री जी से इच्छामृत्यु की मांग करता हूं। मैं अपनी पत्नी से बहुत परेशान हूं। मेरी पत्नी बहुत परेशान कर रही है। मेरी शादी 14 जुलाई 2024 में हिंदू रीति रिवाज के साथ बिना दहेज के हुई थी। शादी के दूसरे दिन ही पत्नी ने कहा कि मैं किसी और से प्यार करती हूं। मेरी मां और मामा ने मेरी शादी जबरदस्ती तेरे साथ कर दी है। पति का आरोप है कि पत्नी ने शादी के बाद तुरंत बाद से ही उसके साथ मारपीट और गाली-गलौज करना शुरू कर दिया था। मेरी पत्नी मुझे कई बार मरवाने की कोशिश कर चुकी हैं।

छांगुर बाबा की कोठी पर चला बुलडोजर, जाति देखकर लगाता था लड़कियों का रेट... कराता था धर्मांतरण

आर्यावर्त संवाददाता

बलरामपुर। पहले छांगुर बाबा की गिरफ्तारी और अब उसकी कोठी पर बुल्डोजर की कार्रवाई। उत्तर प्रदेश के बलरामपुर में छांगुर बाबा के नाम से मशहूर जलालुद्दीन की कोठी पर बुलडोजर चल गया है। अवैध रूप से धर्मांतरण करवाने का मास्टरमाइंड छांगुर की कोठी पर नोटिस चिपकाया गया था। नोटिस में 7 दिन का समय दिया गया था। छांगुर की ये कोठी बलरामपुर के उतरौला में थी। इस कोठी पर तहसीलदार ने नोटिस चिपकाया था।

नोटिस में चेतावनी दी गई थी कि अवैध अतिक्रमण हटाए, अन्यथा कोठी को बुलडोजर से ध्वस्त कर दिया जाएगा। अब इस कोठी पर बुलडोजर चला दिया गया है। यह कोठी ग्राम सभा की जमीन पर बनी

थी। ये मधपुर की गाटा संख्या 337/370 की 0.10060 हेक्टेयर सरकारी जमीन पर अवैध रूप से बनाई गई थी।

नोटिस चिपकाने के लिए उतरौला तहसील के अधिकारी पुलिस के साथ मधपुर गांव में छांगुर की कोठी पर पहुंचे थे। प्रशासन के अनुसार, यह कोठी ग्राम सभा की जमीन पर है। ये मधपुर की गाटा संख्या 337/370 की 0.10060 हेक्टेयर सरकारी जमीन पर अवैध रूप से बनाई गई है।

नोटिस में कहा गया है कि बेदखली का आदेश पारित हो चुका है। अगर 7 दिनों में अतिक्रमण नहीं हटाया गया तो इसे ध्वस्त कर दिया जाएगा। कोतवाली प्रभारी अवधेश राज सिंह ने बताया कि एटीएस और अन्य उच्च अधिकारियों के निर्देश पर कार्रवाई की जा रही है।

जाति देख लगाता था लड़कियों का रेट

यूपी एटीएस ने हाल ही में छांगुर बाबा और उनकी सहयोगी नीतू उर्फ नसरीन को बलरामपुर से गिरफ्तार किया है। इसी के साथ अवैध धर्मांतरण के एक बड़े नेटवर्क का पर्दाफाश हुआ है। आरोप है कि छांगुर गरीब और असहाय लोगों को प्रलोभन देकर धर्म परिवर्तन के लिए मजबूर करता था। इसमें बड़ी संख्या में हिंदू लड़कियां शिकार होती थीं। वो अलग-अलग जातियों की लड़कियों के लिए अलग-अलग रेट तय करता था। इसमें ब्राह्मण और क्षत्रिय लड़कियों के लिए 15-16 लाख रुपये तक की राशि दी जाती थी। इसके लिए उसे विदेशों से 100 करोड़ रुपये से अधिक की फंडिंग मिलने की बात भी सामने आई है।

मुंबई से बलरामपुर तक की साजिश

एटीएस के मुताबिक, छांगुर ने मुंबई के नवीन रोहरा और उनकी पत्नी नीतू को अपने जाल में फंसाकर उनका धर्म परिवर्तन कराया। उन्हें बलरामपुर लाया। नीतू को नसरीन और नवीन को जमालुद्दीन के नाम से जाना जाने लगा। नवीन को पहले ही 8 अप्रैल को गिरफ्तार किया जा चुका है। जांच में यह भी सामने आया कि छांगुर ने एक साल में विदेशी फंडिंग से करोड़ों की संपत्ति बनाई। इसमें शोरूम, बंगले और लग्जरी गाड़ियां शामिल हैं।

कोर्ट के क्लर्क की पत्नी पार्टनर

छांगुर का कनेक्शन उतरौला के एक न्यायालय क्लर्क राजेश उपाध्याय से भी उजागर हुआ है। जमीन खरीद-फरोख्त को लेकर छांगुर और अहमद नाम के व्यक्ति के बीच वर्चस्व की लड़ाई थी। इस दौरान छांगुर की मुलाकात लिपिक राजेश से हुई। राजेश ही उसके मुकदमों में पैरवी करता था।

इसके बाद पुणे में 16 करोड़ रुपये की जमीन खरीद के एग्रीमेंट में राजेश की पत्नी संगीता को हिस्सेदार बनाया। इसमें मुनाफे का हिस्सा देने की बात थी। हालांकि, राजेश ने इससे इनकार किया है। इसके बावजूद एटीएस ने उन्हें और उनकी पत्नी को इस मामले में आरोपी बनाया है। एटीएस जल्द पूछताछ करेगी।

राज्यमंत्री के प्रतिनिधि ने किया अमरिया सीएचसी का निरीक्षण, स्वास्थ्य सेवाओं में सुधार के दिए निर्देश

आर्यावर्त संवाददाता

पीलीभीत। राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार) संजय सिंह गंगवार के जिला प्रतिनिधि कपिल अग्रवाल ने मंगलवार को सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र, अमरिया का निरीक्षण कर केंद्र पर मौजूद मरीजों एवं आमजन से चर्चा की और उन्हें मिलने वाली स्वास्थ्य सेवाओं की गुणवत्ता की जानकारी ली। निरीक्षण के दौरान उन्होंने एक्स-रे, पैथोलॉजी, डेंटल, होम्योपैथी, आकस्मिक चिकित्सा, टीयूबी दवाएं, आयुष्मान कार्ड केंद्र, ऑपरेशन थिएटर सहित तमाम व्यवस्थाओं का स्थलीय जायजा लिया और साफ-सफाई को बेहतर बनाए जाने सहित कई जरूरी सुझाव अधिकारियों को दिए।

निरीक्षण के दौरान बिजली न होने पर एक्स-रे सुविधा बाधित रहने, आशा कार्यकर्ताओं द्वारा निजी अस्पतालों में कमीशन के लालच में मरीजों को रेफर करने और कुछ कर्मचारियों द्वारा मरीजों से पैसे लेने की शिकायतें भी सामने आईं।इन पर कपिल अग्रवाल ने शिकायतकर्ताओं से लिखित रूप में शिकायत देने को कहा और संबंधित कर्मचारियों को चेताते हुए तत्काल अपने व्यवहार में सुधार लाने व शासन की नीतियों के अनुरूप कार्य करने के निर्देश दिए।उन्होंने सभी चिकित्सकों व स्वास्थ्य कर्मियों से कहा कि वे शासन की मंशा के अनुरूप समाज के अंतिम व्यक्ति तक गुणवत्तापूर्ण स्वास्थ्य सेवाएं पहुंचाने का संकल्प लें।

निरीक्षण के दौरान मझोला के पूर्व चेयरमैन अजय गोयल, मंडल उपाध्यक्ष आशीष गुप्ता, कौशल गुप्ता, रवि गुप्ता, युवा व्यापार मंडल नगर अध्यक्ष हिमांशु गुप्ता, अल्पसंख्यक प्रकोष्ठ उपाध्यक्ष

8 घंटे से अधिक एक जगह बैठकर करते हैं काम, तो बढ़ जाता है इन बीमारियों का खतरा

अक्सर लोग ऑफिस में घंटों कुर्सी पर बैठे रहते हैं और लगातार स्क्रीन देखते रहते हैं। इससे उनकी शारीरिक गतिविधि बहुत कम हो जाती है, जिसका हमारे स्वास्थ्य पर बुरा असर पड़ता है। यह सिर्फ आलस्य नहीं है, बल्कि एक ऐसी आदत है जो शरीर में कई गंभीर बीमारियों का खतरा बढ़ा देती है।

आज की आधुनिक जीवनशैली में हमें ढेर सारी सुख-सुविधाएं मिल गई हैं, जिसकी वजह से लोग एक ही जगह बैठे-बैठे अपना सारा काम करना चाहते हैं। ऐसे में शरीर की गतिविधि कम होने से कई मुश्किलें सामने आती हैं। इसी तरह की जीवनशैली को सेडेंटरी लाइफस्टाइल कहते हैं। अक्सर लोग ऑफिस में घंटों कुर्सी पर बैठे रहते हैं और लगातार स्क्रीन देखते रहते हैं। इससे उनकी शारीरिक गतिविधि बहुत कम हो जाती है, जिसका हमारे स्वास्थ्य पर बुरा असर पड़ता है।

यदि आप भी उन लोगों में से हैं जो दिन में 8 घंटे से ज्यादा एक ही जगह बैठकर काम करते हैं, तो आपको सतर्क हो जाना चाहिए। यह आदत मोटापा, हृदय रोग, डायबिटीज जैसी कई लाइलाज बीमारियों का खतरा बढ़ाती है। दरअसल, जब हमारा शरीर पर्याप्त हिलता-डुलता नहीं, तो मेटाबॉलिज्म धीमा हो जाता है, जिससे कई शारीरिक प्रक्रियाएं बाधित होती हैं। आइए इस लेख में जानते हैं कि अगर कोई 8 घंटे से अधिक एक स्थान पर ही बैठा रहता है, तो उन्हें किन बिमारियों का खतरा बढ़ जाता है। साथ ही यह भी जानेंगे कि आप किन छोटे बदलावों से अपनी सेहत को बेहतर बना सकते हैं।

गतिहीन जीवनशैली से होने वाली बीमारियां

लंबे समय तक बैठे रहने से शरीर की सामान्य प्रक्रियाएं प्रभावित होती हैं। पहली प्रमुख समस्या है मोटापा। बैठे रहने से कैलोरी बर्न नहीं होती, जिससे वजन बढ़ता है। मोटापा अपने आप में डायबिटीज और हृदय रोग जैसी बीमारियों का कारण बनता है।

दूसरी, टाइप-2 डायबिटीज का खतरा बढ़ता है। सेडेंटरी लाइफस्टाइल इंसुलिन सेंसिटिविटी को कम करती है, जिससे ब्लड शुगर का लेवल अनियंत्रित हो सकता है।

तीसरी, हृदय रोग का जोखिम। लंबे समय तक बैठने से रक्त संचार धीमा पड़ता है, जिससे कोलेस्ट्रॉल और ब्लड प्रेशर बढ़ सकता है। चौथी, कमर और पीठ दर्द। गलत मुद्रा में बैठने से रीढ़ की हड्डी और मांसपेशियों पर दबाव पड़ता है, जिससे पुराना दर्द शुरू हो सकता है।

मानसिक स्वास्थ्य पर प्रभाव

गतिहीन जीवनशैली न केवल शारीरिक, बल्कि मानसिक स्वास्थ्य को भी प्रभावित करती है। लंबे समय तक बैठे रहने से तनाव, चिंता और अवसाद का खतरा बढ़ता है। शारीरिक गतिविधि की कमी से एंडोर्फिन हार्मोन का स्राव कम होता है, जो मूड को बेहतर बनाता है। इसके अलावा, नींद की गुणवत्ता भी प्रभावित होती है, जिससे थकान और चिड़चिड़ापन बढ़ता है।

क्यों बढ़ रहा है यह खतरा?

आज के दौर में डेस्क जॉब, रिमोट वर्क और स्क्रीन टाइम ने लोगों को कुर्सी से बांध दिया है। कंप्यूटर, मोबाइल और टीवी के सामने घंटों बिताने से शारीरिक गतिविधियां कम हो गई हैं। मानसून या ठंड जैसे मौसम में बाहर निकलना और कम हो जाता है, जिससे गतिहीनता और बढ़ती है। बच्चों से लेकर बुजुर्गों तक, सभी आयु वर्ग इस जीवनशैली का शिकार हो रहे हैं।

बचाव के उपाय

गतिहीन जीवनशैली से होने वाली बीमारियों से बचने के लिए कुछ आसान उपाय अपनाए जा सकते हैं। हर 30-40 मिनट में उठकर 2-3 मिनट टहलें या स्ट्रेचिंग करें। रोजाना 30 मिनट टहलें, योग या कोई व्यायाम जरूर करें। हमेशा सीधे बैठें और अपनी रीढ़ को सहारा देने वाली कुर्सी का उपयोग करें। पर्याप्त पानी पिएं और संतुलित आहार लें, जिसमें फाइबर, प्रोटीन और हेल्दी फैट शामिल हों। ये छोटे बदलाव आपको स्वस्थ और सक्रिय रहने में मदद करेंगे।

रिसर्च.....

रिसर्च करने वाले वैज्ञानिकों का कहना है कि अगर आप 30 मिनट तक रनिंग या साइकिल चलाने जैसी एक्सरसाइज करते हैं, तो आपकी सेहत में सुधार हो सकता है . इसके बावजूद लंबे समय तक बैठने के असर से पूरी तरह से नहीं बचा जा सकता है। इस शोध में 33 वर्ष की औसत आयु वाले 1000 से अधिक लोगों को शामिल किया गया था, जिनमें 730 जुड़वां बच्चों को भी रखा गया था। शोध का उद्देश्य यह पता लगाना था कि लंबे समय तक बैठने से शरीर पर क्या प्रभाव पड़ता है, खासकर कोलेस्ट्रॉल और बॉडी मास इंडेक्स (BMI) पर घंटों बैठने से क्या असर होता है। इस स्टडी में पाया गया कि जिन लोगों ने दिनभर में 8 ।5 घंटे से ज्यादा समय बैठने में बिताया और शारीरिक गतिविधि के लिए कम समय निकाला, उनका कोलेस्ट्रॉल और BMI अच्छा नहीं था। वैज्ञानिकों का कहना है कि जितना ज्यादा कोई बैठता है, उतना ही बूढ़ा दिखता है। शोधकर्ताओं ने इस अध्ययन के परिणामों के आधार पर यह सुझाव दिया कि काम के दौरान नियमित ब्रेक लेना और शारीरिक गतिविधि बढ़ाना महत्वपूर्ण है। केवल काम के बाद थोड़ी देर टहलने से सेहत पर कोई बड़ा असर नहीं पड़ता है। अमेरिका में यूनिवर्सिटी ऑफ कोलोराडो बोल्डर में मनोविज्ञान और तंत्रिका विज्ञान विभाग में प्रोफेसर चंद्रा रेनॉल्ड्स ने कहा कि दिन भर कम बैठना, अधिक व्यायाम करना या दोनों का ही समय से पहले बूढ़ा होने के जोखिम को कम कर सकता है। जो लोग नियमित रूप से 30 मिनट तक दौड़ने या साइकिल चलाने जैसे जोरदार व्यायाम करते हैं, उनके कोलेस्ट्रॉल और BMI माप 5 से 10 साल छोटे व्यक्तियों जैसा दिखाई देता है। हालांकि ये बदलाव पर्याप्त नहीं हैं और लंबे समय तक बैठने से होने वाले नुकसान से बचने के लिए और ज्यादा से ज्यादा फिजिकल एक्टिविटी की जरूरत है।

कम उम्र में दाढ़ी के बाल सफेद? आजमाएं ये 4 देसी नुस्खे और बदल दें अपना लुक

यदि कम उम्र में दाढ़ी के बाल सफेद हो रहे हैं, तो हमारे बताए नुस्खों को आजमाकर देख लें। उससे आपका लुक एकदम बदल जाएगा।

आज-कल की लाइफस्टाइल इतनी व्यस्त और खराब हो गई है कि इसका असर लोगों के सेहत के साथ-साथ त्वचा और बालों पर दिखने लगा है। खासतौर पर इसका असर दाढ़ी के बालों पर भी होने लगा है। दरअसल, अब कम उम्र में ही लड़के दाढ़ी के बाल सफेद होने की शिकायत कर रहे हैं। इसकी कई अन्य वजहें भी हो सकती हैं।

पर, यदि आप ऐसे में बाजार में मिलने वाली केमिकल वाली डाई का इस्तेमाल दाढ़ी पर करेंगे तो इससे आपकी परेशानी और बढ़ सकती है। ऐसा इसलिए क्योंकि केमिकल वाले प्रोडक्ट्स के इस्तेमाल और धूप में जरूरत से ज्यादा रहने पर भी कम उम्र में ही लोगों के बाल सफेद होना शुरू हो जाते हैं। इसलिए दाढ़ी के सफेद बालों को काला करने के लिए कुछ घरेलू नुस्खे आजमाकर देख लें।

आंवला का तेल करें इस्तेमाल

यदि आप आंवले के तेल से नियमित रूप से दाढ़ी पर मसाज करेंगे, तो इससे आपकी दाढ़ी के सफेद बाल खुद ब खुद प्राकृतिक रूप से काले हो जाएंगे। दरअसल, आंवला बालों के लिए वरदान है, क्योंकि इसमें विटामिन C और एंटीऑक्सिडेंट जैसे तत्व पाए जाते हैं। जो बालों को काला करने में मददगार होते हैं।

नारियल तेल और करी पत्ता

इन दोनों चीजों के मिश्रण के इस्तेमाल से त्वचा में मेलेनिन की मात्रा बढ़ती है, जो बालों को काला करने में सहायक होता है। इसके इस्तेमाल के लिए सबसे पहले नारियल के तेल में करी पत्ते को डालकर उबालें। जब ये उबल जाए तो इसे ठंडा करके दाढ़ी पर लगाएं। इसका असर भी आपको कुछ दिन में दिख जाएगा।

मेहंदी और कॉफी

बिना केमिकल से बालों की रंगत बदलना चाहते हैं तो सबसे पहले मेहंदी पाउडर में कॉफी मिक्स करके पेस्ट तैयार करें। अब इसे दो घंटे के लिए अपनी दाढ़ी पर अप्लाई करें। आखिर में इसे धो लें और फिर इसका असर देखें। मेहंदी बालों को रंग देने के साथ-साथ उन्हें मजबूत भी बनाती है।

प्याज का रस

यदि आप नियमित रूप से प्याज के रस का बालों पर इस्तेमाल करते हैं तो ये बालों की जड़ों को पोषण देता है और सफेदी को रोकता है। इस्तेमाल के लिए प्याज का रस निकालकर दाढ़ी की जड़ों में हल्के हाथों से मालिश करें और 30 मिनट बाद धो लें। इससे भी आपको आराम मिलेगा।

इस बात का रखें ध्यान

अगर आपकी उम्र कम है और सफेदी तेजी से बढ़ रही है, तो ये जरूरी हो जाता है कि आप एक आयुर्वेदिक विशेषज्ञ या त्वचा रोग विशेषज्ञ से भी सलाह लें। क्योंकि कई बार दिक्कतें अलग किस्म की होती हैं, जिनको सही समय पर हल करना जरूरी होता है।

मांसाहारियों की तुलना में शाकाहारियों को होती है सफल होने की ज्यादा इच्छा, अध्ययन में खुलासा

हमारी खान-पान की आदतें हमारे स्वास्थ्य पर असर डालती हैं, मूड को बेहतर बनाती हैं और यहां तक कि वजन को भी नियंत्रित रखती हैं। हालांकि, किसी ने नहीं सोचा होगा कि भोजन और सफलता का भी कोई संबंध हो सकता है। सफल होना तो हर कोई चाहता है। हालांकि, एक नए अध्ययन में कहा गया है कि शाकाहारी लोगों को मांसाहारियों की तुलना में ज्यादा ताकत और सफलता चाहिए होती है।

अमेरिका और पोलैंड में हुआ यह अध्ययन

यह अध्ययन अमेरिका और पोलैंड के शोधकर्ताओं द्वारा किया गया है, जिसे पीएलओएस वन पत्रिका में प्रकाशित किया गया था। इसका नेतृत्व पोलैंड के एसडब्ल्यूपीएस विश्वविद्यालय के प्रोफेसर जॉन नेजलेक ने किया है। इससे पता चला है कि शाकाहारी लोग मांसाहारी लोगों की तुलना में सत्ता और उपलब्धियों के ज्यादा लालची होते हैं। इस शोध के नतीजे शाकाहारियों की छवि को उलटने का काम कर रहे हैं और उससे विपरीत साक्ष्य दे रहे हैं।

3,700 प्रतिभागियों की मदद से पूरा हुआ अध्ययन

इस शोध के लिए 3 अलग-अलग अध्ययन किए गए थे, जिनमें 3,700 से अधिक वयस्कों की जांच की गई थी। इनमें से एक अध्ययन अमेरिका में हुआ था, वहीं 2 पोलैंड में किए गए थे। अमेरिकी अध्ययन में 514 शाकाहारी और 540 मांसाहारी लोग शामिल थे। पोलिश वाले पहले अध्ययन में 636 प्रतिभागी थे, जिनमें से लगभग 47 प्रतिशत शाकाहारी थे। वहीं, दूसरे अध्ययन में 2,102 प्रतिभागी थे, जिनमें से लगभग 3.4 प्रतिशत शाकाहारी थे।

प्रतिभागियों से सवाल-जवाब कर किया गया शोध

प्रतिभागियों से एक मनोवैज्ञानिक ढांचे का उपयोग करते हुए उनके बुनियादी मानवीय मूल्यों से जुड़े सवाल पूछे गए थे। यह मानव व्यवहार को संचालित करने वाले 10 प्रमुख मूल्यों को मापता है, जिसमें लोगों और प्रकृति की देखभाल से लेकर दूसरों पर नियंत्रण की इच्छा तक शामिल है। अधिकांश मूल्यों के लिए तीनों अध्ययनों में नतीजे काफी हद तक एक जैसे थे। हालांकि, शोधकर्ताओं ने इसके दौरान कुछ सांस्कृतिक अंतर भी पाए।

क्या रहे इस अध्ययन के नतीजे?

मांसाहारी लोगों की तुलना में शाकाहारियों ने परोपकार, सुरक्षा (स्थिरता और सुरक्षा की इच्छा) और अनुरूपता (सामाजिक मानदंडों का पालन करना) जैसे मूल्यों पर कम अंक प्राप्त किए। सबसे ज्यादा चौंकाने वाली बात यह थी कि शाकाहारियों का शक्ति और उपलब्धि के साथ गहरा संबंध पाया गया था। सभी अध्ययनों में शाकाहारियों ने इन मूल्यों को मांसाहारी लोगों की तुलना में ज्यादा अहम माना। अध्ययन में कहा गया, शाकाहारी मांस खाने वालों की तुलना में अधिक मर्दाना होते हैं।

भारत के लोगों के लिए उपयुक्त नहीं हैं इस अध्ययन के नतीजे

मर्दाना से शोधकर्ताओं का मतलब था कि वे ताकत और सफलता जैसे मूल्यों को ज्यादा महत्व देते हैं, जो पारंपरिक मर्दाना गुणों में गिने जाते हैं। शाकाहारियों को अनुरूपता की बहुत कम चिंता थी, जो दूसरों को परेशान करने या सामाजिक मानदंडों का उल्लंघन करने वाला मूल्य है। यह नतीजे उन देशों के लिए उपयुक्त हैं, जिनमें शाकाहारी अल्पसंख्यक बने हुए हैं। इसके नतीजे भारत के लोगों के लिए सही नहीं हैं, क्योंकि यहां ज्यादातर लोग शाकाहारी हैं।

पश्चिम देशों के शाकाहारी लोग परंपराओं को नहीं देते महत्व

अध्ययन से यह भी सामने आया कि पश्चिमी देशों के शाकाहारी लोग परंपराओं को कम महत्व देते हैं। उनके मन में संस्कृति या धर्म द्वारा दिए गए रीति-रिवाजों और विचारों के प्रति सम्मान नहीं था।

आधार कार्ड से लिंक मोबाइल नंबर हो गया है बंद, तो इस तरीके से करवाएं नया नंबर लिंक

आपके आधार कार्ड से अगर कोई मोबाइल नंबर लिंक नहीं है या लिंक किया हुआ नंबर बंद हो गया है, तो आप यहां जान सकते हैं कि आप कैसे नया मोबाइल नंबर अपडेट करवा सकते हैं।

कई तरह के दस्तावेज होते हैं जिनकी जरूरत अलग-अलग कामों के लिए पड़ती रहती है। इसमें आपका ड्राइविंग लाइसेंस, वोटर आईडी कार्ड, राशन कार्ड जैसे कई दस्तावेज शामिल हैं। इसी में से एक दस्तावेज है आधार कार्ड। दरअसल, आधार कार्ड आज के समय में सबसे जरूरी दस्तावेज है जिसमें कार्डधारक की बायोमेट्रिक और डेमोग्राफिक जानकारी होती है।

इसी तरह आधार कार्ड से कार्डधारक का मोबाइल नंबर लिंक होता है। पर कई बार लोगों का ये मोबाइल नंबर बंद हो जाता है या किसी अन्य कारण से इस मोबाइल नंबर पर ओटीपी नहीं आ पाता है। ऐसे में आप अपने किसी दूसरे एक्टिव मोबाइल नंबर को अपने आधार कार्ड को लिंक करवा सकते हैं जिसका तरीका आप यहां जान सकते हैं। तो चलिए जानते हैं आधार कार्ड से कैसे आप अपना मोबाइल नंबर लिंक करवा सकते हैं। आगे आप इस बारे में जा सकते हैं...

ऐसे करवा सकते हैं आधार से मोबाइल नंबर लिंक:

स्टेप 1

अगर आपके आधार कार्ड से लिंक मोबाइल नंबर बंद हो गया है या किसी कारण ओटीपी नहीं आ रहा है

ऐसे में आप अपने नए मोबाइल नंबर को आधार कार्ड से लिंक करवा सकते हैं

इसके लिए आपको सबसे पहले अपने नजदीकी आधार सेवा केंद्र के लिए अपॉइंटमेंट लेनी है

स्टेप 2

अब जिस दिन की आपको अपॉइंटेंट मिली है उस दिन आधार केंद्र पर जाएं

यहां पर जाकर आपको सबसे पहले करेक्शन फॉर्म लेना होता है

इस फॉर्म को भरें जिसमें अपना नाम, आधार नंबर जैसी बाकी मांगी गई जरूरी चीजें भरें

साथ ही आपको अपना नया मोबाइल नंबर भी इस फॉर्म में भरना होता है

स्टेप 3

अब फॉर्म लेकर संबंधित अधिकारी के पास जाएं

जो पहले आपके बायोमेट्रिक लेता है और आपका सत्यापन करता है

फिर आपकी फोटो क्लिक होती है जिसके बाद आपके नए मोबाइल नंबर को अपडेट कर दिया जाता है

आखिर में आपको तय शुल्क देना होता है और रसीद जो मिले वो ले लें

अब कुछ दिनों के भीतर आपका नया मोबाइल नंबर आधार कार्ड से लिंक हो जाता है

इसलिए जरूरी होता है मोबाइल नंबर लिंक करवाना

अगर आप अपने आधार कार्ड से मोबाइल नंबर लिंक नहीं करवा रहे हैं, तो जान लें कि ये क्यों जरूरी है। दरअसल, कई सरकारी या गैर-सरकारी काम ऐसे होते हैं जिनमें आधार से लिंक मोबाइल नंबर पर ओटीपी आता है। ऐसे में अगर कोई मोबाइल नंबर आधार कार्ड से लिंक नहीं होगा तो ओटीपी नहीं आ पाएगा और आपका काम अटक जाएगा। इसलिए ये जरूरी है।

गूगल दे रहा है 8500 रुपए, अगर आपके पास भी है यह फोन तो ऐसे उठाएं फायदा

नई दिल्ली, एजेंसी। अगर आप गूगल का पिक्सल 6ए स्मार्टफोन इस्तेमाल करते हैं तो आपके लिए एक बड़ी खबर है। कंपनी ने फोन में लगातार आ रही ओवरहीटिंग और बैटरी परफॉर्मेंस की शिकायतों के बाद एक नया 'बैटरी परफॉर्मेंस प्रोग्राम' शुरू किया है। इस प्रोग्राम के तहत, गूगल प्रभावित यूजर्स को या तो फ्री में बैटरी बदलकर देगा या मुआवजे के तौर पर 100 डॉलर (लगभग 8,500 रुपये) की पेशकश कर रहा है।

दरअसल, गूगल पिक्सल 6डु के कई यूजर्स ने फोन के गर्म होने (ओवरहीटिंग) और बैटरी जल्दी खत्म होने की शिकायत की थी। इन समस्याओं को स्वीकार करते हुए कंपनी ने यह कदम उठाया है। समस्या के समाधान के लिए कंपनी 8 जुलाई से एंड्रॉयड 16 का अपडेट भी जारी करेगी, जिससे फोन की परफॉर्मेंस बेहतर होने और ओवरहीटिंग का खतरा कम होने की उम्मीद है।

यूजर्स के पास क्या हैं विकल्प?

इस प्रोग्राम के तहत योग्य Pixel 6a यूजर्स के पास तीन विकल्प होंगे:

फ्री बैटरी रिप्लेसमेंट: यूजर्स गूगल के किसी भी अधिकृत सर्विस सेंटर पर जाकर अपने फोन की बैटरी मुफ्त में बदलवा सकते हैं।

नकद मुआवजा: जो लोग बैटरी नहीं बदलवाना चाहते, वे 100 डॉलर (करीब 8,500 रुपये) का नकद मुआवजा ले सकते हैं।

गूगल स्टोर क्रेडिट: एक अन्य विकल्प के रूप में 150 डॉलर (लगभग 12,800 रुपये) का गूगल स्टोर क्रेडिट भी चुना जा सकता है।

कैसे चेक करें अपनी Eligibility?

आप इस प्रोग्राम के लिए योग्य हैं या नहीं, यह जांचने के लिए आपको गूगल के आधिकारिक सपोर्ट पेज पर जाना होगा। वहां आपको अपने फोन का IMEI नंबर और डिवाइस से लिंक ईमेल आईडी दर्ज करनी होगी।

पेमेंट और शर्तें

कंपनी ने स्पष्ट किया है कि नकद भुगतान थर्ड-पार्टी 'Payoneer' के जरिए किया जाएगा, जिसके लिए आईडी प्रूफ और पैन कार्ड जैसी जानकारी मांगी जा सकती है। यह भी ध्यान रखें कि अंतिम मुआवजा राशि उस दिन के एक्सचेंज रेट पर निर्भर करेगी।

अब तक पांच सरकारी बैंकों ने हटाया न्यूनतम जमा पर शुल्क, आगे और भी बैंक कर सकते हैं घोषणा

नई दिल्ली, एजेंसी। सरकारी बैंकों ने अब खाते में मासिक आधार पर औसत न्यूनतम जमा न होने पर वसूले जाने वाले जुर्माना को खत्म करने की प्रक्रिया शुरू कर दी है। 2023-24 में इन बैंकों ने ग्राहकों से 2,331 करोड़ की कमाई इसी मद से की थी।

अभी तक पांच सरकारी बैंकों ने खाते में न्यूनतम जमा न होने पर किसी भी शुल्क को नहीं लगाने का फैसला किया है। इस वजह से आने वाले समय में बाकी सरकारी बैंक भी इसका पालन कर सकते हैं। हालांकि, यह नियम केवल बचत खाते पर है जहां बैंक 2.50 फीसदी से लेकर 6 फीसदी या उससे भी ज्यादा ब्याज देते हैं। हाल में आरबीआई ने रेपो दर में एक फीसदी की कमी की है, इससे बैंकों के पास जमा नहीं आ रहा है। इस वजह से बैंकों को आगे नकदी के मामले में दिक्कत का सामना करना पड़ सकता है। अब तक जिन पांच बैंकों ने न्यूनतम जमा शुल्क खत्म किया है, उनमें पंजाब नेशनल बैंक, बैंक ऑफ बड़ौदा, इंडियन बैंक, केनरा बैंक और एसबीआई है।

2022-23 में वसूले थे 1855 करोड़

सरकारी बैंकों ने 2022-23 में न्यूनतम जमा नहीं होने पर ग्राहकों से 1,855 करोड़ रुपये की वसूली की थी। हालांकि, 2023-24 में यह करीब 26 फीसदी बढ़ गई। तीन वर्षों में इन बैंकों ने कुल 5,614 करोड़ रुपये की वसूली की थी। आरबीआई के नियमों के अनुसार, बैंकों को खाता खोलते समय ग्राहकों को न्यूनतम शेष राशि की आवश्यकता के बारे में सूचित करना आवश्यक है। इसके बाद होने वाले बदलाव के बारे में भी खाताधारकों को सूचित किया जाना चाहिए।

ईरान की तरह हूती कमांडरों को क्यों नहीं मार पा रहा इजराइल?

यरुशलम, एजेंसी। ईरान में जहां इजराइल ने टॉप न्यूक्लियर वैज्ञानिकों और सैन्य अफसरों को बेहद सटीक तरीके से निशाना बनाया, वहीं यमन में हूती विद्रोहियों के खिलाफ ऐसा कोई टारगेटेड ऑपरेशन अब तक सफल होता नहीं दिखा। सवाल उठता है कि एक ही इजराइल, जिसकी खुफिया एजेंसियों का लोहा दुनिया मानती है, हूती नेताओं को निशाना क्यों नहीं बना पा रहा? इसके पीछे कई दिलचस्प वजहें हैं।

क्या सिर्फ एयरस्ट्राइक ही उपाय है?

अब तक इजराइल ने यमन के हूती इलाकों में हुदैदा, रस ईसा, अल-सलीफ जैसे रेड सी पोर्ट्स और एक पॉवर स्टेशन पर एयरस्ट्राइक जरूर की हैं। साथ ही नवंबर 2023 में हाइजैक हुए कार्गो शिप Galaxy Leader पर भी हमला किया गया। लेकिन यह हमले बुनियादी इंफ्रास्ट्रक्चर को नुकसान पहुंचाते हैं, हूती कमांडरों को नहीं।

जब अक्टूबर 2023 में हमास और इजराइल की जंग शुरू हुई, तो यमन के हूती विद्रोहियों ने भी मोर्चा खोल दिया था। रेड सी पर मिसाइल और ड्रोन हमले शुरू हो गए, और कई अंतरराष्ट्रीय जहाज इनके निशाने पर आ गए। Suez Canal से गुजरने वाला व्यापार बुरी तरह प्रभावित हुआ। अमेरिका और ब्रिटेन ने मिलकर हूतियों पर एयरस्ट्राइक की, लेकिन कुछ समय बाद अमेरिका को खुद इनसे बातचीत करनी पड़ी। यानी अब हूती इजराइल के लिए सिर्फ विद्रोही संगठन नहीं रहे, बल्कि वे ईरान समर्थित ऐसे प्लेयर्स बन चुके हैं जो बड़े-बड़ों को झुका सकते हैं।

हूती नेताओं की पहचान है मुश्किल

हूती संगठन की संरचना काफी अलग है। जहां ईरान जैसे देशों में पदानुक्रम (हायरार्की) तय होती है, कौन प्रमुख वैज्ञानिक है, कौन जनरल है, वहीं हूती संगठन में ज्यादातर कमांडर ग्राउंड पर काम करते हैं लेकिन सार्वजनिक रूप से उनका नाम या चेहरा सामने नहीं आता। केवल संगठन का सर्वोच्च नेता अब्दुल मलिक अल-हूती ही एकमात्र ऐसा चेहरा है जिसे खुले तौर पर जाना जाता है। बाकी नेतृत्व पर एक तरह से पर्दा पड़ा होता है। इजराइल के पास टारगेट लिस्ट बनाने की भी गुंजाइश नहीं बनती।

टेक्नोलॉजी से दूरी, लोकेशन ट्रेस करना मुश्किल

आधुनिक युद्ध में डेटा, कॉल ट्रेसिंग, लोकेशन ट्रैकिंग सबसे अहम हथियार होते हैं। लेकिन हूती नेताओं ने टेक्नोलॉजी का जानबूझकर त्याग किया है। वे मोबाइल फोन, सैटेलाइट डिवाइस और ऑनलाइन कम्युनिकेशन से लगभग पूरी तरह कटे हुए हैं। जिससे उनकी गतिविधियों को ट्रैक करना बेहद मुश्किल हो जाता है।

यमन में 'ग्री-प्लान्ड' ऑपरेशन की कमी

ईरान में इजराइल का नेटवर्क पुराना और मजबूत है। वहां वर्षों से खुफिया प्लानिंग चल रही थी, जिससे वैज्ञानिकों की रूटीन, मूवमेंट और सुरक्षा ढांचे की पूरी जानकारी इजराइल के पास थी। लेकिन यमन के हूती इलाकों में ऐसा मजबूत खुफिया आधार नहीं बन पाया है। इसलिए सर्जिकल या टारगेटेड किलिंग ऑपरेशन मुश्किल हो जाते हैं।

बांग्लादेश के लोगों का बदल रहा मूड, चुनाव से पहले बढ़ी यूनुस की टेंशन

ढाका, एजेंसी। बांग्लादेश में राजनीतिक पारा बढ़ता जा रहा है. देश में जल्द ही आम चुनाव होने वाले और इसको लेकर सभी राजनीतिक पार्टियां तैयारी में जुट गई हैं। 16 साल बाद शेख हसीना के बिना हो रहे इस चुनाव में बांग्लादेश की सत्ता किसकी हाथों में जाएगी, ये सवाल सभी पूछ रहे हैं। देश के अखबारों इस पर सर्वे भी करने लगे हैं। ऐसे ही किए गए एक सर्वे ने मुख्य सलाहकार मोहम्मद यूनुस की चिंता बढ़ा दी है। सर्वे में खालिदा जिया की पार्टी BNP को सबसे ज्यादा वोट मिलते दिखाई दिए हैं, जबकि यूनुस के करीबी आंदोलनकारियों की ओर से बनाई गई पार्टी NCP को तीसरे नंबर दिया गया है। SANEM अखबार ने ये सर्वे देश की युवा आबादी पर किया है, जिसमें BNP को 39, जमात को 22 NCP को 16 फीसद वोट ही मिलते दिखाई दिए हैं। इसके अलावा अन्य धार्मिक दलों को 4.59 फीसद वोट मिले हैं, जातीय पार्टी को 3.77 फीसद तथा अन्य दलों को 0.57 फीसद वोट प्राप्त होने का अनुमान लगाया गया है। साथ ही 51 फीसद लोगों ने ये भी माना कि अंतरिम सरकार देश में सामाजिक सद्भाव बनाए रखने में सक्षम है। इसके बावजूद उन्होंने सरकार के लिए NCP को पहले पसंद नहीं रखा है। सर्वे में 50 फीसद युवा देश की आर्थिक स्थिरता से संतुष्ट हैं, जबकि 35 फीसद युवा देश की कानून-व्यवस्था को लेकर चिंतित। 94 फीसद युवा इस बात को लेकर आशावादी हैं कि आगामी चुनाव स्वतंत्र और निष्पक्ष होंगे। हालांकि, युवा लोग राजनीतिक बदलाव की संभावनाओं को लेकर निराश हैं। मोहम्मद यूनुस ने देश की सत्ता संभालते समय देश में 6 महीने में चुनाव कराने की बात कही थी। सरकार बदले एक साल होने जा रहा है, लेकिन देश में उन्होंने चुनाव नहीं कराए है।

अतिथि देवो भव : का क्या होगा! पर्यटकों के खिलाफ कई देशों में बढ़ रहा स्थानीय लोगों का गुस्सा, आखिर क्यों?

वॉशिंगटन, एजेंसी। भारत में अतिथि देवो भवः यानी अतिथि को भगवान का रूप माना जाता है और यहां पर शुरुआत से ही अतिथियों का स्वागत करने की परंपरा रही है। गुजरते वक्त के साथ लोग एक जगह से दूसरी जगह जाने लगे और फिर यह दायरा बढ़ते हुए विदेश यात्रा में बदल गया। किसी भी देश या किसी भी राज्य में अतिथियों यानी सैलानियों का आना वहां की आय का बड़ा स्रोत माना जाता है। सरकारें सैलानियों को लुभाने के लिए ढेरों योजनाएं भी चलाती हैं, लेकिन इसके उलट मेजबान लोगों को अतिथियों का आना रास नहीं आ रहा है। आखिर क्यों?

दुनिया के कई ऐसे शहर हैं जहां के स्थानीय लोग तेजी से बढ़ते विदेशी सैलानियों से परेशान हो गए हैं। सैलानियों को लेकर विरोध का नया सुर उत्तरी अमेरिकी महाद्वीप में पड़ने वाले मैक्सिको में उठा है। राजधानी मैक्सिको सिटी के लोग सैलानियों की बढ़ती संख्या से बेहद परेशान है।

शनिवार को सैकड़ों की संख्या में लोग जेंट्रीफिकेशन (जेंट्रीफिकेशन उस प्रोसेस को कहा जाता है जिसके तहत किसी क्षेत्र का चरित्र अमीर निवासियों (जेंट्री) और निवेश के जरिए बदल दिया जाता है। एक तरह से किसी मकान या क्षेत्र का पूरी तरह से कायाकल्प कर दिया जाता है।) और मास टूरिज्म के खिलाफ शुरू में शांतिपूर्ण तरीके से विरोध प्रदर्शन में शामिल हुए, लेकिन कुछ ही देर में यह प्रदर्शन तब हिंसक हो गया जब कुछ लोगों ने दुकानों के सामने तोड़फोड़ और विदेशी सैलानियों को परेशान करना शुरू कर दिया।

मैक्सिको सिटी अपने सांस्कृतिक केंद्रों और म्यूजियम की वजह से दुनियाभर में जानी जाती है। यहां पर 1320 म्यूजियम हैं। यहां पर नकाबपोश प्रदर्शनकारियों ने कोंडेसा और रोमा के पर्यटन क्षेत्रों में खिड़कियों को तोड़ डाले और लूटपाट भी की, आगजनी भी की। यही नहीं वे यहां पर्यटकों पर चिखे और चिल्लाए भी। कांच के टूटे हुए शीशे पर लिखा हुआ था- "मैक्सिको से बाहर निकल जाओ।" प्रदर्शनकारियों ने "ग्रिंगो, हमारे घर को चुराना बंद करो" जैसे पोस्टर भी थाम रखे थे। मैक्सिको में, ग्रिंगो का मतलब संयुक्त राज्य अमेरिका से किसी चीज या किसी व्यक्ति से होता है। ये प्रदर्शनकारी पर्यटन के स्तर को बेहतर ढंग से रेगुलेट करने और सख्त आवासीय कानूनों के लिए स्थानीय कानून की मांग कर रहे थे।

मैक्सिको में बड़ी संख्या में दुनिया भर के सैलानियों के साथ-साथ पड़ोसी देश अमेरिका से भी लोग घूमने आते हैं। ऐसे में यहां के लोग अमेरिकी लोगों के खिलाफ ज्यादा मुखर हैं और उनसे यहां से जाने की मांग कर रहे हैं। बड़ी संख्या में लोग लैटिन अमेरिकी शहर में सस्ते किराए का फायदा उठाने के लिए आते हैं।

यूरोप के कई शहरों में भारी प्रदर्शन

सिर्फ मैक्सिको सिटी ही नहीं बल्कि यूरोप के कई शहरों में भी पर्यटकों की बढ़ती संख्या से स्थानीय लोग परेशान हैं। बार्सिलोना, मैड्रिड, पेरिस और रोम जैसे शहरों में ऐसे विरोध प्रदर्शन आम होते जा रहे हैं।

किसी भी देश या राज्य की सरकारें पर्यटन से होने वाली आय से खुश रहती हैं और इसे बढ़ाने की जुगत में भी होती हैं, लेकिन इन लोकप्रिय पर्यटन स्थलों पर रहने वाले लोगों के लिए कई बार यह बहुत ही तकलीफदेय स्थिति हो जाती है। कई मुश्किलों का सामना भी करना पड़ता है। यूरोप में इस साल गर्मियों में इतनी संख्या में पर्यटक पहुंच गए कि लोग ही इसके खिलाफ हो गए। स्पेन, फ्रांस, इटली समेत कई देशों में पर्यटकों के खिलाफ लोगों का गुस्सा दिखा। भीड़ को लेकर लोग इस कदर खफा था कि अरबपति बिजनेसमैन जेफ बेजोस की शादी के रिसेप्शन को वेनिस से बाहर ले जाना पड़ा, क्योंकि प्रदर्शनकारियों ने बेजोस से वेनिस को बचाओ (Save Venice from Bezos) के पोस्टर लेकर प्रदर्शन किए कि अमेजन के मालिक की लॉरेन सांचेज के साथ बड़े स्तर पर हो रही शादी की वजह से शहर के लोगों को खासी दिक्कत हो रही है।

सैलानियों के ऊपर पानी की बौछार

पिछले दिनों बढ़ते पर्यटकों की वजह से कई बार स्पेन के सबसे मशहूर शहर बार्सिलोना की सड़कों पर जाम लग गया और इससे स्थानीय लोगों को खासी दिक्कतों का सामना करना पड़ा। नाराज लोगों की ओर से सैलानियों पर पानी की बौछारें तक की गईं। करीब 16 लाख की आबादी वाले बार्सिलोना में पिछले साल 3.12 करोड़ सैलानी पहुंच गए, ऐसे में वहां की जीवनशैली पर खासा असर पड़ा। स्थानीय लोंगों की कहीं भी आने-जाने में दिक्कतों का सामना करना पड़ रहा था। जरूरी चीजों के दाम बढ़ गए और घर के किराए भी काफी बढ़ गए। पिछले साल भी नाराज लोगों ने सैलानियों को भगाने के लिए पानी की बौछार की थीं। स्पेन के ही द्वीपीय शहर मैलोर्का में पर्यटकों को अपने शहर से दूर करने के लिए हजारों लोगों ने प्रदर्शन किया। इटली के शहर जेनोआ के लोगों ने जमकर प्रदर्शन किया। पिछले महीने फ्रांस की राजधानी पेरिस में, म्यूजियम की गैलरी में इस कदर भीड़ एकत्र हो गई कि लौवर स्टाफ को सैलानियों की भीड़ को बाहर निकालना पड़ा था।

प्राग और एथेंस में भी लोगों को दिक्कत

यूरोपीय देश चेक गणराज्य की राजधानी प्राग में भी यही स्थिति दिखी। करीब 13 लाख की आबादी वाले इस शहर में पिछले साल एक तरह से सैलानियों की बाढ़ आ गई थी। प्राग में पिछले साल 80 लाख से अधिक पर्यटक आ गए थे। 2023 की तुलना में सैलानियों की संख्या में 9 फीसदी का इजाफा दिखा। लेकिन पर्यटकों की बढ़ती संख्या को देखते हुए स्थानीय नगर परिषद को देर रात पब खोलने पर बैन लगाना पड़ा था।

2 साल पहले साल 2023 में, यूरोप के ग्रीस में एक ही समय में बड़ी संख्या में पर्यटक पहुंच गए। ग्रीक के द्वीपीय शहर जैकिंथोस (Zakynthos) में इस कदर भीड़ एकत्र हो गई कि स्थायी निवासियों की तुलना में 150 गुना अधिक पहुंच गए। ग्रीस की ऐतिहासिक राजधानी एथेंस भी पर्यटकों की बाढ़ से जूझता रहा है। पिछले साल यहां पर 80 लाख से अधिक पर्यटक पहुंच गए थे। जबकि यहां की आबादी महज 6 लाख से थोड़ी अधिक है। लोगों की दिक्कतों और नाराजगी को देखते हुए पर्यटकों को शहर के कई जगहों पर जाने से रोक लगा दी गई।

कोरोना के बाद फिर से बढ़ने लगे पर्यटक

स्कॉटलैंड का एडिनबर्ग शहर भी विदेशी मेहमानों से जूझता रहा है। भीड़ को कम करने के लिए स्थानीय प्रशासन को होटल के दामों में बढ़ोतरी तक करनी पड़ गई। यूरोपीय देश हमेशा से विदेशी सैलानियों के लिए सबसे पसंदीदा जगह रहा है। पिछले साल यूरोप में 75 करोड़ से अधिक (756 मिलियन) पर्यटक पहुंच गए और यह पिछले साल (2023) की तुलना में 4.16 करोड़ यानी 46 मिलियन अधिक रहा। कोरोना महामारी के बाद पर्यटकों की संख्या फिर से बढ़ने लगी है और अब यह संख्या महामारी से पहले के स्तर पर लौट रही है। दुनिया में सबसे ज्यादा पर्यटक यूरोप घूमने जाते हैं, 2019 में जहां यूरोप में 20 करोड़ लोग घूमने गए तो 2024 में यह संख्या करीब 80 करोड़ तक पहुंच गई। एशिया-प्रशांत क्षेत्र में 2024 में 30 करोड़ से अधिक पर्यटक पहुंचे थे।

संजय राउत का निशिकांत दुबे पर हमला, कहा- उनको कौन जानता है?

CM फडणवीस की चुप्पी पर भी उठाए सवाल

मुंबई। महाराष्ट्र में मराठी भाषा को लेकर शुरू हुआ विवाद बढ़ता ही जा रहा है। भाजपा सांसद निशिकांत दुबे के हालिया बयान पर शिवसेना (यूबीटी) प्रमुख उद्धव ठाकरे के बाद सांसद संजय राउत ने तीखी प्रतिक्रिया दी है। उद्धव ठाकने ने विवादित टिप्पणी को लेकर निशिकांत को 'लकड़बग्घा' करार दिया। वहीं संजय राउत ने भी कहा, यह दुबे है कौन? मैं यहां के हिंदी भाषी नेताओं से अपील करता हूं कि वे दुबे के बयान की निंदा करें।

शिवसेना (यूबीटी) सांसद संजय राउत ने कहा, पहले तो यह बताओ कि यह दुबे है कौन? मैं यहां के हिंदी भाषी नेताओं से अपील करता हूं कि वे दुबे के बयान की निंदा करें। जब आप ऐसा करेंगे, तभी मैं मानूंगा कि आप महाराष्ट्र से हैं। संजय राउत ने महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे और उनकी कैबिनेट की चुप्पी पर सवाल उठाते हुए कहा, 'जब एक बीजेपी सांसद मराठी लोगों के खिलाफ बयान दे रहा है, तब राज्य का मुख्यमंत्री और उसकी पूरी कैबिनेट चुप क्यों है? यह कैसा मुख्यमंत्री है? जिसे छत्रपति शिवाजी महाराज और बालासाहेब ठाकरे का नाम लेने का कोई अधिकार नहीं है।'

शिवसेना (यूबीटी) नेता ने एकनाथ शिंदे पर तीखा हमला बोलते हुए कहा, खुद को डुप्लीकेट शिवसेना का नेता मानने वाले एकनाथ शिंदे को अपनी दाढ़ी कटवा लेनी चाहिए। उन्हें इस्तीफा दे देना चाहिए। उन्हें जाकर मोदी और शाह से पूछना चाहिए कि महाराष्ट्र में क्या हो रहा है। महाराष्ट्र में हिंदीभाषी लोगों पर कभी हमले नहीं हुए... दुबे को सही करना देवेंद्र फडणवीस, एकनाथ शिंदे और अजीत पवार की जिम्मेदारी है।

ऐसे कई लकड़बग्घे हैं जो विवाद पैदा कर रहे हैं- उद्धव

इससे पहले उद्धव ठाकरे ने निशिकांत दुबे पर टिप्पणी करते हुए कहा था कि छोड़ो दुबे बिबे... ऐसे कई लकड़बग्घे हैं जो विवाद पैदा करने की कोशिश कर रहे हैं। हमारे यहां सब खुश हैं, इनके पास ध्यान देने की जरूरत नहीं है। हमारी महाराष्ट्र की जनता सब जानती है।

ठाकरने कहा कि 'हम हिंदी भाषा के खिलाफ नहीं हैं। लेकिन कुछ लोग मराठी लोगों की तुलना पहलगाम के आतंकवादियों से कर रहे हैं- असली मराठी विरोधी वही लोग हैं। ये लोग ना तो मराठियों का भला चाहते हैं और ना ही हिंदुओं को बचा सकते हैं। ये हमेशा उन लोगों के साथ खड़े रहते हैं जो मराठी समाज के साथ अन्याय करते हैं। पहले जो असली भाजपा थी, जिसने शिवसेना के साथ गठबंधन किया था - अब वो भाजपा खत्म हो गई है। अब हम (विपक्षी दल) एक साथ आ गए हैं, और तभी से ये लोग गुस्से में हैं।'

निशिकांत दुबे के बयान पर सीएम फडणवीस ने दी सफाई, बोले- वे आम मराठियों की बात नहीं कर रहे

महाराष्ट्र में जारी भाषा विवाद के बीच भाजपा सांसद निशिकांत दुबे के बयान से राज्य का राजनीतिक पारा और चढ़ गया है। अब राज्य के सीएम देवेंद्र फडणवीस ने भाजपा सांसद के बयान पर सफाई दी और कहा कि निशिकांत दुबे आम मराठी मानुष के बारे में बात नहीं कर रहे थे। वे उन संगठनों के बारे में बात कर रहे थे, जो विवाद कर रहे हैं। फडणवीस ने कहा कि 'जो भी निशिकांत दुबे ने कहा है, वह आम मराठी लोगों के बारे में नहीं कहा है, बल्कि उन संगठनों के बारे में कहा है, जो विवाद को बढ़ा रहे हैं।' हालांकि सीएम ने खुद को निशिकांत दुबे के बयान से अलग करते हुए कहा कि मुझे लगता है कि निशिकांत दुबे का बयान सही नहीं था। सीएम ने कहा कि 'भारत के विकास में महाराष्ट्र का बहुत बड़ा योगदान है। कोई भी इससे इनकार नहीं कर सकता। अगर कोई ऐसा करता है तो वह पूरी तरह से गलत है।' महाराष्ट्र नवनिर्माण सेना का कहना है कि महाराष्ट्र में रहने वाले लोगों को मराठी बोलना आना चाहिए। इसे लेकर मनसे के कार्यकर्ताओं ने बीते दिनों में कई हिंदी भाषी लोगों के साथ मारपीट की है। इस पर काफी विवाद हो रहा है। हाल ही में मनसे प्रमुख राज ठाकरे ने अपनी पार्टी के कार्यकर्ताओं को सलाह दी कि वे अगर किसी को पीटते हैं तो उसकी वीडियो न बनाएं। इस पर भाजपा सांसद निशिकांत दुबे ने कड़ी नाराजगी जाहिर करते हुए कहा कि 'आप क्या कर रहे हैं, किसकी रोटी खा रहे हैं? आप लोग हमारे पैसे पर पल रहे हैं। आपके पास कौन से उद्योग हैं? हमारी सारी खदानें झारखंड, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़ और ओडिशा में हैं।

'बंगाल में एनआरसी लागू कर रही असम की बीजेपी सरकार', ममता बनर्जी का बड़ा आरोप

कोलकाता। पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने मंगलवार को असम में विदेशी न्यायाधिकरण की ओर से कूचबिहार के एक किसान को नोटिस जारी कर कथित अवैध प्रवासी घोषित करने के मामले में सरकार पर तीखा निशाना साधा है. इस कदम को "लोकतंत्र पर व्यवस्थित हमला" करार देते हुए बनर्जी ने आरोप लगाया कि बीजेपी पश्चिम बंगाल में राष्ट्रीय नागरिक रजिस्टर (एनआरसी) को अवैध रूप से लागू करने की कोशिश कर रही है, जहां उसका कोई अधिकार क्षेत्र नहीं है। उन्होंने इस घटना को खतरनाक अतिक्रमण और हाशिए पर पड़े समुदायों पर टारगेट हमला बताया। सीएम ममता ने ट्वीट करते हुए लिखा, 'मैं यह जानकर स्तब्ध और बहुत परेशान हूं कि असम में विदेशी न्यायाधिकरण ने कूचबिहार के दिनहाटा में 50 साल से रह रहे राजबंशी उत्तम कुमार ब्रजबासी को एनआरसी नोटिस जारी किया है। वैध पहचान दस्तावेज देने करने के बावजूद उन्हें "विदेशी/अवैध प्रवासी" होने के संदेह में परेशान किया जा रहा है।'

'बीजेपी के खतरनाक एजेंडे'

उन्होंने कहा, 'यह लोकतंत्र पर एक व्यवस्थित हमले से कम नहीं है। यह इस बात का सबूत है कि असम में सत्तारूढ़ बीजेपी सरकार बंगाल में एनआरसी लागू करने का प्रयास कर रही है, जहां उसके पास कोई शक्ति या अधिकार क्षेत्र नहीं है। हाशिए पर पड़े समुदायों को डराने, वंचित करने और निशाना बनाने का एक पूर्व-नियोजित प्रयास किया जा रहा है। यह असंवैधानिक अतिक्रमण जनविरोधी है और लोकतांत्रिक सुरक्षा उपायों को ध्वस्त करने व बंगाल के लोगों की पहचान मिटाने के बीजेपी के खतरनाक एजेंडे को उजागर करता है।' बंगाल सीएम ने कहा, 'इस भयावह स्थिति में सभी विपक्षी दलों को बीजेपी की विभाजनकारी और दमनकारी मशीनरी के खिलाफ खड़े होने के लिए तत्काल एकता की आवश्यकता है। बंगाल चुपचाप नहीं बैठेगा क्योंकि भारत का संवैधानिक ताना-बाना बिखर रहा है।' विवाद तब शुरू हुआ जब किसान उत्तम कुमार ब्रजबासी ने मीडिया से कहा कि वह खुद को संदिग्ध अवैध प्रवासी घोषित करने वाला नोटिस पाकर स्तब्ध रह गया, जबकि उसने कभी कूचबिहार से बाहर कदम नहीं रखा। उसके अनुसार, वह पांच दशकों से इस क्षेत्र में रह रहा है और उसके पास वैध भारतीय पहचान दस्तावेज हैं। जवाब में, राज्य बीजेपी ने दस्तावेजों में अनियमितताओं का आरोप लगाते हुए टीएमसी सरकार को दोषी ठहराया। बीजेपी ने दावा किया कि बांग्लादेश से आए कई अवैध प्रवासियों ने बंगाल में जाली भारतीय पहचान पत्र हासिल किए हैं और उन्हें गलत तरीके से नागरिक के रूप में पेश किया जा रहा है।

जैकी श्रॉफ ने देव आनंद के साथ की गई फिल्म का खोला राज, बोले- 'मेरी जगह इस एक्टर को किया कास्ट'

हाल ही में बॉलीवुड अभिनेता जैकी श्रॉफ ने अपने शुरुआती करियर को याद किया और देव आनंद के साथ अपनी एक फिल्म की कास्टिंग के किस्से को शेयर किया।

जैकी श्रॉफ उन अभिनेताओं में शुमार हैं, जिन्होंने अपने सिनेमाई करियर के दौरान कई शानदार फिल्में दी हैं। अब अभिनेता ने दिग्गज एक्टर देव आनंद अभिनीत एक फिल्म 'स्वामी दादा' को याद किया, जो साल 1982 में रिलीज हुई थी। फिल्म के बारे में उन्होंने बताया कि कैसे उनके किरदार को किसी और को दे दिया गया था। चलिए जानते हैं जैकी श्रॉफ ने क्या किस्सा सुनाया।

देव आनंद ने जैकी श्रॉफ को बनाया सेकेंड लीड रोल

हाल ही में जैकी श्रॉफ कुणिका सदानंद के साथ एक इंटरव्यू में शामिल हुए। बातचीत के दौरान अभिनेता ने 'स्वामी दादा' फिल्म का एक किस्सा सुनाया। उन्होंने कहा, 'ऐसा हुआ कि उन्होंने मुझे सेकेंड लीड रोल का ऑफर दिया। मुझे अपनी आंखों और कानों पर यकीन नहीं हुआ कि देव साहब मेरे सामने बैठे थे। उनके बेटे सुनील भी वहां मौजूद थे। उनके बेटे ने मुझसे कहा, 'देवानंद मुझे फिल्म ऑफर कर रहे हैं', जिसपर मैंने कहा- वाह। मैं घर गया और अपनी मां को बताया कि मुझे सेकेंड लीड रोल मिल रहा है। पूरी सोसाइटी ने कहा, 'वाह, जग्गू हीरो।'

जैकी श्रॉफ को लीड रोल से हटाया

आगे बातचीत में उन्होंने कहा, '15 दिनों के बाद, देव साहब ने मुझे फोन किया और उन्होंने मिलने के लिए कहा। जब मैं वहां गया, तो उन्होंने मुझसे कहा, 'मिथुन चक्रवर्ती यहां हैं। इसलिए मैं वह भूमिका मिथुन को देने जा रहा हूं, क्योंकि वह एक बेहतर डांसर हैं। मैंने आपको डांस करते देखा है, आप अच्छे हैं, लेकिन वह बेहतर हैं। इसके अलावा, वह सीनियर हैं।' आप जो डेट्स मेरे पास लेकर आए हैं, उसके लिए मैं आपको विलेन के अड्डे में एक रोल दूंगा, फिर मैं विलेन के अड्डे में शक्ति कपूर का चमचा बन गया। मेरा रोल 15 दिनों में बदल दिया गया और दूसरे लीड से मैं तीसरा विलने बन गया। मैं घर वापस गया और अपनी मां से हंसते हुए कहा कि मुझे विलेन का रोल मिल गया है।'

जैकी श्रॉफ का वर्कफ्रंट

जैकी श्रॉफ ने अपने फिल्मी करियर की शुरुआत 'स्वामी दादा' फिल्म से की थी। इसके अलावा अभिनेता को आखिरी बार 'हाउसफुल 5' में देखा गया था। वहीं उनकी आगामी फिल्मों की बात करें, तो उन्हें 'तन्वी द ग्रेट' में देखा जाएगा, जो 18 जुलाई को सिनेमाघरों में रिलीज होगी।

जीत के 48 घंटे बाद बिग बी ने टीम इंडिया को दी बधाई, यूजर्स बोले- बड़ी जल्दी याद आया

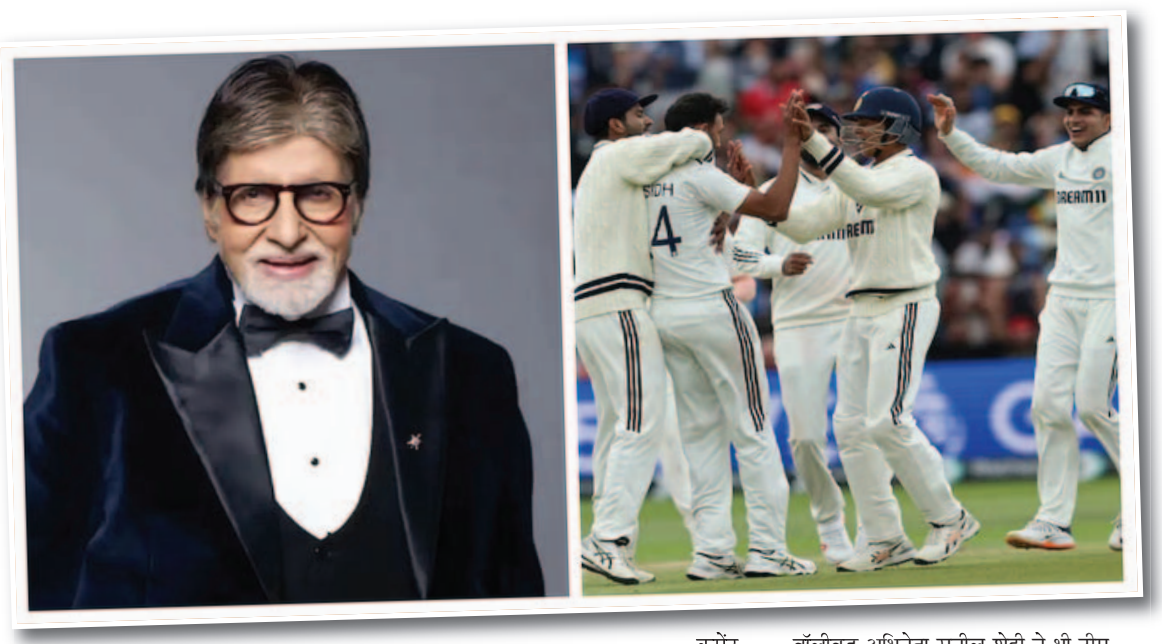

टीम इंडिया ने एक बार फिर टेस्ट क्रिकेट में अपना दबदबा साबित कर दिया है। इंग्लैंड के खिलाफ एजबेस्टन मैदान पर भारत ने 336 रनों से ऐतिहासिक जीत दर्ज की, जिसने करोड़ों भारतीयों के दिलों में गर्व भर दिया। इस खास मौके पर हर तरफ से बधाइयों का सिलसिला शुरू हो गया और बॉलीवुड से भी सितारे पीछे नहीं रहे। जहां पहले सुनील शेट्टी ने टीम को जीत की बधाई दी, वहीं अब सदी के महानायक अमिताभ बच्चन ने भी ट्वीट कर अपनी खुशी जाहिर की है। उनका ट्वीट इंटरनेट पर वायरल हो गया है।

बिग बी का ट्वीट बना चर्चा का विषय

टीम इंडिया की शानदार जीत पर अमिताभ बच्चन ने अपने ऑफिशियल एक्स अकाउंट पर बेहद जोशीले अंदाज में लिखा, 'ठोक दिया किरकिट में!'। फैंस ने बिग बी के ट्वीट को हाथों-हाथ लिया और कुछ ही मिनटों में ये पोस्ट ट्रेंड करने लगी। लोगों ने बिग बी के इस पोस्ट पर मजेदार रिएक्शन्स दिए। कई लोगों ने एक्टर के देरी से पोस्ट करने पर भी सवाल उठाए।

यूजर्स ने दिए रिएक्शन्स

अमिताभ बच्चन के इस पोस्ट पर कई लोगों ने प्रतिक्रियाएं दीं। एक यूजर ने लिखा, 'कल ठोका था सर आज नहीं'। वहीं एक और यूजर ने लिखा- 'आपका साबुन स्लो है क्या'। अमिताभ के इस पोस्ट पर एक यूजर ने कमेंट किया- 'कौन से मैच की हाइलाइट देख रहे सर।'

सुनील शेट्टी ने भी टीम इंडिया को दी थी बधाई

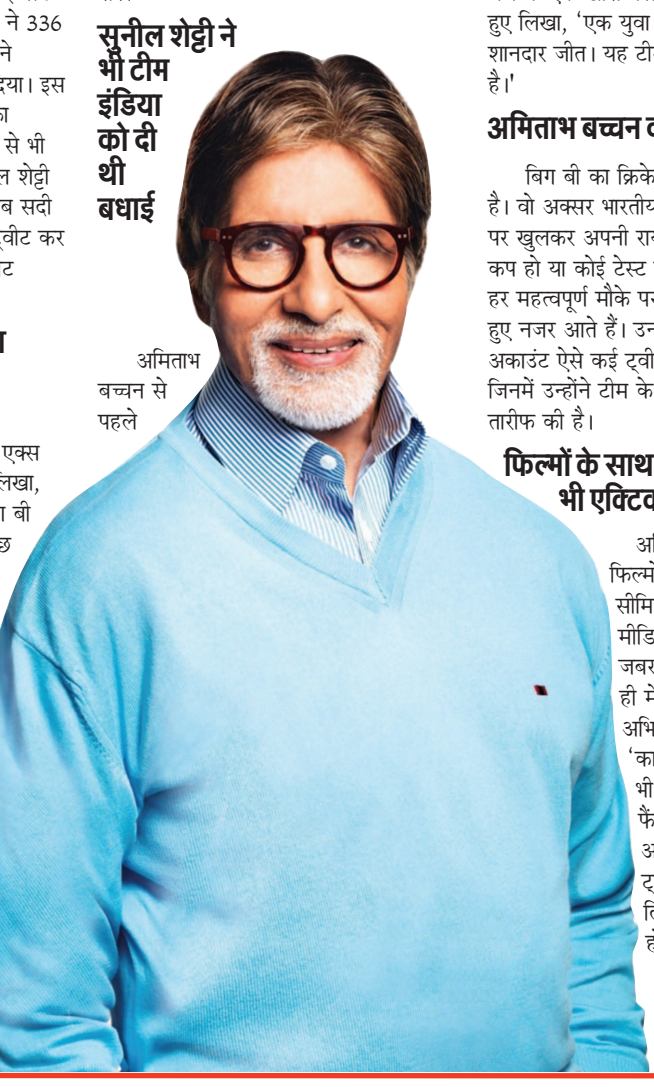

अमिताभ बच्चन से पहले बॉलीवुड अभिनेता सुनील शेट्टी ने भी टीम इंडिया की जीत पर खुशी जताई थी। उन्होंने मैच के एक खास पल की तस्वीर शेयर करते हुए लिखा, 'एक युवा टीम, एक बड़ा मंच और शानदार जीत। यह टीम कुछ बड़ा कर रही है।'

अमिताभ बच्चन का क्रिकेट प्रेम

बिग बी का क्रिकेट प्रेम कोई नई बात नहीं है। वो अक्सर भारतीय क्रिकेट टीम के प्रदर्शन पर खुलकर अपनी राय रखते हैं। चाहे वर्ल्ड कप हो या कोई टेस्ट सीरीज़, अमिताभ बच्चन हर महत्वपूर्ण मौके पर टीम को सपोर्ट करते हुए नजर आते हैं। उनका सोशल मीडिया अकाउंट ऐसे कई ट्वीट्स से भरा पड़ा है, जिनमें उन्होंने टीम के शानदार प्रदर्शन की तारीफ की है।

फिल्मों के साथ-साथ ट्विटर पर भी एक्टिव हैं बिग बी

अमिताभ बच्चन सिर्फ फिल्मों और विज्ञापनों तक ही सीमित नहीं हैं, बल्कि सोशल मीडिया पर भी उनकी जबरदस्त मौजूदगी है। हाल ही में उन्होंने अपने बेटे अभिषेक बच्चन की फिल्म 'कालीधर लापता' के बारे में भी ट्वीट किया था, जो फैंस को काफी पसंद आया। बिग बी का हर ट्वीट उनके फॉलोअर्स के लिए एक खास संदेश होता है।

स्वामी, प्रकाशक व मुद्रक प्रभात पांडेय द्वारा साई ऑफसेट प्रिंटर्स 40, वासुदेव भवन कैसरबाग, लखनऊ (उत्तर प्रदेश) से मुद्रित एवं 2/74, विक्रांत खंड, गोमती नगर, लखनऊ से प्रकाशित।
शाखा कार्यालय: S-15/109, सेक्टर -15, इंदिरा नगर, लखनऊ। समस्त लेख, रचनाओं एवं विज्ञापन में लेखन और विज्ञापनदाताओं के अपने विचार हैं। इसके लिए आर्यावर्त क्रांति की कोई जिम्मेदारी नहीं है। किसी भी विवाद की स्थिति में न्याय क्षेत्र लखनऊ, उत्तर प्रदेश ही होगा। RNI No: UPHIN/2014/57034 Website: aryavartkranti.com
*सम्पादक: प्रभात पांडेय सम्पर्क: 9839909595, 8765295384 Email: aryavartkrantidainik@gmail.com